जुलाई, 2025

₹15

www.mediamanch.in

मीडिया मंच

सम्पूर्ण समाचार पत्रिका

शुभ वापसी

प्राकृतिक आपदा लील रही जिंदगियां

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से उनके सरकारी आवास पर भारतीय प्रशासनिक सेवा में प्रोन्नत हुए 2008 एवं 2010 बैच के प्रान्तीय सिविल सेवा के अधिकारियों ने की शिष्टाचार भेंट।

मीडिया मंच

वर्ष – 28

अंक : 03

संपादक
तेज बहादुर सिंह

कार्यकारी संपादक
वीरेन्द्र शुक्ल

समाचार संपादक
वीरेन्द्र सिंह

विशेष संवाददाता
आयुष सिंह

फोटो जर्नलिस्ट
योगेश योगी

मार्केटिंग
सिग्मा ट्रेड विंग्स

लेआउट
विष्णु बिसेन

स्वात्वाधिकारी
'मीडिया मंच पब्लिकेशन्स'
के लिए प्रकाशक, मुद्रक,
सम्पादक टी.बी. सिंह
द्वारा प्रिंट आर्ट,
कैन्ट रोड, लखनऊ
से मुद्रित तथा जी–7,
खुशनुमा कॉम्पलेक्स,
7–मीराबाई मार्ग,
लखनऊ से प्रकाशित
RNI No. : UPHIN/1998/5628

समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र
लखनऊ होगा

वेबसाइट :
www.mediamanch.in

ई-मेल :
mediamanch@ymail.com
tejsingh007@yahoo.com

मोबाइल–09415000151

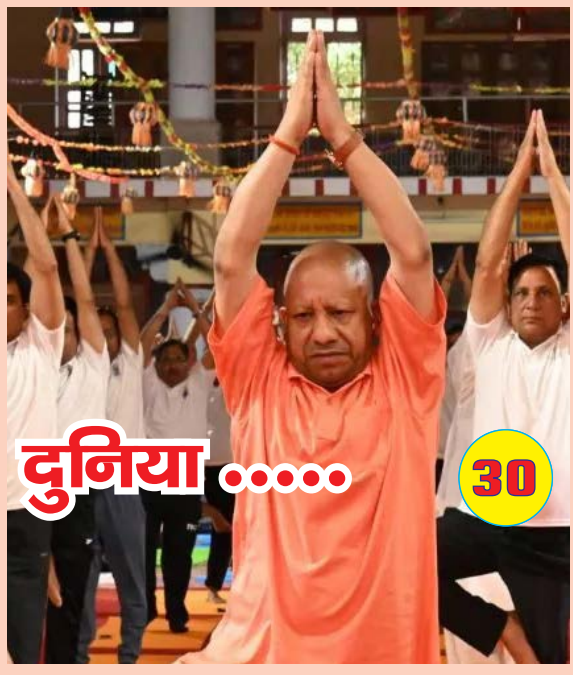

स्थायी स्तम्भ

अतिथि	05
ब्यूरोक्रेसी	36
वास्तु/ज्योतिषखेल	40
खेल	42
आंखिन देखी	44
स्वास्थ्य	46
सिनेमा	47
यूपीनामा	48

टी.बी. सिंह

संपादकीय

ऊँची उड़ान का दंड?

अक्सर ऑनर किलिंग या अन्य कई कारणों से लड़कियों को मौत की नींद सुला दिया जाता है। चौंकाने वाली बात तो यह है कि यह निंदनीय करतूत परिवारीजनों द्वारा ही अंजाम दिया जाता है। इसमें भी जब बेटी को जन्म देने वाले पिता की संलिप्तता परिलक्षित होती है तो निश्चय ही यह सब चौंकाने जैसा होता है। आज जब 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसा नारा हकीकत में बदलता जा रहा है। वैसे में इस तरह के जघन्य कांड सोचने को मजबूर करते हैं। लेकिन जब कोई लड़की अपने सपने को उड़ान देना चाहती है और उसमें भी शुरूआती दौर में परिवार का साथ रहता है, तब बाद में ऐसा क्या हो जाता है कि पिता ही हत्यारा बन जाता है। राधिका यादव टेनिस खिलाड़ी जैसी लड़की की हत्या ढेरों सवाल खड़ी करती है। वह न तो परिवार पर बोझ थी और न ही उसका कोई काला इतिहास ही था। लेकिन शक्की पिता ने न केवल बात का बतंगड़ ही बनाया बल्कि दीपक यादव इतना आक्रोशित और अमानवीय निकला कि अपनी 25 वर्षीया लाडली बेटी को गोलियों से भून दिया। वह इतना वहशीपन पर उतरा हुआ था कि उसने एक-एक करके चार गोलियां बेटी पर उतार दीं। जबकि राधिका किचेन में खाना बनाने में तल्लीन थीं। चार गोलियों का मारने का मतलब तो पूरी तरह साफ है कि वह किसी भी सूरत में राधिका को जिंदा नहीं देखना चाहता था। तीन गोलियां कमर पर और एक पसलियों में उसने मारी। इस जघन्य हत्याकांड के बाद से जो-जो भी थ्योरी सामने आती जा रही है वह चौंकाने के साथ ही साथ उलझाने वाली भी है। दीपक के इतना बड़ा कदम उठाने के पीछे कई कारण हो सकते हैं। इन कारणों का खुलासा संभवतः बाद में हो लेकिन फिलहाल जो बात समझ में आती है वह यह कि वह शक्की मिजाज का है। वह हर चीज को गलत समझकर गुस्सा होने के साथ शक भी करता रहता था। बेटी किससे बात कर रही है और क्यों कर रही है यह सब सवाल न केवल उसके मन में उमड़ता-घुमड़ता ही रहता था। बल्कि वह इसकी तस्दीक भी बेटी से पूछकर करने से बाज नहीं आता था, इस तरह के ढेरो सवाल करता रहता था। निश्चय ही राधिका को यह सब अंदर से नागवार गजरता रहा हो पर वह अपने पिता की शंका का समाधान करने से नहीं चूकती थी। वह अपने पिता को आश्वस्त भी करती रहती थी कि वह कुछ गलत-सलत नहीं करेगी। एक बात यह भी सामने आई है कि उसके पिता उसके टेनिस एकेडमी चलाने और सोशल मीडिया पर उनकी रील से नाराज रहते थे। यही नहीं, पूछताछ में दीपक ने यह भी बताया कि उन्हें बेटी की कमाई खाने के ताने मिलते थे। लेकिन इसके उलट उनके गांव वालों ने बताया कि दीपक को कई वर्षों से गांव में देखा ही नहीं गया। बात बेटी की कमाई के खाने की जहां तक है तो प्रापर्टी डीलर का काम करने वाले दीपक की शहर में कई संपत्तियां हैं। जिनसे उन्हें हर महीने कई लाख रुपये मिलते हैं। फिर यह सवाल बेतुका सा लगने लगता है कि जब पिता की खुद की कमाई लाखों में है तो वह भला बेटी की कमाई क्यों खाएगा और लोगों के तानों को क्यों सुनेगा? यहां यह भी सवाल उठता है कि जब दीपक कई वर्षों से गांव ही नहीं गया तो फिर उसे ताना किसने दिया? इसी के साथ एक खबर यह भी मायने रखती है कि टेनिस खिलाड़ी राधिका विदेश जाना चाहती थी, लेकिन इसकी नौबत ही नहीं आई। क्योंकि उसके पहले ही वह मार दी गई। लेकिन इस बीच यह भी खुलासा हुआ कि राधिका मॉडल बनना चाहती थी और उसे एड फिल्म के लिए ऑफर भी मिला हुआ था, और एकेडमी की जहां बात है तो एकेडमी पार्टनरशिप में खुली हुई थी और बाद में वह बंद भी हो गई थी। इस तरह यह साफ है कि जिम्मेदार लोग बेटियों को सिर्फ बड़ा न करें बल्कि जब वे ऊँचे उठने की कोशिश करें और अपने सपने को उड़ान भरने के हौसले को हकीकत में बदलने का शुभारंभ करें तो उन्हें बंदिशों में न बांधा जाए बल्कि उनके साथ खड़ा भी होया जाए। ❑

बाइस PCS बने IAS

विधान जायसवाल

शैलेन्द्र भटिया

जयनाथ यादव

वन्दिता श्रीवास्तव

विनय कुमार सिंह

प्रदेश की योगी सरकार जहां कर्तव्यनिष्ठ और जिम्मेदार अधिकारियों को नई-नई जिम्मेदारी सौंप रही है वहीं अधिकारी समय रहते पदोन्नति का लाभ भी पा रहे हैं।

इसी क्रम में वरिष्ठ 22 पीसीएस अधिकारियों को आईएएस में प्रमोशन का तोहफा मिला है। जिनमें तीन महिला अधिकारी शामिल हैं। इनमें 2008 व 2010 बैच के पीसीएस अधिकारियों को आईएएस में समाहित किया गया है। केन्द्रीय कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग की अधिसूचना के तहत प्रदेश के नियुक्ति विभाग ने भी प्रोन्नति का आदेश जारी कर दिया है। इन अधिकारियों को भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ वेतनमान में तत्काल कार्यभार ग्रहण करने के लिए भी कहा गया है।

नियुक्ति विभाग के विशेष सचिव विजय कुमार की ओर से जारी आदेश में सहारनपुर के अपर आयुक्त भानु प्रताप यादव, यूपीएसएसएससी के परीक्षा नियंत्रक विधान जायसवाल, गाजियाबाद विकास प्राधिकरण के सचिव राजेश कुमार सिंह, सिद्धार्थनगर के सीडीओ बलराम सिंह, यीडा के विशेष कार्याधिकारी शैलेंद्र कुमार भाटिया, उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के उप सचिव देवी प्रसाद पाल, मुरादाबाद विकास प्राधिकरण की सचिव अंजू लता, दिव्यांगजन सशक्तीकरण निदेशालय के संयुक्त निदेशक जय नाथ यादव, मुरादाबाद के अपर जिलाधिकारी प्रशासन गुलाब चन्द्र, सदस्य वक्फ न्यायाधिकरण लखनऊ राम सुरेश वर्मा, अपर जिलाधिकारी प्रशासन गाजियाबाद रण विजय सिंह को आइएएस काडर में प्रोन्नति मिल गई है। इसी प्रकार अपर निदेशक (प्रशासन) कृषि तथा अपर मेला अधिकारी कुंभ मेला दयानंद प्रसाद, उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के उप सचिव विनोद कुमार गौड़ व विवेक कुमार श्रीवास्तव, संयुक्त निदेशक मंडी परिषद सचिन कुमार सिंह, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व हाथरस बसंत अग्रवाल, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व वाराणसी वंदिता श्रीवास्तव, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व अयोध्या महेंद्र कुमार सिंह, अपर जिलाधिकारी प्रशासन बिजनौर विनय कुमार सिंह, अपर जिलाधिकारी (भूमि अध्याप्ति) गौतमबुद्धनगर राजेश कुमार, उप निदेशक मंडी योगेंद्र कुमार और अपर निदेशक चिकित्सा शिक्षा निदेशालय श्रीमती नीलम हैं।

राजेश कुमार

राजेश कुमार सिंह

अंजू लता

सचिन कुमार सिंह

रणविजय सिंह

योगेन्द्र कुमार

नौसेना की पहली महिला फाइटर पायलट आस्था

UP का बढ़ाया मान

इस वक्त यूपी के एक छोटे से गांव की छोरी आस्था पूनिया अपने साहस के बूते आज देशभर के लिए प्रेरणास्रोत बन गई हैं। हाल ही में वह नौसेना की पहली महिला फाइटर बन गई हैं। अब आसमान में गूंजेंगी इस शेरनी बेटी की दहाड़। इसी के साथ सेना में महिलाओं की भागीदारी का दायरा और भी बढ़ गया है। नौसेना स्टाफ (वायु) के उप प्रमुख रियर एडमिरल जनक बेकली ने आस्था को विंग्स ऑफ गोल्ड सम्मान दिया जो नौसेना की फाइटर पायलट बनने की पात्रता का प्रतीक है। इससे पहले नौसेना में महिलाएं सिर्फ टोही विमान और हेलीकॉप्टर उड़ा सकती थीं।

मूलरूप से उत्तर प्रदेश के बागपत के हिसावदा गांव की रहने वाली हैं। यद्यपि उनका पूरा परिवार अब मेरठ में रहता है। आस्था का संबंध शिक्षक परिवार से है। पिता अरूण पूनिया जहां नवोदय विद्यालय में गणित के शिक्षक हैं तो वहीं मां संयोगिता पूनिया प्राइमरी स्कूल में प्रिंसिपल। स्कूली पढ़ाई के बाद राजस्थान के जयपुर स्थित वनस्थली विद्यापीठ से कम्प्यूटर साइंस में बीटेक की पढ़ाई के दौरान ही उन्होंने यह लक्ष्य तय कर लिया था कि वे किसी प्राईवेट कंपनी में काम नहीं करेंगी बल्कि देश की सेवा करने में अपने को समर्पित कर देंगी। इसी के पूर्ति के लिए आस्था ने डिफेंस क्षेत्र को चुना। बीटेक के बाद उन्होंने एसएसबी की कठिन परीक्षा पास की और इंटरव्यू क्रैक कर लिया। इसके बाद मेडिकल और ट्रेनिंग की सभी प्रक्रिया पूरी कर वह भारतीय नौसेना में अफसर बन गई।

इस समय आस्था के परिवार के सभी सदस्य विशाखापत्तनम में हैं जहां पूनिया को यह गौरवशाली सम्मान मिला है। अपने बेटी की उपलब्धि से गदगद और गौरवान्वित पिता अरूण पूनिया का कहना है कि जब वह छोटी थी तभी विमान की आवाज सुनकर घर के बाहर दौड़ जाती थी और कहती थी कि मैं भी एक दिन विमान उड़ाउंगी। आज आस्था का सपना पूरा हो गया।

आस्था इस वक्त सिर्फ मेरठ के लिए ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुकी हैं। उन्होंने न सिर्फ अपने बचपन के सपने को उड़ान दी बल्कि एक ऐसे सेक्टर में कदम रखा जहां सालों से अब आस्था मिग-29 जैसे फाइटर प्लेन उड़ाएंगी। इस उपलब्धि से उनके पैतृक गांव से लेकर, उनके स्कूल सहित मेरठ तक में जश्न का माहौल है। ❑

जन सुनवाई पर अधिकारी हों गंभीर

गलत काम होगा नहीं, सही काम रूकेगा नहीं : विवेक

• वीरेन्द्र शुक्ल
9936403929

पिताश्री रामचंद्र श्रीवास्तव (अब स्वर्गीय) प्रशासनिक सेवा में थे। इस नाते यह स्वाभाविक था कि पुत्र विवेक श्रीवास्तव का रूझान भी प्रशासनिक सेवा की ही ओर होता। यही हुआ भी। वह प्रशासनिक सेवा में आए भी। लेकिन थोड़ी देर से।

दरअसल, विवेक श्रीवास्तव ने इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग (1997) में बी.टेक करने के बाद बैंगलूरू चले गए थे। जहां वह मल्टीनेशनल कंपनी इंफोसिस में जॉब करने लग गए थे। वैसे तो यहां अच्छी नौकरी थी। अच्छा वेतन भी था। वे कहते भी हैं कि रूपया-पैसा सब कुछ यहां था। लेकिन बस वही कम्प्यूटर पीटते रहिए और प्रोग्राम बनाते रहिए। यानी एकरसता का माहौल बन गया था। वह अब यहां से उक्ताने लगे थे। क्योंकि वह मनमाफिक न तो कार्य कर पा रहे थे और न ही एंज्वाय। एक तरफ यह सब कुछ उनके मन में चल रहा था तो दूसरी तरफ पिता की सीख और संस्कार भी साथ था। लिहाजा उन्होंने तकनीकी दुनिया से व्यावहारिक दुनिया में आने का मन पूरी तरह बना लिया।

अब वह पूरी तरह प्रशासनिक सेवक बनने को तैयार थे। इसके लिए उन्होंने तैयारियां भी शुरू कर दीं। लेकिन भाग्य के धनी वे नहीं थे। हां, मन के धनी जरूर थे। यही नहीं उनके स्वभाव में जिद्दीपन और दृढ़ निश्चय का समावेश था। लिहाजा, एक दो बार की प्रतियोगी परीक्षा में असफलता से निराश और उदास होने के बजाय उनके मन में प्रशासनिक सेवा में जाने की इच्छा और हिलोरें मारने लगीं। प्रशासनिक सेवा में जाने का उनका इरादा कितना दृढ़ हो चुका था यह इसी से समझा जा सकता है कि उन्होंने 'अंतिम अटेम्प्ट' में पीसीएस बनने का अपना चिर ख्वाब पूरा ही कर डाला।

विवेक श्रीवास्तव अंततः 2008 में पीसीएस क्वालीफाई कर गए। चयनित होने पर उन्हें 2011 का बैच मिला।

मृदुभाषी, स्पष्ट वक्ता और मिलनसार व्यक्तित्व के धनी विवेक श्रीवास्तव को प्रशासनिक सेवा में जाना इस कारण भी जरूरी हो गया था कि क्योंकि उन्हें पता था कि यही एक ऐसा महकमा है जिसमें आप हर क्षेत्र में जाकर काम कर सकते हैं। जबकि और कहीं इतने अवसर उपलब्ध होने की संभावना नहीं के बराबर होती है। यहां पब्लिक के लिए काम करने के ढेरों अवसर होते हैं। साथ ही अलग तरह से काम करने की संभावना भी बरकरार रहती है। प्रशासनिक सेवा में न केवल काम करने के अनेकों अवसर होते हैं, बल्कि काम के अलग-अलग नेचर भी होते हैं। अपने अनुभव के बारे में वे कहते हैं कि फतेहपुर जैसे छोटे जिलों में जहां उन्हें रूरल बैकग्राउंड में काम करने का अवसर और अनुभव मिला तो वहीं अर्बन लखनऊ जैसे बड़े शहर में अर्बन बैकग्राउंड के तहत लॉ एण्ड आर्डर को समझने, परखने और उसे सुलझाने का अवसर मिलता रहा।

वे कहते हैं कि इस सेवा में विविधता है। आप अच्छी तरह से पब्लिक के हित में कार्य कर सकते हैं। यानी समाज के पिछड़े, पीड़ित और परेशान लोगों को सहारा और सहयोग देकर उनके चेहरे पर मुस्कान ला सकते हैं।

फिलहाल, उनकी प्रशासनिक सेवा की अवधि अभी बहुत ज्यादा लंबी नहीं हुई है। इस दौरान वह लगभग आधा दर्जन जिलों में ही रहे, लेकिन जहां भी रहे, वहां लंबे समय तक रहे और पब्लिक के सेवा में जुटे रहे।

वाराणसी से शुरू हुआ उनके प्रशासनिक सेवा का सफर फिलहाल राजधानी लखनऊ है। इस समय वे लखनऊ विकास प्राधिकरण में सचिव के पद पर कार्यरत हैं। लेकिन जहां तक लखनऊ में सेवा देने का मामला है तो यह उनके लिए दूसरा अवसर है। इससे पहले वह लखनऊ में सिटी मजिस्ट्रेट के रूप में भी कार्यरत रहे।

लेकिन उनके अनुसार जो सबसे बड़ा और चुनौतीपूर्ण कार्य उनके द्वारा संपन्न हुआ, वह उनकी फर्रूखाबाद तैनाती की है। उस समय कोविड महामारी ने हर किसी को परेशान और मुश्किल में डाल रखा था। लोगों की लगातार मौत से दहशत का माहौल बना हुआ था। इस महामारी से लोग इतने घबराए और चिंतित हो चुके थे कि लोग अपने स्वजनों की सेवा से भी कतराने लगे थे। मरीजों को घर के लोग अस्पतालों में छोड़कर भाग रहे थे। कोई अपनी जान जोखिम में नहीं डालना चाहता था। ऐसे में विवेक श्रीवास्तव ने न केवल कोविड पीड़ितों के लिए एक देवदूत के रूप में उभर कर सामने आए बल्कि उनकी सेवा और सहायता में मरीजों से इतनी घनिष्ठता और निकटता बना चुके थे कि वे खुद कोविड के शिकार हो गए। तब भी उन्होंने इसकी परवाह नहीं की। वे मरीजों की सेवाभाव में दिन-रात जुटे रहे।

उनका कहना है कि इस दौरान उन्हें नया अनुभव तो मिला ही साथ ही यह मेरे कॅरियर की शुरुआती दौर में ही नए तरह का चैलेंजिंग काम था। क्योंकि पहले तो मरणासन्न मरीजों के लिए सही समय पर ऑक्सीजन पहुंचाने और दिलाने की महती जिम्मेदारी थी। साथ ही जब बाहर से आने वाले प्रवासी श्रमिकों की देखभाल और सुरक्षा के साथ ही, उन्हें उनके गन्तव्य तक पहुंचाने की जिम्मेदारी भी किसी बड़ी और कठिन चुनौती से कम नहीं थी।

इस बारे में विवेक का कहना है कि पहले मरीजों को ऑक्सीजन की सप्लाई में जरा भी देरी न करके सही वक्त पर उन्हें संकट से उबारने में जहां मैने तनिक भी देरी नहीं की और कई मरीजों को मौत के मुंह से निकालने में कामयाबी हासिल की तो वहीं प्रवासी श्रमिकों को उनके घर तक सही सलामत पहुंचाकर, मैं अपने को बहुत लकी मानता हूं कि मैं मुश्किल हालातों में मरीजों को बचाने में काफी हद तक सफल रहा। वैसे यह मेरी ड्यूटी थी पर जिस सेवाभाव और तन्मयता से मैने मरीजों की जान बचाई उससे मुझे आज भी सोच-सोचकर बड़ी संतुष्टि मिलती है। मुझे लगता है कि मैने अपने कर्तव्यों का सही ढंग से निर्वाह किया है।

उनका कहना है कि एक अधिकारी के लिए अपने कार्य से संतुष्ट होना बेहद जरूरी है। क्योंकि जब आप किसी की सेवा या सहायता करके सेटिसफैक्शन प्राप्त करते हैं तो आप दोहरी खुशी के हकदार हो जाते हैं। एक तो आप अपने कर्तव्यों के प्रति ईमानदारी बरतते हैं तो दूसरी तरफ अपने कार्य से जो सेटिसफैक्शन प्राप्त करते हैं, वह बहुत मायने रखता है।

गाजियाबाद में ही रूस-यूक्रेन से उपजे विकट हालात को सफलता पूर्वक अंजाम देने के बाद उन्होंने साहिबाबाद विधान सभाक्षेत्र का चुनाव संपन्न कराना भी किसी चुनौती से कम नहीं था। क्योंकि गाजियाबाद विधानसभा की साहिबाबाद सीट को भारत की सबसे बड़ी विधानसभा क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। क्योंकि यहां 1123 बूथ पर चुनाव संचालन मामूली बात नहीं थी। लेकिन उप-जिलानिर्वाचन अधिकारी के तौर पर उन्होंने कुशलता पूर्वक चुनाव को संपन्न कराने में सफल रहे। यहां नगर निगम के चुनाव में भी रिटर्निंग आफीसर

यहां-यहां रहे तैनात

2008	- पीसीएसमें चयन। बैच मिला - 2011
2011	- डिप्टी कलेक्टर- वाराणसी
2013	- एसडीएम- (खागा और सदर) फतेहपुर।
2016 से जून 2017 तक	- एसडीएम- नवाबगंज (बरेली)।
जुलाई 2017 से अगस्त 2018 तक	- सिटी मजिस्ट्रेट, लखनऊ
सितंबर 2018 से अक्टूबर 2021 तक	- एडीएम (वि./रा.) फर्रूखाबाद
नवंबर 2021 से जनवरी 2024 तक	- एडीएम (वि./रा.) गाजियाबाद
संप्रति 1 फरवरी 2024 से	- सचिव, लखनऊ विकास प्राधिकरण

गाजियाबाद में भी मिला नया अनुभव

फर्रूखाबाद में विवेक श्रीवास्तव को जहां नए अनुभव और नई चुनौती से सामना करना पड़ा था तो वहीं गाजियाबाद में भी उन्हें कठिन परीक्षा से गुजरना पड़ा। एडीएम रहते यहां उन्हें रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध से उपजे हालातों से दो-चार होना पड़ा। इस बार उन्हें विदेश से आने वाले भारतीयों को दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर रिसीव करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इसके अलावा हिंडन इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर भी भारतीय नागरिकों का आना जारी था।

यहां भी उनके जिम्मे बड़ी जिम्मेदारी का काम था। न केवल स्वदेश लौटने वाले भारतीयों को रिसीव तक करने की ही जिम्मेदारी थी बल्कि यह भी पता करना कि उन्हें यूपी में कहां-कहां जाना है। इसको शार्टआउट करने के साथ ही उनके लिए खाने-पीने और उन्हें जहां अपने गन्तव्य पर जाना है उसके लिए वाहन की व्यवस्था करना। जिन-जिलों से वे गुजरेंगे उस जिले अधिकारियों को उनकी जानकारी देना। साथ ही उन्हें सुरक्षित घर तक पहुंचाना भी बड़ा दुष्कर कार्य था।

बावजूद इसके विवेक श्रीवास्तव ने न केवल अपनी जिम्मेदारी का तत्परता और गंभीरता से निर्वहन ही किया बल्कि पूरे मनोयोग से हंसी-खुशी, परेशान लोगों को सही सलामत घर तक पहुंचाने का कार्य भी उनके लिए न केवल एक नए तरह का अनुभव था बल्कि यह भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य था।

के रूप में उन्होंने अपनी सेंवाएं दीं। साहिबाबाद में चुनाव प्रबंधन बहुत चुनौतीपूर्ण था।

जिलों में रहते हुए उन्हें कुछ जगहों पर चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन इस प्रेशर को झेलने के लिए विवेक श्रीवास्तव हमेशा तैयार रहते थे। उनका मानना है कि कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में उत्साह और ऊर्जा बढ़ जाती है। अपने कर्तव्यों के निवर्हन में जनहित को पहली प्राथमिकता देनी चाहिए। आमजन के हित में कई बार स्वविवेक से भी निर्णय लेना पड़ता है। उनका हमेशा प्रयास रहा है कि आमजन को न्याय मिले। सरकार की जनकल्याणकारी योजनाएं धरातल पर उतरें।

नवागंतुक और प्रशिक्षु अधिकारियों को सलाह या संदेश देने की बात पर विवेक श्रीवास्तव का कहना है कि जो पद अधिकारी को दिया गया है वह बेहद जिम्मेदारी भरा होता है। अधिकारी को सरकार की सभी योजनाओं का लाभ अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक पहुंचे इसकी जिम्मेदारी पूरी तरह अधिकारी की होती है। जरूरतमंद हर व्यक्ति को लाभ पहुंचना चाहिए, इसके लिए अधिकारी को निरंतर प्रयासरत रहने की जरूरत है। जन सुनवाई पर भी अधिकारी को गंभीर रहना चाहिए। उसे आगन्तुक की बात न केवल सुननी ही चाहिए बल्कि बात की गहराई में जाकर उसका निराकरण भी करना चाहिए। किस तरह से जनता-जनार्दन को संतुष्टि मिले, इसके लिए भी अधिकारी को सचेत और प्रयासरत रहना चाहिए। जनता की संतुष्टि ही अधिकारी का कर्तव्य होना चाहिए और जनता का हर जायज काम बिना देरी, लाग-लपेट के सही समय पर होना अधिकारी को सुनिश्चित करना चाहिए।

जहां तक विवेक श्रीवास्तव की व्यक्तिगत बात है तो इलाहाबाद में जन्मने के बावजूद उनकी प्रारंभिक पढ़ाई इलाहाबाद में इसलिए नहीं हो पाई क्योंकि उनके पिता की जहां-जहां पोस्टिंग होती रही, वहीं उनका पठन-पाठन होता रहा। लेकिन हाईस्कूल और इंटर दोनों उन्होंने इलाहाबाद से ही किए और बीटेक भी इलाहाबाद के एमएलएनआईटी से किया।

वैसे तो प्रशासनिक व्यस्तताओं के चलते विवेक श्रीवास्तव अपनी कई हॉबीज को पूरा करने में असमर्थ पाते हैं, लेकिन जब भी काम से थोड़ा भी फुरसत पाते हैं तो वह कुकिंग की अपनी हॉबी को पूरा करने से अपने को रोक नहीं पाते हैं। केवल कुकिंग तक ही वह सीमित नहीं हैं बल्कि बढ़िया खाना बनाते हैं तो बढ़िया खाना खाने की हर कहीं इच्छा भी रखते हैं।

वरिष्ठ IAS भूपेंद्र चौधरी, खाद्य आयुक्त उ. प्र. ने मीडिया मंच के नवीनतम अंक जून 2025 का किया विमोचन। साथ में वरिष्ठ पत्रकार सिद्धार्थ कलहंस एवं राजेश मिश्रा।

शुभ वापसी

शाश्वत तिवारी
8090203000

"जहाँ नजर जाती है, वहाँ से आगे जाने की चाह ही असली अंतरिक्ष है।"

शुभांशु की यात्रा केवल एक वैज्ञानिक घटना नहीं थी, यह एक सांस्कृतिक, राष्ट्रीय और आत्मिक यात्रा थी। उन्होंने हमें सिखाया कि सपनों की कोई सीमा नहीं होती–न भूगोल की, न परिस्थिति की। इतिहास कभी-कभी किसी एक इंसान की यात्रा से बदल जाता है। भारत की अंतरिक्ष गाथा में शुभांशु शुक्ला का नाम अब रहती दुनिया तक जाना जायेगा। वे केवल अंतरिक्ष में गए एक व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे स्वप्नद्रष्टा हैं जिनकी उड़ान ने न केवल विज्ञान और तकनीक की सीमाएँ लांघीं, बल्कि भारत की नई पीढ़ी को आकाश छूने का हौसला दिया।

शुभांशु शुक्ला का जन्म यूपी कैपिटल, लखनऊ के एक साधारण परिवार में हुआ। पिता स्कूल शिक्षक और माँ एक ग्रहिणी। घर में सीमित संसाधन थे लेकिन सपनों की कोई सीमा नहीं थी। बाल्यकाल से ही शुभांशु को अंतरिक्ष, तारों और ग्रहों में गहरी रुचि थी। टीवी पर जब भी कोई राकेट लान्च दिखता, तो वे घंटों तक उसे एकटक निहारते रहते।

स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा– "शुभांशु शुक्ला केवल एक व्यक्ति नहीं हैं, वे भारत की उड़ती आकांक्षाओं का प्रतीक हैं।"

स्कूल की पढ़ाई में वे हमेशा अव्वल रहे। विज्ञान विशेष रुचि का विषय रहा। उन्होंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) से एयरोनाटिकल इंजीनियरिंग में स्नातक किया और फिर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) से जुड़ गए।

ISRO में उन्होंने कई उपग्रह मिशनों में काम किया। वर्ष 2022 में जब भारत सरकार ने अपने पहले मानवयुक्त अंतरिक्ष मिशन गगनयान की घोषणा की, तब शुधांशु का नाम पहली बार चर्चा में आया। प्रारंभिक चयन प्रक्रिया में ही वे आगे निकल गए। मानसिक और शारीरिक परीक्षण, तनावपूर्ण परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता, और तकनीकी ज्ञान की हर कसौटी पर खरे उतरे।

इसके बाद भारत और अमेरिका के बीच एक ऐतिहासिक समझौता हुआ, जिसके तहत NASA और ISRO के साझा मिशन में एक भारतीय अंतरिक्ष यात्री को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) भेजा जाना था। कड़ी प्रतिस्पर्धा के बाद, यह गौरव शुधांशु शुक्ला को मिला।

16 जून 2025, वह दिन जब करोड़ों भारतीयों ने टीवी, मोबाइल और रेडियो पर निगाहें गड़ा दीं। अमेरिका के केनेडी स्पेस सेंटर से सुबह 8:12 बजे (IST) पर NASA के फाल्कन-9 राकेट ने उड़ान भरी, जिसमें शुभांशु शुक्ला अपने दो अमेरिकी सहकर्मियों के साथ सवार थे।

यह केवल एक वैज्ञानिक मिशन नहीं था,

को देखता हूँ, तो सीमाएँ मिट जाती हैं। केवल नीला ग्रह दिखता है- मानवता का एकमात्र घर। यही मेरा धर्म है, यही मेरी राष्ट्रीयता।''

इस मिशन के अंतर्गत उन्हें प्रोवेट अभियान में शामिल किया गया-एक विशेष प्रायोगिक मिशन, जिसमें चाँद की निकटतम कक्षा में प्रवेश कर वहाँ की ऊर्जाओं, विकिरण और संभावनाओं का अध्ययन किया गया।

इस दौरान शुभांशु ने चंद्रमा की सतह की हाई-रेजोल्यूशन इमेजिंग की, भविष्य की चंद्र बस्तियों की योजना हेतु आवश्यक डाटा एकत्रित किया, और भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के लिए महत्वपूर्ण जानकारी पृथ्वी पर भेजी।

15 जुलाई 2025, यह दिन भारत के लिए दिवाली बन गया। सुबह 7:35 बजे शुभांशु का स्पेस कैप्सूल US के सैन डिएगो तट के पास समुद्र में सुरक्षित उतरा।

शुभांशु शुक्ला को मिले प्रमुख सम्मान में:

- अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष संस्था द्वारा 'ग्लोबल स्पेस अवार्ड'
- IIT गौरव अलंकरण

यह एक देश की उम्मीदों की उड़ान थी। लखनऊ से लेकर लद्दाख, कन्याकुमारी से कच्छ तक हर कोई भारतीय गर्वित था। बच्चों ने स्कूलों में पोस्टर बनाए, वृद्धों ने आशीर्वाद दिए, और सोशल मीडिया पर ''भारत का तारा'' ट्रेंड कर रहा था।

22 घंटे की यात्रा के बाद अंतरिक्ष यान ISS से जुड़ गया। वहाँ शुधांशु ने 18 दिनों का विशिष्ट और बहुआयामी वैज्ञानिक अभियान पूरा किया। वे भारत के पहले व्यक्ति बने जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर लंबा समय बिताया।

महत्वपूर्ण शोधः

-शून्य गुरुत्वाकर्षण में मानव शरीर पर प्रभाव का अध्ययन।

-जीव विज्ञान और औषधीय पौधों पर प्रयोग।

-भारत निर्मित सेंसर की परख।

ISS से उनका एक संदेश सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुआ" जब मैं अंतरिक्ष से धरती

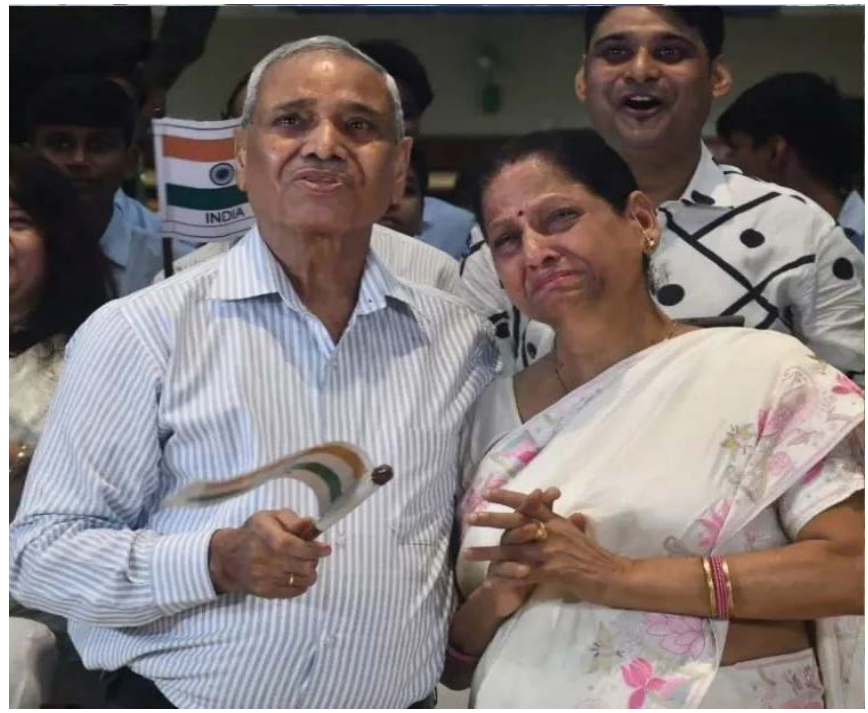

शुभांशु ने पीएम से कहा था

शुभांशु ने पीएम से कहा था- अंतरिक्ष से कोई सीमा नहीं दिखती प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 28 जून को शुभांशु से वीडियो काल पर बातचीत की थी। उन्होंने पूछा कि अंतरिक्ष को देखकर उन्हें सबसे पहले क्या महसूस हुआ, तो ग्रुप कैप्टन शुक्ला ने कहा, 'अंतरिक्ष से, आपको कोई सीमा नहीं दिखती। पूरी पृथ्वी एकजुट दिखती है।'

शुभांशु ने प्रधानमंत्री मोदी से कहा- अंतरिक्ष से भारत बहुत भव्य दिखता है। हम दिन में 16 सूर्योदय और 16 सूर्यास्त देखते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने शुभांशु शुक्ला से पूछा कि आप गाजर का हलवा लेकर इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन गए हैं। क्या आपने अपने साथियों को खिलाया। इस पर शुभांशु ने कहा कि हां साथियों के साथ बैठकर खाया।

18 दिन स्पेस में शुभांशु ने क्या-क्या किया

60 वैज्ञानिक प्रयोगः शुभांशु ने मिशन के दौरान 60 से ज्यादा वैज्ञानिक प्रयोगों में हिस्सा लिया। इनमें भारत के सात प्रयोग शामिल थे। उन्होंने मेथी और मूंग के बीजों को अंतरिक्ष में उगाया। स्पेस माइक्रोएल्गी' प्रयोग में भी हिस्सा लिया। अंतरिक्ष में हड्डियों की सेहत पर भी प्रयोग किए।

प्रधानमंत्री से बातः 28 जून 2025 को शुभांशु ने ै से पीएम नरेंद्र मोदी के साथ लाइव वीडियो क०न्फ्रेंस की। इस दौरान उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष से भारत बहुत भव्य दिखता है। पीएम ने पूछा कि आप गाजर का हलवा लेकर गए हैं। क्या साथियों को खिलाया। इस पर शुभांशु ने कहा- हां साथियों के साथ बैठकर खाया।

छात्रों से संवादः 3, 4 और 8 जुलाई को उन्होंने तिरुवनंतपुरम, बेंगलुरु और लखनऊ के 500 से अधिक छात्रों के साथ हैम रेडियो के जरिए बातचीत की। इसका मकसद युवाओं में ैज्ड (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) के प्रति रुचि बढ़ाना था।

ैप्ट के साथ संवादः 6 जुलाई को उन्होंने ैप्ट के चेयरमैन ड०. वी. नारायणन और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बातचीत की, जिसमें उनके प्रयोगों और भारत के गगनयान मिशन के लिए उनके योगदान पर चर्चा हुई। पृथ्वी की तस्वीरेंः शुभांशु ने ै के कपोला माड्यूल से पृथ्वी की शानदार तस्वीरें खींचीं, जो सात खिड़कियों वाला एक खास हिस्सा है।

शुभांशु ने पीएम से कहा था

शुभांशु ने पीएम से कहा था- अंतरिक्ष से कोई सीमा नहीं दिखती प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 28 जून को शुभांशु से वीडियो काल पर बातचीत की थी। उन्होंने पूछा कि अंतरिक्ष को देखकर उन्हें सबसे पहले क्या महसूस हुआ, तो ग्रुप कैप्टन शुक्ला ने कहा, 'अंतरिक्ष से, आपको कोई सीमा नहीं दिखती। पूरी पृथ्वी एकजुट दिखती है।'

शुभांशु ने प्रधानमंत्री मोदी से कहा- अंतरिक्ष से भारत बहुत भव्य दिखता है।

- 'युवा विज्ञान रत्न' पुरस्कार खास तौर पर शामिल है।

शुभांशु भारत के पहले अंतरिक्ष यात्री है जिन्होंने इस मिशन में भाग लिया।

- वह एक ही मिशन में चंद्रमा की निकटतम परिक्रमा करने वाले पहले भारतीय है।
- अब तक के सबसे अधिक शैक्षिक संवाद करने वाले अंतरिक्ष यात्री है।
- सबसे कम उम्र में अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन पहुंचने वाले भारतीय है।
- बालीवुड ने उनकी जीवनी पर फिल्म बनाने की घोषणा की, जिसका नाम होगा "तारों से आगे।"

आज यदि कोई बच्चा आकाश की ओर देखता है और कहता है-"मैं भी शुभांशु शुक्ला बनना चाहता हूँ", तो समझ लीजिए कि भारत का भविष्य आकाश से भी ऊपर जा चुका है।

प्राकृतिक आपदा लील रही जिंदगियां

गोविन्द पंत राजू
9415014980

जुलाई आधे से ज्यादा बीत चुका है लेकिन देश के मैदानी इलाकों में बाढ़ के भीषण प्रकोप की खबरें सुर्खियां नहीं बनी हैं। जून की शुरुआत में मानसून को लेकर जिस तरह की भविष्यवाणियां थीं मानसून ने उन सब को तो गच्चा दे दिया लेकिन बारिश के साथ अब बाढ़ से भी ज्यादा खतरनाक दो नई आपदाएं अपना रौद्र रूप दिखाने लगी हैं। मैदानी इलाकों में बिजली गिरने और पहाड़ी इलाकों में बादल फटने और उसके कारण अचानक आने वाली अथाह गाद-मिट्टी तथा भूस्खलनों की घटनाओं ने बरसात की आपदाओं को अब एक नया घातक चेहरा दे दिया है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक बिहार और उत्तर प्रदेश में अब तक बिजली गिरने से 74 लोगों की मृत्यु हो चुकी है और अनेक लोग घायल हुए हैं। जबकि पहाड़ों में कारगिल के इलाके से लेकर हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में बादल फटने और अचानक होने वाले भूस्खलनों से भारी नुकसान हुआ है। 55 से ज्यादा लोगों की जान गई है और अनेक गांव तथा दर्जनों सड़कें बुरी तरह तबाह हो गई हैं। आंकड़े बताते हैं कि हाल के वर्षों में बादल फटने और बिजली गिरने की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं और यह सब ग्लोबल वार्मिंग के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर प्रकृति के साथ मानवीय छेड़छाड़ का सीधा प्रतिफल है। पिछले लगभग 2 दशकों से इन आपदाओं की तीव्रता और संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है और हर वर्ष इनके कारण जान माल की भारी क्षति भी हो रही है।

सावन की शुरुआत में ही उत्तर प्रदेश में आकाशीय बिजली गिरने से एक दिन में ही 12 लोगों की जान गई। देश के उत्तरी पर्वतीय भागों में बादल फटने की कम से कम 46 बड़ी घटनाएं सामने आई हैं।

इस बार बादल फटने की पहली घटना जम्मू कश्मीर में रामबन इलाके में हुई। अप्रैल के तीसरे हफ्ते में बादल फटने और तेज वर्षा के कारण बड़ी क्षति हुई। 3 लोगों की जान गई जबकि 100 लोगों को बचा लिया गया। कई इमारतें, दर्जनों वाहन और सड़कों को बहुत नुकसान हुआ। इसके बाद कारगिल में भी बादल फटने से तबाही हुई। फिलहाल हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड अभी भी बादल फटने और भूस्खलन का त्रास झेल रहे हैं।

हिमाचल प्रदेश में 20 जून को मानसून के आने के बाद से ही कई स्थानों पर लैंडस्लाइड, फ्लैश फ्लड और बादल फटने की घटनाओं से भारी तबाही हुई है। इस छोटे पहाड़ी राज्य में 22 दिनों में ही 92 लोग जान गंवा चुके हैं, 33 लोग लापता हैं और 172 घायल हुए हैं। प्रदेश में अब तक विभिन्न जिलों में 31 फ्लैश फ्लड, 17 लैंडस्लाइड और 22 घटनाएं हुई हैं, जिससे अब तक सरकारी और निजी संपत्ति को 751.78 करोड़ का नुकसान हुआ है। वहीं 380 पक्के और कच्चे मकान मलबे के ढेर में बदल

गए। 619 मकानों को आंशिक नुकसान पहुंचा है। मानसून में इस बार 769 गौशालाएं और 184 दुकान व फैक्ट्रियां तबाह हो गई हैं। प्रदेश में 21,500 पोल्ट्री बर्डस और 953 पशुओं की भारी बारिश की वजह से मौत हो चुकी है। इस साल 30 जून और एक जुलाई की रात को मंडी जिले की सुदूर सराज घाटी में बादल फटने की 14 घटनाएं हुईं। इनमें 14 लोगों की मौत हो गई और 31 लोग लापता बताए जा रहे हैं। सड़कें, पेड़, कई छोटी बड़ी परियोजनाएं और दूसरे कई ढांचे भी पानी के तेज बहाव में बह गए।

इस इलाके के लोगों के लिए खेती और सेब के बाग आय का मुख्य जरिया है, लेकिन इस साल मानसून की बारिश में उनके खेत और बाग बुरी तरह तबाह हो गए हैं। बचाव आपरेशन के तहत 402 लोगों को बचाया गया है। इनमें 92 छात्र और अध्यापक भी शामिल हैं। इस इलाके में वर्षों से सूखे पड़े कई नाले बादल फटने के कारण एक ही रात में उफन गए और देखते ही देखते मकानों और सड़कों को बहा ले गए।

मंडी के लोगों का कहना है कि पिछले साल भी यहां भारी बारिश हुई थी।लेकिन हमने कभी नहीं देखा कि एक ही दिन में एक ही इलाके में बादल फटने की 14 घटनाएं हुई हों। पहले यह एक दुर्लभ घटना होती थी।अब यह अक्सर और बड़े पैमाने पर हो रही है।

इससे पहले 2023 के मानसून में भी हिमाचल प्रदेश में बादल फटने के साथ अभूतपूर्व बारिश हुई थी। जिससे मुख्य रूप से कुल्लू, मंडी और शिमला जिले प्रभावित हुए थे। राज्य सरकार के अनुमान के अनुसार उस आपदा में 10 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हुआ था और 500 से अधिक लोगों की जान गई थी। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू के अनुसार इस बार भी राज्य में मूसलधार बारिश से हुई तबाही में अब तक 69 लोगों की जान जा चुकी है, जबकि 110 लोग घायल हुए हैं। बहुत से लोग अब भी लापता हैं।

उधर उत्तराखंड में भी हाल ऐसा ही है। 17 जून 2013 को उत्तराखंड में अचानक हुई मूसलधार वर्षा 340 मिलीमीटर रिकार्ड की गयी जो सामान्य 65.9 मिमी से 375 प्रतिशत ओज्यादा थी जिसके कारण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हुयी। इसी दौरान अचानक उत्तरकाशी के डोडी ताल इलाके में बादल फटने के बाद असी गंगा और भागीरथी में जल स्तर बढ़ गया था।

लगातार होती रही बारिश की वजह से गंगा और यमुना का जल स्तर भी तेजी से बढ़ा। कुमाऊं हो या गढ़वाल मंडल, बारिश ने हर जगह तबाही मचाई। केदारनाथ क्षेत्र में सर्वाधिक तबाही हुई। केदारनाथ मंदिर सहित पूरी केदार घाटी में तीर्थ यात्रियों सहित 5000 से अधिक लोगों की जान गई। हजारों घर, पुल, सड़कें और गांव तबाह हो गए।

इस वर्ष भी अब तक ऐसी अनेक घटनाएं हो चुकी हैं। उत्तरकाशी जिले के बड़कोट-यमुनोत्री मार्ग पर बलिगढ़ में 28 जून की रात को बादल फटने की घटना ने भारी तबाही मचाई। इस प्राकृतिक आपदा के कारण एक निर्माणाधीन होटल को व्यापक नुकसान पहुंचा है। घटना में 9 मजदूरों की जान चली गई। बादल फटने के कारण अचानक बढ़ गए पानी ने यमुनोत्री हाइवे को भी भारी नुकसान पहुंचाया। रुद्रप्रयाग और चमोली जनपद में स्थित बद्रीनाथ और केदारनाथ क्षेत्र में भारी वर्षा के कारण मंदाकिनी और अलकनंदा नदी घाटियों में भी बादल फटने और भूस्खलन की अनेक घटनाएं हुई हैं। बागेश्वर और पिथौरागढ़ जिलों में भी बादल फटने से तबाही के समाचार हैं। इन घटनाओं में जनधन की भारी हानि हुई है। अनेक इलाकों में खेती की जमीन खत्म हो गई है और पशुओं को भी जान गंवानी पड़ी है।

वैसे तो बादल फटने और आकाशीय बिजली गिरने की दोनों ही घटनाएं प्राकृतिक आपदाएं हैं लेकिन हाल के वर्षों में इन दोनों की संख्या और तीव्रता जिस तरह से बढ़ रही है उसके पीछे ग्लोबल वार्मिंग को भी एक कारण माना जा रहा है। लेकिन विशेषज्ञों की राय में अनियंत्रित मानवीय हस्तक्षेप,प्रकृति के साथ मनमानी छेड़छाड़ और पर्यावरण के खिलाफ काम किए जाने की बढ़ती प्रवृत्ति मुख्य रूप से जिम्मेदार है।

आकाशीय बिजली गिरने की घटनाएं बढ़ने को प्रदूषण और पर्यावरण की अनदेखी करने से जोड़ा जा रहा है। वर्षा ऋतु में मैदानी इलाकों में बिजली गिरने की घटनाएं जलवायु परिवर्तन और शहरीकरण जैसे कारकों के कारण भी बढ़ रही हैं।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण, वायुमंडल में अधिक नमी जमा होती है, जिससे गरज के साथ अधिक शक्तिशाली तूफान आते हैं। इसके अतिरिक्त, अत्यधिक गर्मी के कारण जमीन भी तेजी से गर्म होती है, जिससे बिजली गिरने की घटनाएं बढ़ जाती हैं। शहरी क्षेत्रों में, कंक्रीट और डामर जैसी सामग्रियों के कारण सतह का तापमान अधिक होता है, जो संवहनी गतिविधि को बढ़ाता है। पेड़ों की कमी से भी बिजली गिरने की घटनाएं बढ़ सकती हैं, क्योंकि पेड़ बिजली को आकर्षित करते हैं और जमीन पर गिरने से रोकते हैं।

हर साल बुंदेलखंड अंचल विशेषकर छतरपुर टीकमगढ़, पन्ना और आसपास के जिलों में आकाशीय बिजली गिरने की घटनाएं बड़ी संख्या में दर्ज की जाती हैं। बरसात से ठीक पहले और मानसून के दौरान बिजली गिरने से कई लोगों की जान चली जाती है, तो दर्जनों घायल होते हैं। अब इस गंभीर समस्या के पीछे भूगर्भीय और वैज्ञानिक कारण तलाशे जा रहे हैं और इसमें सबसे बड़ा कारण सामने आ रहा है इस क्षेत्र की धरती में मौजूद खनिज अयस्कों की प्रचुरता। बुंदेलखंड की चट्टानी संरचना और मिट्टी में मौजूद लौह अयस्क, तांबा, मैंगनीज, ग्रेफाइट जैसे धात्विक तत्व अत्यधिक मात्रा में पाए जाते हैं। भूगर्भीय विशेषज्ञों के मुताबिक, ये खनिज विद्युत के अच्छे सुचालक होते हैं और आकाशीय बिजली को जमीन की ओर खींचने में सहायक होते हैं। जब बादलों में विद्युत आवेश (चार्ज) अत्यधिक मात्रा में इकठ्ठा होता है, तो वह धरती पर किसी भी अच्छे सुचालक पदार्थ यानी धातु युक्त क्षेत्र की ओर आकर्षित होता है।

लाइटनिंग रेजिलिएंट इंडिया कैंपेन के वैज्ञानिक पूर्व कर्नल संजय श्रीवास्तव का कहना है वनों की कटाई, जल निकायों में कमी, शहरीकरण, प्रदूषण के कारण एरोसोल के स्तर में वृद्धि, बड़े पैमाने पर खनन, औद्योगीकरण सहित अन्य कारकों से बिजली गिरने की घटनाएं बढ़ी हैं।

छतरपुर-टीकमगढ़ सीमा पर कुछ दिन पूर्व ही बिजली गिरने से तीन महिलाओं सहित चार लोगों की मृत्यु हो गई, जबकि आधा दर्जन से अधिक लोग झुलस गए। एक अन्य घटना में

सात लोग बिजली की चपेट में आए। यह कोई अपवाद नहीं है। हर साल छतरपुर, टीकमगढ़, पन्ना जैसे जिलों में औसतन तीन दर्जन से अधिक मौतें आकाशीय बिजली से होती हैं। यह दर्शाता है कि बुंदेलखंड में यह प्राकृतिक आपदा कितनी गंभीर है।

खेतों में काम कर रहे किसान, तालाब, कुएं, या नदी किनारे मौजूद लोग, मोबाइल या छतरी का उपयोग कर रहे लोग,पेड़ों के नीचे खड़े होकर बारिश से बचने की कोशिश करने वाले और ऊंची जगहों या खुले मैदानों में मौजूद व्यक्ति सर्वाधिक आकाशीय बिजली की चपेट में आते हैं।

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो की रिपोर्ट के अनुसार भारत में हर साल करीब 2500 लोग आकाशीय बिजली से मारे जाते हैं। आकस्मिक मौतों में बिजली गिरने का योगदान 35 से 40 प्रतिशत तक होता है। इसका सबसे अधिक असर ग्रामीण क्षेत्रों और किसानों पर होता है।

महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के भूगर्भ के प्रोफेसर पीके जैन का कहना है आज तक बुंदेलखंड में बिजली गिरने की संवेदनशीलता पर कोई विशेष सर्वे नहीं हुआ है। भूगर्भीय सर्वेक्षण और खनिजों की विद्युत संवेदनशीलता पर अध्ययन कर संवेदनशील जोन चिह्नित किए जा सकते हैं। साथ ही, आटोमेटिक लाइटनिंग अलर्ट सिस्टम जैसे आधुनिक तकनीक वाले अलर्ट सिस्टम ग्रामीण क्षेत्रों में लगाए जा सकते हैं।

पर्यावरण, विकास और स्थिरता के अंतरराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में बिजली गिरने से होने वाली मौतों की बढ़ती संख्या एक अप्रभावी प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली और जोखिम को कम करने के बारे में जागरूकता की कमी के कारण भी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि बिजली गिरने से होने वाली मौतों के आंकड़े ''बढ़ती प्रवृत्ति'' को दर्शाते हैं, जिसमें पिछले दो दशकों में सबसे अधिक वृद्धि देखी गई है। रिपोर्ट में इसे ''एक खतरनाक घटनाक्रम'' बताया गया है।

इस रिपोर्ट के मुताबिक 2019-20 से 2020-21 के बीच बिजली गिरने की घटनाएं 34: बढ़ गईं, जबकि 2020-21 और 2021-22 के बीच 19.5 प्रतिशत घट गईं। बिजली गिरने की घटनाओं के कम होने की एक वजह ये बताई गई कि कोविड 19 के दौरान लाकडाउन के कारण प्रदूषण कम हुआ। हवा में ऐरोसोल का स्तर घटना और भारतीय उपमहाद्वीप में मौसम कमोबेश स्थिर रहा।

कई अध्ययन बताते हैं कि प्रदूषण बढ़ने और धरती के गर्म होने से बिजली गिरने की आशंका बढ़ जाती है। अमेरिका की यूनिवर्सिटी आफ कैलिफोर्निया द्वारा 2014 में जारी किए गए एक अध्ययन के मुताबिक दुनिया में हवा के औसत तापमान में प्रति एक डिग्री की बढ़ोतरी से बिजली गिरने की घटनाओं में 12 प्रतिशत का इजाफा होगा।

पिछले दिनों में उत्तर भारत के एक बड़े इलाके में मौसम ने अचानक अंगड़ाई ली है। तेज गर्मी से जूझ रहे इलाकों में बादल घिर आए हैं। कई जगह तेज हवाएं और आंधियां चली हैं और बारिश हुई है।ओले गिरे हैं और साथ ही बिजली भी। अचानक हुए इस मौसमी बदलाव से उत्तर भारत में कई जगह जान-माल का नुकसान हुआ है। सबसे अधिक नुकसान बिहार में हुआ है जहां कम से कम 61 लोगों की मौत हुई है। इनमें से 39 लोगों की मौत ओला गिरने और बारिश से जुड़ी अन्य घटनाओं से हुई जबकि 22 लोगों की मौत बिजली गिरने से हुई है।

नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के 2022 के आंकड़ों के मुताबिक 2022 में देश भर में कुदरती आपदाओं की वजह से 8060 लोगों की जान गई। इनमें से 2887 लोग यानी 35.8 प्रतिशत लोग बिजली गिरने से मारे गए। 2022 में दुनिया भर में बिजली गिरने से करीब 24 हजार लोगों की मौत हुई, जिनमें 2887 लोग अकेले भारत में मारे गए। नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के ही आंकड़ों के मुताबिक 2021 में मौसमी कारणों से 7126 मौतें हुईं, जिनमें से 40 प्रतिशत से ज्यादा बिजली गिरने से हुई थी।

आंकड़ों के मुताबिक 2000 से 2021 के बीच देश भर में 49,000 लोगों की बिजली गिरने से मौत हुई। जबकि 1967 से 2020 के बीच एक लाख से ज्यादा (1,01,309) लोगों की बिजली गिरने से मौत हुई थी। इसी तरह बादल फटने की बढ़ती घटनाओं के लिए भी कई कारण जिम्मेदार माने जा रहे हैं।

हिमाचल प्रदेश में कुछ पर्यावरण विशेषज्ञ वहां हो रही व्यापक क्षति के लिए राज्य में बेतरतीब निर्माण गतिविधियों के जिम्मेदार ठहराते हैं। वो कहते हैं, इस स्थिति के लिए ग्लोबल वार्मिंग के व्यापक असर के अलावा कई स्थानीय कारण भी जिम्मेदार हैं। जैसे यहां बड़े प्रोजेक्टों का अवैज्ञानिक ढंग से क्रियान्वयन हो रहा है। बहुत ज्यादा इमारतें बनाना हो, चार लेन की सड़कें हों या पनबिजली परियोजनाएं,

इन सबने मिलकर पहाड़ों को असुरक्षित बना दिया है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई हो रही है और अब तो हल्की बारिश में भी यहां भारी तबाही हो जाती है।''

हालांकि प्रमुख वैज्ञानिक अधिकारी डा. सुरेश सी अत्री कहते हैं कि हिमाचल प्रदेश में बादल फटने की घटनाओं के सामान्य होते जाने का प्रमुख कारण ग्लोबल वार्मिंग है। इस पहाड़ी राज्य की संकरी घाटियां कई कारणों से अधिक संवेदनशील हैं। देश के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा किए गए वैज्ञानिक अध्ययनों में ये बात सामने आई है कि हिमाचल प्रदेश में औसत तापमान में बीते सौ वर्षों में 0.9 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हुई है, जो हिमालयी राज्यों में सबसे अधिक है। लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि हम जमीनी स्तर पर विकास कार्यों को किस तरह अंजाम दे रहे हैं? इस पर गंभीरता से सोचना चाहिए। हमें बदलते हालात में अपने विकास माडल को दोबारा समझने और उसकी दिशा बदलने की जरूरत है।

वर्षा ऋतु की इन नई आपदाओं के असल कारण चाहे जो भी हों लेकिन यह निर्विवाद सत्य है कि आने वाले वर्षों में हम मनुष्यों को इन प्राकृतिक आपदाओं का अधिक से अधिक प्रकोप झेलना पड़ेगा क्योंकि आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाने को कतई तैयार नहीं है। वह प्रकृति को अपने कब्जे में करना चाहता है। ❑

रिकॉर्ड : 12 घंटे में 37.21 करोड़ पौधे

आयुष सिंह

पिछले साल 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान थीम के तहत प्रदेश में 35 करोड़ पौधरोपण से एक रिकॉर्ड बना था। जबकि इस बार 'एक पेड़ मां के नाम 0.2' के तहत 37.21 करोड़ पौधरोपण से एक नया रिकॉर्ड बना। यद्यपि इस बार 37 पौधरोपण का लक्ष्य निर्धारित किया गया था।

पौधरोपण के इस महाभियान की गंभीरता को इस बात से आंका जा सकता है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ स्वयं तीन शहरों में पौधरोपण कर लोगों को इसके लिए प्रेरित किया और इस महाभियान को गति प्रदान की। सबसे पहले उन्होंने अयोध्या में सरयू के किनारे पौधे लगाकर इस अभियान की शुरुआत की। उन्होंने सरयू किनारे त्रिवेणी वाटिका में बरगद, नीम और पीपल के पौधे रोप कर इसे भगवान श्रीराम, धरती माता और जन्मदायिनी माता को समर्पित किया। इसके बाद आजमगढ़ में उन्होंने और फिर अपने शहर गोरखपुर में आयोजित पौधरोपण समारोह में उपस्थित हुए।

अयोध्या में हुए समारोह में उन्होंने पर्यावरण संरक्षण पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि केन्द्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश के वनाच्छादन में वृद्धि हुई है। प्रदेश में 05 लाख एकड़ क्षेत्रफल में वनाच्छादन बढ़ा है।

अयोध्या में सोलर सिटी के पास दशरथ पथ पर जनसभा में उन्होंने कहा कि पिछले आठ वर्षों में उत्तर प्रदेश ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में मिशाल कायम की है। 2017 में जब भाजपा सरकार बनी तब प्रदेश की नर्सरियों में सिर्फ पांच करोड़ पौधे थे। इस समय यह संख्या बढ़कर 52 करोड़ हो गई है। इस अवधि में 204 करोड़ पौधरोपण किया गया। इसमें से 75 फीसदी पौधे जीवित हैं। इसके चलते राज्य

सोनभद्र रहा शीर्ष पर

पौधरोपण के लिए प्रदेश भर में सभी विभागों और जिलों को लक्ष्य दिया गया था। एक तरफ जहां वन विभाग और ग्राम्य विकास विभाग ने सबसे ज्यादा पौधरोपण किया तो वहीं सोनभद्र जिले में सबसे ज्यादा 1,58,88,285 पौधे लगाए गए।

दूसरे नंबर पर झांसी रहा। यहां 99,51,686 पौधे रोपे गए। प्रदेश भर में सभी मंत्रियों, जनप्रतिनिधियों और अफसरों को पौधरोपण की जिम्मेदारी दी गई थी।

प्रदेश भर में सबसे ज्यादा 4,45,48,989 पौधे शीशम के लगाए गए। पौधरोपण अब किसानों की आमदनी का जरिया बन रहा है। पौधरोपण पर किसानों को कार्बन क्रेडिट दिया जाता है। ऐसे ही सात किसानों को मुख्यमंत्री ने अयोध्या में कार्बन क्रेडिट की धनराशि बांटी। इसके लिए उनका सरकार ने रजिस्ट्रेशन करवाया है।

में पांच लाख एकड़ वन क्षेत्र बढ़ा है। यह उपलब्धि हासिल करने वाले राज्यों में यूपी का दूसरा स्थान है।

आजमगढ़ के सठियांव ब्लाक के केरमा गांव में पौधरोपण कर मुख्यमंत्री ने हरित शंकरी वाटिका की स्थापना की। इसके बाद जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि समाज और राष्ट्र विरोधी तत्वों के खिलाफ कड़ी कॉर्रवाई हो रही है।

गोरखपुर में वह सरकार की योजनाओं पर सवाल उठाने वाली समाजवादी पार्टी पर आक्रामक रहे। यहां के पौधरोपण कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने सपा सरकार के कार्यकाल में पूर्वांचल एक्सप्रेसवे के टेंडर और जेपीएनआईसी से जुड़े आंकड़ों का हवाला देते हुए हमला बोला और बिना किसी का नाम लिए हुए कहा कि सीबीआई जांच में लूट और भ्रष्टाचार उजागर होने से 'बबुआ' बौखला गये हैं। सपा प्रमुख को निशाने पर लेते हुए उन्होंने कहा कि पूर्वांचल एक्सप्रेसवे के टेंडर में 15200 करोड़ रूपये की लागत बताई गई थी। जबकि भाजपा सरकार ने इसे 120 मीटर चौड़ा कर सिर्फ 11800 करोड़ में पूरा किया। यह अंतर ही सपा सरकार की लूट को उजागर करता है।

राज्यपाल ने मिलिट्री स्टेशन में पौधे रोपे

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने बाराबंकी मिलिट्री स्टेशन में त्रिवेणी रोपड़ (पीपल, बरगद, नीम) किया। इस अवसर पर राज्यपाल ने 'एक पेड़ मां के नाम' थीम वृक्षारोपड़ हेतु बनाई गई लघु फिल्म को लांच किया। उन्होंने इस मौके पर पांच आंगनबाड़ी किट, पांच पोषण पोटली, पांच स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को प्रशस्ति पत्र एवं पांच ग्रीन गोल्ड सर्टीफिकेट प्रदान किया।

महामहिम ने अपने उद्बोधन में वन विभाग द्वारा एक पेड़ मां के नाम अभियान की सराहना करते हुए उल्लेख किया कि इस अभियान से न केवल हम अपनी मां के प्रति आभार व्यक्त करते हैं बल्कि धरती मां का भी आभार व्यक्त कर रहे हैं कृषकों द्वारा अपनी निजी भूमि पर किए जा रहे वृक्षारोपण एवं उनके द्वारा मांगी जा रही प्रजातियों को उपलब्ध कराना एक सराहनीय पहल है। जिससे कृषकों की आय में वृद्धि होगी।

जनता को दिया धन्यवाद

इस उपलब्धि के लिए मुख्यमंत्री ने जनता को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि यह अत्यंत गर्व का क्षण है कि एक दिन में 37 करोड़ से ज्यादा पौधे लगाकर यूपी ने रिकॉर्ड कायम किया है।

यह संख्या केवल पौधों की नहीं है बल्कि यह प्रकृति के प्रति हमारी सामूहिक संवेदना, जिम्मेदारी व कृतज्ञता है। आप सभी को इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए धन्यवाद व शुभकामनाएं। आपने जो पौधा लगाया है परिवार का सदस्य मान कर उसकी देखभाल जरूर करें।

उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने कुकरैल स्थित सुगामऊ में त्रिवेणी वन की स्थापना की। जहां पीपल, बरगद और नीम के पौधे लगाए गए। वहीं दूसरे उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने मेरठ में वृक्षारोपड़ महाभियान का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण बचाने के लिए हमें पेड़ लगाने भी होंगे और उन्हें बचाने भी। पर्यावरण संरक्षण को तालाबों को भी कब्जा मुक्त करना होगा।

मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने आजमगढ़ में महुआ का पौधा रोपा। वहीं विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने विधान भवन परिसर में पौधरोपण किया। उन्होंने चंपा का पौधा रोपा।

वन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. अरूण कुमार सक्सेना अयोध्या व गोरखपुर व वन राज्य मंत्री कृष्ण पाल मलिक आजमगढ़ व गोरखपुर के मुख्य कार्यक्रम में शामिल हुए। ❑

यीडा ने लक्ष्य से अधिक लगाए पौधे

यमुना औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यीडा)ने बुधवार को बड़ा काम किया है। यीडा के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (CEO) राकेश कुमार सिंह के नेतृत्व में यीडा ने उत्तर प्रदेश सरकार के बड़े अभियान में भाग लिया। यीडा के CEO राकेश कुमार सिंह के नेतृत्व में पौधारोपण अभियान के तहत 56660 पौधे लगाए गए।

यीडा ने लक्ष्य से अधिक लगाए पौधे

आपको बता दें कि बुधवार को पूरे उत्तर प्रदेश में पौधारोपण का एतिहासिक कार्यक्रम चलाया गया। पौधारोपण अभियान के लिए उत्तर प्रदेश के सभी सरकारी विभागों को लक्ष्य दिए गए थे। यीडा को 44100 पौधे लगाने का लक्ष्य दिया गया था। यीडा के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने लक्ष्य से अधिक पौधे लगाकर पौधारोपण अभियान में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यीडा के क्षेत्र में कुल 56660 पौधे लगाए गए। यीडा के क्षेत्र में पौधारोपण अभियान की शुरूआत यीडा के सेक्टर-32 से की गई। इस दौरान जेवर विधानसभा क्षेत्र के विधायक धीरेन्द्र सिंह तथा यीडा के CEO राकेश कुमार सिंह ने अपने हाथों से पौधे लगाकर पौधारोपण अभियान की विधिवत शुरूआत की।

यीडा के अधिकारी तथा कर्मचारी रहे मौजूद

उत्तर प्रदेश सरकार ने इस वर्ष थीम 'एक पेड माँ के नाम 2.0' पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ रखी गयी है। पौधारोपण कार्यक्रम के दौरान यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यीडा) के अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी नगेन्द्र प्रताप सिंह, अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी कपिल सिंह, विशेष कार्याधिकारी शैलेन्द्र कुमार भाटिया व शैलेन्द्र कुमार सिंह, वरिष्ठ स्टाफ आफिसर नंदकिशोर, महाप्रबंधक (परियोजना) राजेन्द्र सिंह भाटी, महाप्रबंधक (वित्त) अशोक कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक (वित्त) आलोक कुमार राय एवं उद्यान निदेशक आनंद मोहन सिंह एवं प्राधिकरण के समस्त अधिकारी, कर्मचारी एवं ग्रामवासी उपस्थित रहे। यमुना प्राधिकरण द्वारा एक दिन में 56660 पौधे लगाए गए। जिनमें नीम, जामुन, पीपल, पिलखन, गुलमोहर, चकरेसिया, बरगद, आम, चम्मा, अशोक, टिकोमा व चाँदनी आदि के पौधे लगाए गए हैं। ❑

भटकाव में भाजपा

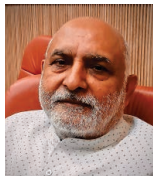

विजय शंकर पंकज
9415020057

उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी भटकाव की स्थिति में चल रही है। चार दशकों में भाजपा का संगठनात्मक ढांचा सबसे कमजोर और अशक्त पड़ा है। राज्य में मजबूत सरकार चल रही है लेकिन भाजपा के जन प्रतिनिधि ' विधायक ' सबसे कमजोर है। सरकार पर अफसरशाही हावी है और मुख्यमंत्री अपनी कठोर प्रशासनिक छवि के गुरूर में आत्म मुग्ध है। सरकार से संगठन तक कार्यकर्ता उपेक्षित और असहाय की स्थिति में है। दोनों

स्तर पर बाहरी कारोबारियों, ठेकदारों और पूंजीपतियों का कब्जा है। मुख्यमंत्री की ईमानदार छवि पर कुछ अधिकारियों का कब्जा है। संगठन कमजोर और असहाय है तो सरकार पर अफसरशाही की तानाशाही है।

भाजपा का पूरा संगठन दो नामों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के सहारे चल रहा है। इसमें सब कुछ अच्छा ही नहीं होता। वर्ष 2024 का लोकसभा चुनाव परिणाम इसका उदाहरण है। केवल उत्तर प्रदेश की अनदेखी ने मोदी के आभा मंडल को धूमिल कर दिया। इस चुनाव में भाजपा के राष्ट्रीय और प्रदेश अध्यक्षों के बूथ पर भाजपा प्रत्याशी हर गए। यह मात्र एक बानगी थी। 6 अप्रैल 1980 को स्थापना से लेकर अब तक जितने भी अध्यक्ष हुए, इतना कमजोर नहीं हुआ। उत्तर प्रदेश में पहले भाजपा अध्यक्ष माधव प्रसाद त्रिपाठी रहे और उसके बाद कल्याण सिंह रहे। कल्याण के अध्यक्ष बनते ही भाजपा ने पहली बार पिछड़े वर्ग और हिंदुत्व की दोहरी राजनीति शुरू की। जनसंघ के समय से ही पिछड़े वर्ग के सशक्त यादव, कुरमी और लोध साथ रहे। 1989 में विश्व नाथ प्रताप सिंह की पिछड़ा, दलित और मुस्लिम राजनीति के गठबंधन ने भाजपा के चुनावी समीकरण की गड़बड़ा दिया। मुलायम सिंह यादव के मुख्यमंत्री बनने के बाद यादव उनके साथ एकजुट हो गया तो कुर्मी वर्ग क्षेत्रवार खेमों में बंट गया। लोध बिरादरी कल्याण के कारण भाजपा के साथ बनी रही। राम मंदिर आंदोलन ने भाजपा को राजनीतिक संजीवनी दी। पहली बार हिंदुत्व आंदोलन के बल पर यूपी में भाजपा की सरकार बनी और कल्याण सिंह मुख्यमंत्री बने। भाजपा सरकार और संगठन प्रदेश में अपनी जड़े जमा पाते की अयोध्या में विवादित ढांचा गिरने से सरकार गिर गई। प्रदेश में राजनीतिक अस्थिरता का दौर शुरू हुआ तो भाजपा में भी खींचतान शुरू हो गई।

वर्ष 2017 में भाजपा की सरकार बनने के बाद सरकार और संगठन में टकराव शुरू हो गया। संगठन पर महामंत्री संगठन सुनील बंसल का वर्चस्व रहा। तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह डमी की ही तरह काम करते रहे। मंत्री परिषद में बने रहने के लिए स्वतंत्र देव मुख्यमंत्री के करीबी बनने की फिराक में थे तो महामंत्री संगठन सुनील बंसल सरकार पर भी दबाव बनाने के प्रयास में थे। इसको लेकर सरकार संगठन में तनाव की स्थिति बनी रही। केंद्र के हस्तक्षेप के भूपेंद्र चौधरी को अध्यक्ष बनाया गया तो सुनील बंसल को दिल्ली भेज दिया गया। महामंत्री संगठन अपरिचित चेहरे धर्मपाल को लाया गया। पिछले तीन वर्षों में प्रदेश भाजपा कागजों में ही सिमट कर रह गई है। संगठन की कमजोरी और कार्यकर्ताओं की उपेक्षा का परिणाम भाजपा को 2024 के लोकसभा चुनाव में भुगतना पड़ा और पार्टी 36 सीटों पर ही सिमट कर रह गई। इसके बाद से अध्यक्ष बदलने की चर्चा शुरू हुई। तमाम राज्यों में भाजपा के संगठनात्मक चुनाव हुए परंतु यूपी के जिला अध्यक्षों के ही चुनाव में विवाद चलता रहा। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव भी लटका पड़ा है जबकि जे पी नड्डा देश के स्वास्थ्य मंत्री भी है। उत्तर प्रदेश भाजपा की इस कमजोरी में केंद्र का भी अहम रोल है। भाजपा की संगठनात्मक स्थिति को भी केंद्रीयकृत की दिया गया है। ❑

प्रतिभा, मेधावियों का सम्मान

हल्दीघाटी-दिवेरघाटी विजयोत्सव, सामाजिक सरोकार एवं सम्मान समारोह

वीरेन्द्र सिंह

उत्तर प्रदेश क्षत्रिय लोक सेवक परिवार महासमिति ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले विभूतियों को सम्मानित किया। लखनऊ में आयोजित हल्दीघाटी विजयोत्सव, सामाजिक सरोकार समारोह में विशिष्ट व्यक्तियों के अलावा मेधावी छात्र-छात्राओं को भी सम्मानित किया गया।

इस समारोह में सचिव गोरखपुर विकास प्राधिकरण एवं पीसीएस संघ के अध्यक्ष पुष्पराज सिंह, वरिष्ठ पत्रकार एवं यूपीडब्ल्यूजेयू के प्रदेश अध्यक्ष टीबी सिंह को सम्मानित किया गया। अन्य सम्मानित होने वालों में लब्धप्रतिष्ठ भूगर्भवेत्ता प्रो राना प्रताप बहादुर सिंह, भातखंडे संस्कृत विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रो.(डा.) मांडवी सिंह, पद्मश्री और किसान उद्यमी कंवर पाल सिंह चौहान, केजीएमयू सर्जरी विभाग के प्रोफेसर डा. कृष्णकांत सिंह और एनेस्थियोलॉजी विभाग की प्रोफेसर डा. विनीता सिंह, गृह विभाग के पूर्व गृह सचिव आईएएस डा. अनिल कुमार सिंह, गुलाब देवी महिला पीजी कालेज की पूर्व प्रधानाचार्या प्रो. (डा.) नीरजा सिंह, सीनियर कंसल्टेंट गाइनोकोलाजी डा. रंजना सिंह, एसजीपीजीआई की डायटिशियन डा. निरुपमा सिंह, निदेशक संस्कृति एवं सूचना विभाग आईएएस विशाल सिंह, अपर महाधिवक्ता विनोद शाही, उत्तर प्रदेश सरकार के चीफ स्टैंडिंग काउंसिल प्रशांत सिंह अटल, उदय प्रताप स्वायत्तशासी कालेज के उद्यान विभाग के प्रोफेसर धर्मेंद्र कुमार सिंह, एसकेडी हास्पिटल के क्लिनिकल डायरेक्टर एवं सीनियर कंसल्टेंट डा. आशीष सिंह, जेवरा इंडिया बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक स्वर्ण सिंह, डा. राम मनोहर लोहिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के कंप्यूटर आपरेटर अजय कुमार सिंह और सहायक राम सिंह, बास्केटबाल खिलाड़ी कुशल सिंह, शिक्षाविद् एवं नेता स्व. सतीश कुमार सिंह, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व निदेशक डा. अशोक कुमार सिंह, प्रगतिशील किसान पद्मश्री चंद्रशेखर सिंह, निदेशक कोषागार विजय बहादुर सिंह, मनीषी लेखक आचार्य डा. भक्तिपुत्र रोहतम, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रोफेसर राकेश सिंह, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीतापुर की प्राचार्य डा. सीमा सिंह, राज्य सूचना

आयुक्त वीरेंद्र वत्स, सुप्रसिद्ध साहित्यकार अमित कुमार मल्ल और जी टीवी के विशेष संवाददाता विशाल सिंह रघुवंशी को अंगवस्त्रम और मोमेटो देकर सम्मानित किया गया।

उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश क्षत्रिय लोक सेवक परिवार महासमिति का गठन सरकारी, अर्धसरकारी एवं स्वायत्तशासी संस्थाओं में किसी भी पद पर कार्यरत या सेवानिवृत्त सभी लोक सेवकों को एक मंच पर लाकर पूरे समाज की शिक्षा, रोजगार, साहित्य, संगीत, कला, कृषि, विज्ञान, पर्यावरण आदि क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से किया गया है। महासमिति के अध्यक्ष और संस्थापक बाबा हरदेव सिंह हैं। अपनी विशिष्ट कार्य शैली की बदौलत इन्होंने प्रशासनिक सेवा में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। महासमिति के बारे में उन्होंने बताया कि वर्ष में दो बड़े कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इसमें शिक्षा, खेलकूद और कला के क्षेत्र में खास मुकाम हासिल करने वाले सजातीय छात्र-छात्राओं, स्त्री-पुरुषों को सम्मानित/पुरस्कृत किया जाता है। इसी प्रकार अन्य विद्याओं में ख्यातनाम महिलाओं, पुरुषों को भी सम्मानित/पुरस्कृत किया जाता है।

हल्दीघाटी-दिवेरघाटी विजयोत्सव में अध्यक्ष बाबा हरदेव सिंह ने महाराणा प्रताप के प्रताप के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि हल्दीघाटी के बारे में तो लोग जानते हैं लेकिन दिवेरघाटी के बारे में कम लोगों को पता होगा कि इसी युद्ध में राणा प्रताप को महाराणा की उपाधि दी गई। हल्दीघाटी में तो महाराणा प्रताप के पास 3000 सैनिक थे, जबकि मुगल सैनिकों की संख्या 5000 थी। बहादुरी के साथ छः घंटे तक लड़ने के बाद राणा प्रताप को पीछे हटना पड़ा था। वर्ष 1582 में उदयपुर अजमेर के बीच दिवेरघाटी में 50 हजार मुगल सैनिकों से 10 हजार सैनिक लेकर राणा प्रताप ने युद्ध किया। इस युद्ध में विजय मिली और मुगलों को मेवाड़ के बाहर खदेड़ दिया गया।

समारोह में परिवहन मंत्री दया शंकर सिंह, स्वास्थ राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) मयंकेश्वर शरण सिंह, महासमिति के संरक्षक, शिक्षाविद् एसकेडी सिंह, लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार पद्मश्री डा. विद्याविंदु सिंह, बाल संरक्षण आयोग की पूर्व अध्यक्ष जूही सिंह सहित अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।❑

हरी हुई पीली नदी

वीरेन्द्र सिंह

जौनपुर की पीली नदी का जिला प्रशासन और जनप्रतिनिधियों के सहयोग से पुनरूद्धार हो गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने एक लेख 'आइए करें वसुधा का श्रृंगार' में एक जनपद एक नदी अभियान के अंतर्गत पीली नदी के पुनरूद्धार की सराहना की है। भगीरथ प्रयासों के बाद पीली नदी को जल की संजीवनी मिली है। दरअसल, दुरूह कार्य को साध्य करने के प्रयास को ही भगीरथ प्रयास कहते हैं। इसलिए कि भगीरथ ने घोर तपस्या करके गंगा जी का अवतरण पृथ्वी पर किया था। वैसे भी, गोस्वामी जी ने कहा है-

जल बिन नीर नदी बिन वारि,
तैसेहि नाथ पुरूष बिन नारि।।

अर्थात जल के बिना नारी का कोई अस्तित्व नहीं है, उसी तरह से जैसे पुरूष के बिना नारी का कोई अस्तित्व नहीं है।

जौनपुर जनपद के जिलाधिकारी डॉ. दिनेश चंद्र के अथक प्रयासों से आज पीली नदी में जल का प्रवाह हो रहा है। पशु-पक्षी, बच्चे जलक्रीडा कर रहे हैं। चारो ओर पौधा रोपण करने से पूरा परिवेश हराभरा हो गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रेरणा से तथा मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश व अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन और सतत पर्यवेक्षण के क्रम में नदियों के संरक्षण की योजना के अंतर्गत पीली नदी पुनरूद्धार का कार्य जिला प्रशासन द्वारा जन सहभागिता के माध्यम से 11 जून 2025 से दो जुलाई 2025 तक मिशन मोड में चलाया गया।

इतिहास गवाह है कि प्राचीन सभ्यताएं नदियों के किनारे ही विकसित हुई हैं। जनपद के सर्वांगीर्ण विकास में नदियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। जिले में कुल पांच प्रमुख नदियां प्रवाहित होती हैं। पीली नदी गोमती नदी की एक प्रमुख सहायक नदी है। इस नदी की कुल लंबाई 61.200 किलोमीटर है। जिसमें जौनपुर में इसकी कुल लंबाई 43 किलोमीटर है। यह नदी जिले के बदलापुर विधानसभा के देहुणा गांव, भूला, दयालापुर, खनपुर, लक्ष्मी पट्टी, आहोपुर, सिरकिना, कवेली, बहुर, करनपुर, रामपुर, फत्तोपुर,

पत्र संख्या-191/पीएसओ-सीएम/2025

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

लोक भवन,
लखनऊ - 226001

दिनांक : 16 JUL 2025

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि जनपद जौनपुर के बदलापुर विधानसभा क्षेत्र में पीली नदी के पुनरुद्धार का कार्य किया जा रहा है।

भारतीय संस्कृति में नदियों को जीवनदायिनी और पवित्र माना गया है। हमारे सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध करने में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। नदियां हमारी आस्था की भी पोषक हैं। वर्तमान समय में नदियों में प्रदूषण बढ़ा है और उनकी निर्मलता व अविरलता भी प्रभावित हुई है। इसका प्रतिकूल प्रभाव मानव जीवन पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

जल को जीवन का प्रतिरूप माना जाता है। प्राणिमात्र के कल्याण के लिए जल का संरक्षण आवश्यक है। आदरणीय प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में उत्तर प्रदेश सरकार विलुप्त होती नदियों के पुनर्जीवन से लेकर प्राकृतिक जलस्रोतों के संरक्षण हेतु प्रतिबद्ध है। व्यापक जनसहभागिता और सहयोग से इस संकल्प को गति मिलती है। इसके दृष्टिगत जनपद जौनपुर में पीली नदी के पुनरुद्धार हेतु किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं। मुझे विश्वास है कि यह अभियान अपने उत्कृष्ट लक्ष्य को प्राप्त करेगा।

पीली नदी पुनरुद्धार अभियान की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

दूरभाष : 0522-2289017 / 2289010 / 2289167 फैक्स - 0522-2239234 ईमेल - cmup@nic.in

मरगुपुर, दुगौलीखुर्द, उदपुरघेलवा आदि गांवों से निकल कर जौनपुर के ही अंतर्गत बेलवा गांव में प्रमुख नदी गोमती में समाहित हो जाती है।

जिलाधिकारी ने बताया कि जल संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण के इस पुनीत कार्य में विधायक बदलापुर रमेश चंद्र मिश्र ने जिला प्रशासन का मनोबल बढ़ाया और हर तरह से सहयोग किया। पीली नदी के पुनरुद्धार के साथ-साथ 51 हजार वृक्षों के पौधारोपण के कार्य को करा लिया गया है। पीली नदी के किनारे देवरिया स्थित ग्राम में धार्मिक आस्था के केन्द्र प्राचीन शिव मंदिर के जीर्णोद्धार का कार्य भी जिला प्रशासन द्वारा मिशन मोड में कराया जा रहा है।

पांच लाख की आबादी वाले बदलापुर तहसील क्षेत्र के मध्य से गुजरने वाली पीली नदी वर्षों से अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही थी। जिला प्रशासन के अथक प्रयास से मात्र 22 दिन के अंदर 25 किलोमीटर तक खुदाई करके जल उपलब्ध करा लिया गया। साथ ही 51 हजार पौधों का रोपण कर पर्यावरण संरक्षण का पावन कार्य भी संपन्न किया गया। सुल्तानपुर-प्रतापगढ़ जनपद का मुरैनी ताल पीली नदी का उद्गम स्थल है। इसकी कुल लंबाई करीब 70 किलोमीटर है जिसका 35 किलोमीटर भाग जौनपुर जनपद में आता है। इस नदी के पुनरुद्धार से सैकड़ों गांव के ग्रामीणों के साथ-साथ पशु-पक्षियों को भी जल उपलब्ध हो सकेगा।

बताते चलें कि इस नदी में वर्ष 2013-14 में 13 चेक डैम बनाकर नदी को संजीवनी दी गई थी किंतु जीवनदायिनी पीली नदी का अस्तित्व खतरे में पड़ गया और वह सूख गई। ❑

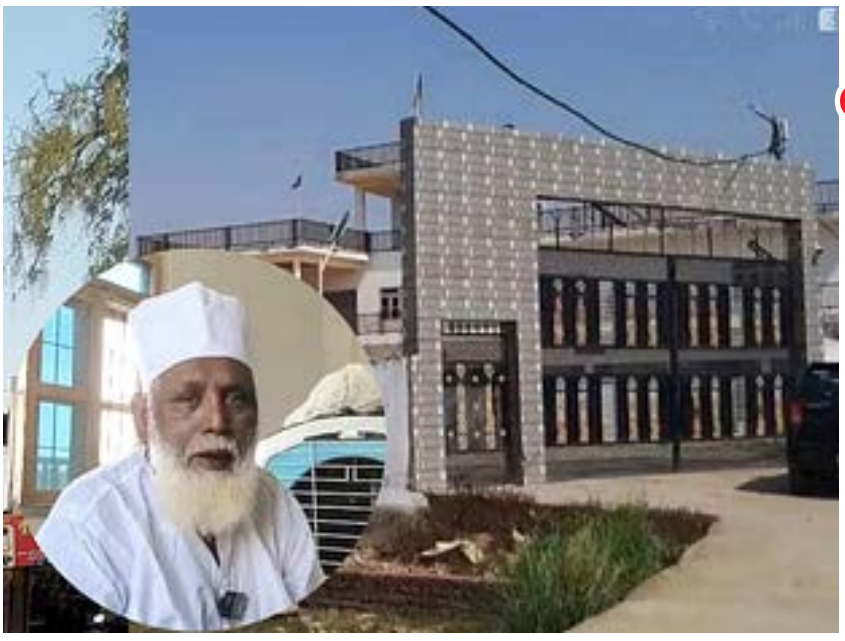

धर्मांतरण का खेल खत्म

टी.बी. सिंह

पिछले 15 सालों से चल रहा धर्मांतरण का खेल जलालुद्दीन उर्फ छांगुर बाबा एण्ड कंपनी की गिरफ्तारी के साथ भले ही खत्म होता नजर आ रहा है। लेकिन जो तथ्य और खुलासा सामने आया है, वह बेहद चौंकाने वाला है।

इस दौरान छांगुर ने चार हजार से भी अधिक हिंदुओं का धर्मांतरण ही नहीं कराया बल्कि लव जिहाद व देश विरोधी गतिविधियों को भी अंजाम देने में तल्लीन था। उसका गैंग खासतौर पर हिंदु और सिक्ख लड़कियों को निशाना बनाता था। इसके तहत उसके रैकेट ने 1500 से अधिक हिंदु लड़कियों का धर्मांतरण कराया था। अब बलरामपुर जिले में अवैध धर्मांतरण के एक बड़े नेटवर्क का खुलासा करते हुए यूपी एटीएस ने मुख्य आरोपी छांगुर बाबा के साथ ही उसके गुर्गों की गिरफ्तारी कर उसके नेटवर्क का नित नया खुलासा कर रही है। सूत्रों के अनुसार यह गिरफ्तारी यूपी में नेपाल के सीमावर्ती जिलों में धर्मांतरण के अवैध नेटवर्क से जुड़ी है। इसके पीछे अरबों की संपत्ति और विदेशी फंडिंग जैसे गंभीर आरोपों ने पूरे प्रदेश में हलचल मचा दी है।

इस पाखंडी और ढोंगी बाबा का नेटवर्क ने केवल उत्तर प्रदेश तक ही सीमित था बल्कि इसकी जड़े मुंबई और खाड़ी देशों खासकर दुबई तक फैली हुई थी। जांच एजेंसी ने यह दावा किया कि छांगुर बाबा ने 40 से 50 बार इस्लामिक देशों की यात्रा की और विदेशी फंडिंग के जरिए अपने रैकेट को संचालित करने में मसगूल था। इस नेटवर्क को सौ करोड़ से भी अधिक की विदेशी फंडिंग प्राप्त हुई। जिसका इस्तेमाल धर्मांतरण के लिए किया गया। उसकी गैंग ने 40 से अधिक बैंक खातों के जरिए इस राशि का लेनदेन किया गया।

गौरतलब है कि छांगुर बाबा का नाम तब सामने आया जब बलरामपुर समेत नेपाल के सीमावर्ती इलाकों में हिंदु संगठनों के प्रयास से कुछ लोगों ने घर वापसी की। इसके बाद एसटीएफ ने बलरामपुर के उतरौला में झापेमारी कर जमालुद्दीन उर्फ छांगुर बाबा उसकी सहयोगी नीतू उर्फ नसरीन उसके पति नवीन रेहरा आदि अन्य लोगों को गिरफ्तार किया। छांगुर बाबा पर पहले से ही 50 हजार रूपये का इनाम घोषित था उसका असली नाम जलालुद्दीन शाह है और वह बलरामपुर के रेहरा माफी गांव का रहने वाला है।

कभी बेचता था साईकिल पर अंगूठी

धर्मांतरण के धंधे से अकूत संपत्ति और

आलीशान बंगले में रहने वाला छांगुर 2010 के पहले तक वह साईकिल पर नग, अंगूठी और टोने-टोटके का सामान बेचा करता था। मुंबई में वह यह सब एक दरगाह के बाहर बेचकर अपना जीवन यापन करता था। लेकिन देखते ही देखते वह अवैध धर्मांतरण के अंतर्राष्ट्रीय सिंडिकेट का हिस्सा बन गया। उसके बाद उसने अपना गिरोह खड़ा कर विदेशी फंडिंग के जरिए करोड़ों की संपत्ति अर्जित कर ली। इन पैसों से उसने यूपी के अलावा महाराष्ट्र और राजस्थान में शोरूम, लक्जरी गाड़ियां और बंगले आदि खरीदे। अब वह महंगी गाड़ियों के काफिले के साथ चलता है।

कैसे फूटा छांगुर का भांडा

छांगुर बाबा ने खुद को सूफी संत 'हजरत बाबा जलालुद्दीन' के रूप में प्रचारित किया और 'शिजर-ए-तैय्यबा' नाम की किताब के जरिए इस्लाम धर्म का प्रचार करने के साथ ही हिंदुओं के खिलाफ प्रचार करता था। कुछ दिनों पहले लखनऊ की गुंजा गुप्ता का मामला सामने आया था जिसे छांगुर बाबा के गिरोह के सदस्य अबू अंसारी ने अमित के छद्म नाम से प्रेमजाल में फंसाया और बाद में मुस्लिम धर्म अपनाने के लिए मजबूर किया। जब हिंदू संगठनों की पहल पर कुछ लोगों ने घर वापसी की तो छांगुर बाबा का भांडा फूट गया।

एटीएस की पूछताछ में यह भी खुलासा हुआ कि छांगुर बाबा गरीब, मजदूर और मजबूर लोगों को लालच देकर इस्लाम धर्म अपनाने के लिए झांसे में लेता था। लेकिन इन सब के बावजूद भी कोई मना करता तो उसे फर्जी केस में फंसवा कर पुलिस और कोर्ट के जरिए प्रताड़ित करवाता था।

छांगुर बाबा के गिरोह के सक्रिय सदस्य नीतू उर्फ नसरीन और उसके पति नवीन रेहरा थे। दोनों को ठांगुर बाबा ने अंगूठी देकर अपना मुरीद बनाया था। फिर लंबी बातचीत और संपर्क के चलते छांगुर बाबा ने दोनों का धर्म परिवर्तन करवाने के लिए माइंड वॉश करना शुरू कर दिया था। कई सालों बाद 2015 में छांगुर बाबा की मेहनत तब रंग लाई जब इस दम्पत्ति ने हिंदु धर्म छोड़कर मुस्लिम धर्म अपना लिया। इस तरह नीतू, नसरीन और उसका पति नवीन जमालुद्दीन बन गये। जबकि बेटी शमाले से सबीहा बन गई। इसके बाद तो तीनों ने मिलकर धर्मांतरण के रैकेट को दूनी रफ्तार से आगे बढ़ाना शुरू किया। नीतू तो उसकी गर्लफ्रेंड बन गई थी और यह सिंधी परिवार 2020 में मुंबई छोड़कर उतरौला के मधपुर में आकर छांगुर बाबा के साथ रहने लगा। नीतू व नवीन छांगुर बाबा की परछाईं की तरह उसके साथ होते थे। नीतू के नाम से ही छांगुर ने जमीन को खरीदकर शानदार कोठी बनवाई थी जिसे अब प्रशासन ने बुल्डोजर चलवा कर जमींदोज करवा दिया।

इस परिवार का धर्मांतरण छांगुर बाबा ने दुबई में कराया था। तीनों के धर्म परिवर्तन के बावजूद उनका पासपोर्ट, आधार कार्ड, पैन कार्ड और बैंक खाते हिंदू नाम से ही हैं। बेटी का धर्मांतरण तो नाबालिक रहते हुआ है जबकि नाबालिग का अवैध धर्मांतरण कराने पर 20 साल से लेकर उम्रकैद तक की सजा का प्रावधान है।

और भी खतरनाक था छांगुर का मंसूबा

छांगुर बाबा बलरामपुर व आसपास के जिलों की धार्मिक तस्वीर बदलने में लगा हुआ था। वह गैर मुस्लिमों को इस्लाम अपनाने के लिए हर तरह का लालच देता था। हिंदु धर्म के प्रति नफरत फैलाकर इस्लामी राष्ट्र बनाने तक का उसका नापाक मंसूबा था। इसलिए उसकी मंसा बलरामपुर में इस्लामी दावा केन्द्र और मदरसा चलाने का था। वह मुस्लिमों की संख्या बढ़ाकर देश की जन सांख्यिकी को प्रभावित करने में जुटा हुआ था।

छांगुर के एक और लिंक का खुलासा

धर्मांतरण के आरोपी छांगुर के एक और लिक का खुलासा होने के साथ बलरामपुर में जांच के बाद उसके जिहाद के जांच की आंच श्रावस्ती के इकौना तक जा पहुंची है। श्रावस्ती में भी मिले छांगुर के कनेक्शन का संज्ञान लेकर पुलिस व प्रशासनिक टीम ने इकौना देहात के रहमानपुरवा स्थित जामिया नूरिया फातिमा लिल बनात संस्था मदरसा तक जा पहुंची। एडीएम के नेतृत्व में पहुंची टीम ने मदरसा सील करके वहां रखे अभिलेख अपने साथ ले गई।

यह मदरसा गुजरात के बड़ोदरा जिले के धोबोई निवासी सैय्यद सिराजुद्दीन हाशमी ने 2019 में बनवाया था। उसकी ससुराल बलरामपुर के उतरौला में है। वहां आने-जाने के दौरान ही वह छांगुर के संपर्क में आया था। अवैध धर्मांतरण के लिए उसने नेपाल से सटे संवेदनशील सात जिलों में सक्रिय कुछ ईसाई मिशनरियों से भी साठ-गांठ कर ली थी। ❑

पूर्व विशेष सचिव राज कुमार सिंह के वैव

ाहिक जीवन का ''स्वर्ण जयन्ती समारोह''

तोप हो मुकाबिल तो अखबार निकालिए

शिव शंकर गोस्वामी
9450420707

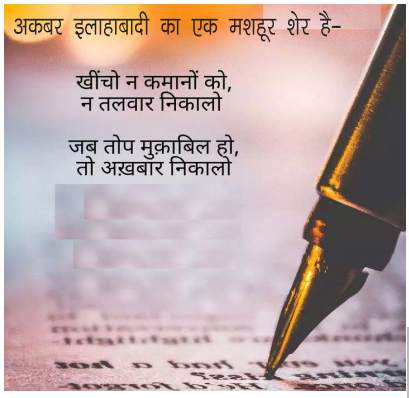

लेकिन आज इस शेर का कोई मतलब रह नहीं रह गया है। कारण कि ना तो अखबारों में कोई तेवर रह गया है और ना ही ईमानदारी से अखबार नवीसी करने वाले लोग। अब अखबार भी पैसा कमाने का साधन बन गया है। पैसा कमाने के लिए एक एक व्यक्ति दस-दस अखबार या इससे भी अधिक अखबार निकाल रहे हैं। पुराने समय में राजा राममोहन राय' वादा भाई नौकरी ईश्वर चन्द्र विद्यासागर गणेश शंकर विद्यार्थी महात्मा गांधी गोपाल गणेश आगरकर बाबू शिव प्रसाद गुप्त महात्मा शिविर कुमार घोष तुषार कांति घोस मुंशी प्रेम चन्द विद्या भास्कर जैसे सैकड़ों महान पत्रकार हुए हैं जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से सामाजिक एवं राजैनतिक सुधारों के लिए समय-समय पर आवाज उठाने का काम किया है। आज भी ऐसे पत्रकार है जो अपनी निष्पक्ष लेखनी के लिए जाने जाते हैं। प्रेस या अखबार के लिए फोर्थ स्टेट या चौथा स्तम्भ शब्द का प्रयोग किया गया है। इस शब्द का प्रयोग 14 फरवरी 1771 को एडम बर्क ने ब्रिटेन की संसद हाउस आफ कामन में उस समय किया था जब प्रेस की शुरूआत करने के लिए एक विधेयक पर चर्चा हो रही थी। एडम बर्क ने उस समय कहा था कि दुनिया में चार तरह की सत्ता होतीं हैं। पहली सत्ता किंगडम या क्वीन या राजशाही या मोनार्की की होती है तो दूसरी सत्ता तानाशाही की होती है। तीसरी सत्ता उन्होंने जनता की अर्थात डेमोक्रेसी या लोकतंत्र को कहा था। और अंत में उन्होंने प्रेस की तरफ उगली उठाकर कहा कि चौथी सत्ता यह है जो सब पर नजर रखती है। चौम्बर डिक्शनरी में इसका विस्तार से वर्णन है। इस प्रकार प्रेस का ज्ञात इतिहास करीब 7-8 सौ साल पुराना है। आज आस्ट्रिया का एक ऐसा अखबार है जो 1703 से लगातार प्रकाशित हो रहा है और जिसका नाम है "विचार जितुंग।" भारत में पहला समाचार पत्र 1780 में कलकत्ता से हिक्की गजट नाम से प्रकाशित हुआ। यह एक साप्ताहिक समाचार पत्र था। बाद में 1826 की 30 मई को मुंशी जुगल किशोर ने कलकत्ता से ही उदन्त मार्तण्ड नाम से हिन्दी समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू किया। उसी के सम्मान में आज भी हर साल 30 मई को हिन्दी पत्रकारिता दिवस मनाया जाता है।

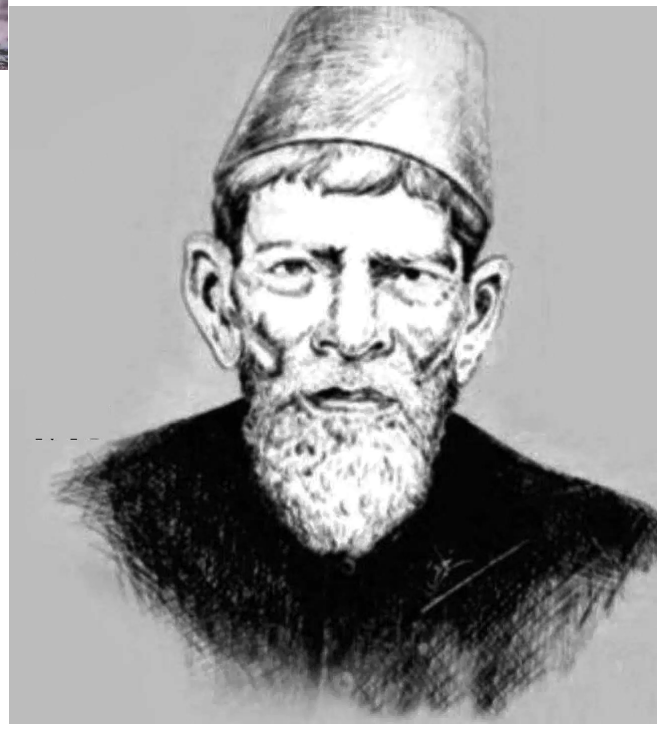

भारत में जब प्रेस ताकत की बढने लगीं तो इस पर अंकुश लगाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने 1878 में बर्नाकुलर प्रेस एक्ट लागू किया जो बहुत सख्त था। दूसरा भारतीय अधिनियम 1810 में बना जो आज तक चला आ रहा है। इसी के तहत समाचार पत्रों के पंजीकरण के रजिस्ट्रार कार्यालय की स्थापना की गई और आजादी के बाद प्रेस इनफार्मेशन ब्यूरो एवं डीएवीपी जैसी संस्थापक की सराहना की गयी। इतना कुछ होने के बावजूद अखबारों में काम करने वाले प्रेस कर्मचारियों के लिए किसी प्रकार की सेवा शर्तों की तरफ कभी किसी ने ध्यान नही दिया और जब भी अवसर मिला प्रेस को चौथा स्तम्भ बताकर घुट्टी पिलाई जाती रही। भारत में आज एक लाख 45 हजार से अधिक पंजीकृत समाचार पत्र है किन्तु बहुत कम ऐसे है जहाँ की सेवा शर्तें ठीक-ठाक है। पत्रकार संगठनों के संघर्षों के चलते पालेकर अवार्ड बगावत आयोग तक मणिसाना आयोग जैसे कुछ वेतन आयोगों ने पत्रकारों एवं गैर पत्रकारों के लिए वेतन तथा सेवा शर्तें के बारे में महत्वपूर्ण सिफारिशें की किन्तु राज्य सरकार की ढिलाई के चलते अंत में बचा ढाक के वही तीन पात। रिटायरमेंट के बाद तो पत्रकारों की और भी दुर्दशा होती हैं। ना कही कोई पेंशन ना ग्रैच्युयटी और ना ही जीविकोपार्जन के लिए कोई अन्य आर्थिक संसाधन। कुछ राज्य सरकारों द्वारा पत्रकारों को 60 साल की उम्र पार करने पर पेंशन देने का प्रावधान है लेकिन 8 लाख करोड़ से अधिक बजट वाले उत्तर प्रदेश में पत्रकारों के लिए कोई पेंशन नहीं है। देश में सबसे ज्यादा दुर्दशा अगर

किसी राज्य के पत्रकारों की है तो वह है उत्तर प्रदेश की। ऐसा नहीं है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पत्रकारों के लिए कुछ करना नहीं चाहते हैं किन्तु कुछ सलाहकार, विश्वासपात्र और सचिवगण यह करना नहीं चाहते हैं कि मूख्यमंत्री पत्रकारों की पेंशन के लिए कुछ करें जबकि उत्तराखण्ड, बिहार राजस्थान मध्यप्रदेश तथा अन्य दूसरे राज्यों में पत्रकारों को पेंशन दी जा रहीं हैं। इसका एक कारण यह भी है कि यूपी में पत्रकारों का कोई सशक्त संगठन नहीं है, जो हैं भी, वह अपने निजी स्वार्थों को साधने में लगा है।

राजस्थान के वरिष्ठ पत्रकारों को सम्मानः

राजस्थान सरकार ने प्रदेश के अनुभवी पत्रकारों के सम्मान और सहयोग के लिए एक नई योजना की शुरुआत की है। 'राजस्थान वरिष्ठ अधिस्वीकृत पत्रकार सम्मान योजना' के तहत 18 पात्र पत्रकारों को आर्थिक सहायता प्रदान करने की स्वीकृति दी गई है। मुख्यमंत्री ने सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की अनुशंसा के आधार पर इस योजना को मंजूरी दी।

इस योजना के तहत, 60 वर्ष से अधिक आयु के पात्र वरिष्ठ पत्रकारों को हर माह रू. 15,000 की सम्मान निधि दी जाएगी। वहीं, दो दिवंगत वरिष्ठ पत्रकारों की पत्नियों को उनके आर्थिक सहयोग के लिए आधी राशि यानी रू. 7,500 प्रति माह प्रदान की जाएगी।

कब शुरू होगी यूपी में पत्रकारों को पेंशन :

योगी जी ने खुद दिलचस्पी लेकर पेंशन के लिए कदम उठाया है। अब उम्मीद है कि पत्रकारों को जल्द पेंशन मिल जाएगी। सूचना विभाग ने इस पर काम भी शुरू कर दिया था लेकिन कुछ सलाहकार, विश्वासपात्र और सचिवगण यह नहीं चाहते हैं कि मूख्यमंत्री पत्रकारों की पेंशन के लिए कुछ करें।

अपर निदेशक सूचना अंशुमान राम त्रिपाठी ने शासन के पत्र संख्या-699/उन्नीस-1-200 123/2012 टीसी दिनांक 27 जुलाई 2022 का संदर्भ ग्रहण करने के लिए समस्त उपनिदेशक, सहायक निदेशक, सूचना अधिकारी, अतिरिक्त जिला सूचना अधिकारी, प्रभारी जिला सूचना अधिकारी को उत्तराखण्ड शासन की भांति उत्तर प्रदेश के 60 वर्ष या उससे अधिक वृद्ध पत्रकारों को पेंशन दिए जाने की अपेक्षा का पत्र भेजा है।

उक्त के सम्बन्ध में अवगत कराना है कि जनपद से संबंधित 60 वर्ष या उससे अधिक वृद्ध पत्रकारों का विवरण पत्र प्राप्त के एक सप्ताह के अन्दर यथाशीघ्र उपलब्ध कराने का कष्ट करें ताकि प्रकरण पर अग्रिम आवश्यक की जा सकें। तीन साल बीत गये। पत्रकार पेंशन की फाइल पर योगी जी के कुछ सलाहकार, विश्वासपात्र और सचिवगण कुंडली मारकर बैठ गये है। वे नहीं चाहते हैं कि मुख्यमंत्री पत्रकारों की पेंशन के लिए कुछ करें।

इस सम्बन्ध में प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री, सूचना और गृह संजय प्रसाद, मुख्यमंत्री के सूचना सलाहकार मृत्युंजय कुमार, रईस सिंह, सूचना निदेशक आदि एक दर्जन से अधिक अधिकारियों से मिलकर पत्रकार पेंशन दिलाने में सहयोग करने की गुहार लगाई गयी और मुख्यमंत्री को प्रेषित पत्र भी दिया गया लेकिन सब बेकार साबित हो रहा है। मुख्यमंत्री के कुछ सलाहकार, मुख्यमंत्री के विश्वासपात्र और सचिवगण नहीं चाहते हैं कि मूख्यमंत्री पत्रकारों को पेंशन देकर अपनी छवि को और अधिक निखारें। पत्रकारों को पेंशन देने से उनकी आर्थिक स्थिति तो सुधरेगी साथ ही योगी सरकार की चौतरफा वाहवाही भी होगी।

अब यह योगी जी पर निर्भर करता है कि वे कब इस पर अपनी नजर डालेंगे और पत्रकारों को पेंशन देंगे।

पत्रकारों को पेंशन देने वाले राज्यः

जिन राज्यों में पत्रकारों पेंशन मिल रही है, वे है :-

1. मध्य प्रदेश 20 हजार रुपये
2. हरियाणा में 15 हजार रुपये
3. राजस्थान में 15 हजार रुपये
4. पंजाब में 12 हजार रुपये
5. छत्तीसगढ़ 10 हजार रुपये
6. केरल 10 हजार रुपये
7. असम 8 हजार रुपये
8. झारखण्ड 7.5 हजार रुपये
9. बिहार में 6 हजार रुपये
10. पुडुचेरी केंद्रशासित प्रदेश 6 हजार रुपये
11. तमिलनाडु 4 हजार रुपये
12. उत्तराखण्ड में 5 हजार रुपये
13. पश्चिम बंगाल 2.5 हजार रुपये
14. उत्तर प्रदेश शून्य .....

इसके अलावा ओडिशा, हिमाचल प्रदेश और तेंलगाना और अन्य राज्यों में पत्रकार कल्याण की योजनाएं और फंड का प्रावधान भी है। ❑

परिवार की यथासंभव सहायता करेगी सरकारः पाठक

परिवहन मंत्री ने दिया परिवार को मुआवजे का आश्वासन

मार्ग दुर्घटना में मृत वरिष्ठ पत्रकार दिलीप सिन्हा के परिवार की प्रदेश सरकार यथासंभव मदद करेगी। उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने एनेक्सी मीडिया सेंटर में दिलीप सिन्हा के निधन पर हुई शोक सभा में यह बात कही। शोक सभा में परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने उन्हें मुआवजा दिए जाने का एलान किया।

दिवंगत दिलीप सिन्हा की श्रद्धांजलि सभा में पत्रकारों के जन सैलाब ने साबित कर दिया कि जीवन से मृत्यु के सफर तक लोकप्रियता का असर साफ दिखाई देता है।

वरिष्ठ पत्रकार एवं उत्तर प्रदेश मान्यता प्राप्त संवाददाता समिति के वरिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य स्वर्गीय दिलीप कुमार सिन्हा जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए एनेक्सी मीडिया सेंटर में सैकड़ों पत्रकारों ने अपने साथी दिलीप भाई की बातों की यादें साझा करते हुए उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक और परिवहन मंत्री दयाशंकर भी उपस्थित रहे। परिवहन मंत्री ने दिलीप के परिजनों को विभाग की तरफ से आर्थिक सहायता का आश्वासन दिया। उप मुख्यमंत्री श्री पाठक ने कहा कि दिलीप सिन्हा पत्रकारिता का विश्वविद्यालय थे, अपने पेशे में सेवाभाव के साथ नई पीढ़ी को पत्रकारिता के सुसंस्कारों से अवगत कराते थे। पारंपरिक पत्रकारिता में पारंगत होने के साथ उनमें आधुनिक डीजिटल पत्रकारिता में दक्ष होने की ललक थी। दिवंगत दिलीप सिन्हा की खूबियां बयां करने के साथ उप मुख्यमंत्री ने कहा कि वो मुख्यमंत्री से मिलकर प्रयास करेंगे कि मुख्यमंत्री कोश से उनके परिजनों को आर्थिक सहयोग मिल सके। परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने दिलीप सिन्हा के साथ अपने दशकों पुराने संबंधों को याद किया।

उत्तर प्रदेश मान्यता प्राप्त संवाददाता समिति के अध्यक्ष हेमंत तिवारी ने दिलीप सिन्हा को संबंधों का निर्वहन करने वाले और वरिष्ठ के सुख दुख में खड़ा होने वाला पत्रकार बताया। वरिष्ठ पत्रकार अफजल अंसारी व सुरेश बहादुर सिंह ने युवा पत्रकारों को स्व दिलीप सिन्हा की तरह अपने वरिष्ठों का सम्मान करने व उनका ख्याल रखने की सलाह दी। पूर्व सूचना आयुक्त व वरिष्ठ पत्रकार वीरेंद्र सक्सेना, प्रदीप कपूर, श्याम कुमार, शिवराम पांडे, सुल्तान शाकिर हाशमी, प्रद्युम्न तिवारी, राजीव बाजपेई, विजय शंकर पंकज, पीके तिवारी, विश्वजीत बनर्जी ने स्व. दिलीप सिन्हा की सदाशयता और हमेशा दूसरों की मदद करने के जज्बे को याद किया। समिति उपाध्यक्ष अविनाश मिश्र, राघवेन्द्र त्रिपाठी, संयुक्त सचिव विजय त्रिपाठी व अनिल सैनी ने दिलीप सिन्हा को श्रद्धांजलि अर्पित की। मान्यता समिति के पूर्व सचिव सिद्धार्थ कलहंस

ने दिलीप सिन्हा की सामाजिक पूंजी को अमूल्य बताया। वरिष्ठ पत्रकार, सुरेन्द्र दुबे, प्रमोद गोस्वामी, अंबरीष कुमार, भास्कर दुबे, देवकीनंदन मिश्रा, शिवशरण सिंह, शाश्वत तिवारी, अनिल त्रिपाठी, नावेद शिकोह, सुमन गुप्ता, श्रीधर अग्निहोत्री, शशिनाथ दुबे, आसिफ रजा जाफरी, नीरज श्रीवास्तव, राजीव तिवारी बाबा, मनमोहन, अशोक सिंह राजपूत, अजय त्रिवेदी, अभिषेक रंजन ने स्व दिलीप सिन्हा को याद करते हुए उन्हें ऊर्जा से भरपूर पत्रकार बताया।

शोक सभा में पत्रकार मोहम्मद नासिर, अविनाश शुक्ल, राजेश मिश्रा, काशी यादव, त्रिनाथ शर्मा, सुल्तान शहरयार खान, विनीत मौर्य, नायला किदवई सहित सैंकड़ों पत्रकार मौजूद रहे।

इस अवसर पर स्व दिलीप सिन्हा के परिवार से उनकी पत्नी व दोनों बेटियां उपस्थित रहीं।❑

चार विशिष्ट व्यक्ति राज्यसभा के लिए मनोनीत

राष्ट्रपति ने चार विशिष्ट व्यक्तियों को राज्यसभा के लिए मनोनीत किया। केरल से सदानन्दन मास्टर, जिनकी टाँगें सीपीएम कार्यकर्ताओं ने काट दी थीं।

मुंबई से प्रख्यात वकील उज्जवल निकम जिन्होंने कसाब को फाँसी दिलाई और पिछली लोकसभा चुनाव बीजेपी के टिकट पर हारे।

इतिहासकार डा. मीनाक्षी जैन और पूर्व विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रृंगला। मीनाक्षी जैन इतिहास की जानी-मानी प्रोफेसर हैं।

भारत की सबसे कम चर्चित लेकिन प्रभावशाली इतिहासकारों में से एक, मीनाक्षी जैन, इसी श्रेणी में आती हैं। उन्होंने 2013 में राम और अयोध्या पर अपनी शानदार रचना से सुर्खियाँ बटोरीं जिसमें उन्होंने बाबरी मस्जिद की जगह राम मंदिर के निर्माण को ऐतिहासिक रूप से उचित ठहराया था!

अयोध्या पुस्तक के बाद हालांकि बीच में अन्य उल्लेखनीय पुस्तकें आईं। 2021 में वासुदेव कृष्ण और मथुरा द्वार , जिसने प्रभावी रूप से जैन को पवित्र हिंदू स्थानों में सबसे पवित्र काशी की ओर इंगित किया था।

जैन की पुस्तक, ''विश्वनाथ राइज एंड राइज : द स्टोरी आफ इटरनल काशी'', शहर की प्राचीनता और हिंदुओं के लिए इसके महत्व पर एक इतिहासकार का दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यदि इस स्थल के पूर्ण स्वामित्व का निर्णय केवल ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर किया जाना है, तो इस मुद्दे पर अंतिम निर्णय निश्चित रूप से हिंदू पक्ष का ही होगा। इसके पक्ष में उन्होंने दर्जनों ऐतिहासिक तथ्य और तर्क इत्यादि प्रस्तुत किये थे...

दूसरे- वहीं उज्ज्वल निकम जाने माने क्रिमिनल लायर हैं। देश के प्रख्यात वकील उज्ज्वल निकम भी राज्यसभा के जरिए सांसद बनने जा रहे हैं। सरकारी वकील के रूप में निकम ने 26/11 के मुंबई आतंकवादी हमलों के दौरान जिंदा पकड़े गए एकमात्र आतंकवादी अजमल कसाब की मौत की सजा के लिए सफलतापूर्वक पैरवी की थी। इस केस को लड़ने के बाद उन्हें 2009 में ़ सुरक्षा प्रदान की गई। साल 2016 में निकम को पद्मश्री से सम्मानित किया गया। यह देश का चौथा सर्वोच्च नागरिक सम्मान है. इतना ही नहीं, उनकी जीवनी पर ''आदेश - पावर आफ ला'' फिल्म भी बनी।

26/11 आतंकी हमले के अलावा, टी-सीरीज की स्थापना करने वाले गुलशन कुमार की हत्या, बीजेपी नेता प्रमोद महाजन (जिनकी उनके ही भाई ने गोली मारकर हत्या कर दी थी) की हत्या और मुंबई गैंगरेप जैसे चर्चित केस भी लड़ा है, साथ ही वह 1993 के मुंबई बम धमाके मामले में भी सरकारी वकील रहे थे।

तीसरे वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षाविद् सी. सदानंदन मास्टर जी को भी ऊपरी सदन में भेजा जा रहा है। सदानंद मास्टर संघ के एक समर्पित स्वयंसेवक हैं। वे एक सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षाविद हैं। राजनीति के गुंडों ने 30 वर्ष की आयु में मास्टर जी के दोनों पैरों को काट दिया था। सिर्फ वर्चस्व के लिए केरल में ब्ड और भाई लोगो की मिलीभगत रही है!

कम्युनिस्ट केरल में हों या बंगाल में या कहीं भी वे किसी और के विचार, आवाज को समाप्त कर देते हैं। राजनीतिक हिंसा कम्युनिस्टों का हथियार रहा है। भारत सहित दुनिया भर में इसका लम्बा इतिहास है...

चौथे मनोनीत - संसद के ऊपरी सदन जाने वाले हर्षवर्धन श्रृंगला वरिष्ठ राजनयिक रहे हैं और वह 1984 के भारतीय विदेश सेवा (फ्) के अधिकारी हैं. अपने 35 साल के लंबे करियर में हर्षवर्धन ने राजधानी नई दिल्ली समेत विदेश में कई अहम पदों पर काम किया है। अमेरिका में भारत के राजदूत (2019) रहे. इससे पहले वह बांग्लादेश में भारत के उच्चायुक्त और थाईलैंड में भारत के राजदूत के रूप में भी रहे। इसके अलावा उन्होंने फ्रांस (यूनेस्को)य अमेरिका (संयुक्त राष्ट्र, न्यूयार्क) वियतनाम (हनोई और हो ची मिन्ह सिटी) य इजराइल और दक्षिण अफ्रीका (डरबन) में भी काम किया है. हर्षवर्धन ने विदेश मंत्रालय संयुक्त सचिव (महानिदेशक) के रूप में काम किया था, जहां उनके पास बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार और मालदीव के लिए जिम्मेदारी थी. अमेरिका में राजदूत के रूप में काम करने बाद में हर्षवर्धन श्रृंगला 29 जनवरी 2020 में विदेश मंत्रालय के 33वें विदेश सचिव बनाए गए।ी

उज्जवल निकम

डॉ. मीनाक्षी जैन

हर्षवर्धन श्रृंगला

सी. सदानंदन

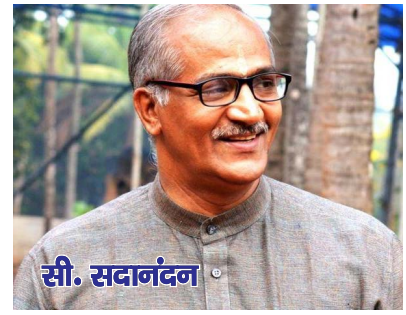

मीमंडे

दुनिया योगमय

11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर भारत सहित दुनियाभर में करोड़ों लोगों ने आसन, ध्यान और प्रणायाम का अभ्यास कर योगमय होने का संदेश दिया। कुल 191 देशों के करीब 1300 शहरों में योग हुआ। भारत में सियाचिन से लेकर कर्नाटक तक, समुद्र से लेकर पहाड़ों तक, साथ ही रेगिस्तान में भी योगासन की ताकत दिखी।

दुनिया के लिए योग शांति की राह : मोदी

PM नरेन्द्र मोदी ने दुनिया को योग दिवस पर शांति का संदेश दिया। उन्होंने कहा दुर्भाग्य से पूरी दुनिया आज किसी न किसी तनाव से गुजर रही है। अशांति-अस्थिरता बढ़ रही है। ऐसे में योग से शांति की दिशा मिलती है। योग ऐसा पॉज बटन है जिसकी पूरी मानवता को जरूरत है। यह सांस लेने, संतुलन साधने और खुद को फिर से पूर्ण करने के लिए आवश्यक है।

उन्होंने विशाखापत्तनम में समुद्र तट पर लगभग तीन लाख लोगों के साथ योगासन किया। उन्होंने इसे मानवता के लिए 2.0 की शुरुआत बताया। ताकि योग वैश्विक भागीदारी का माध्यम बन जाए। हर देश-समाज जीवनशैली व लोकनीति का हिस्सा बनाएं। यह शांत, संतुलित एवं स्थिर विश्व को गति देगा।

योग टकराव से सहयोग और तनाव से समाधान की ओर ले जाने में सक्षम है। हम योग को ऐसा जनआंदोलन बनाए जो विश्व को शांति, सेहत व समरसता की ओर ले जाए। जहां हर व्यक्ति दिन की शुरुआत योग से करे और जीवन में संतुलन पाए। जहां हर समाज योग से जुड़े और तनाव से मुक्त हो। जहां योग मानवता को एक सूत्र में पिरोने का

विशाखापत्तनम में 23 विश्व रिकॉर्ड बने

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन.चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर राज्य में 23 वैश्विक रिकॉर्ड बने। इनमें दो गिनीज रिकॉर्ड और 21 वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड है।

उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ विशाखापत्तनम में योगासन करने के बाद कहा कि यहां 3.03 लाख लोग एकत्र हुए। इससे एक ही स्थान पर सर्वाधिक लोगों द्वारा योगासन करने का विश्व रिकॉर्ड बना। उन्होंने यह भी बताया कि करीब 22,122 छात्रों ने एक ही स्थान पर 108 मिनट में 108 बार सूर्य नमस्कार कर एक और विश्व रिकॉर्ड बनाया। नायडू ने कहा कि योग दिवस पर यहां दो विशाल महासागर दिखे। एक तरफ बंगाल की खाड़ी और दूसरी तरफ योग साधकों का असीम सागर।

योग से विश्व कल्याण : योगी

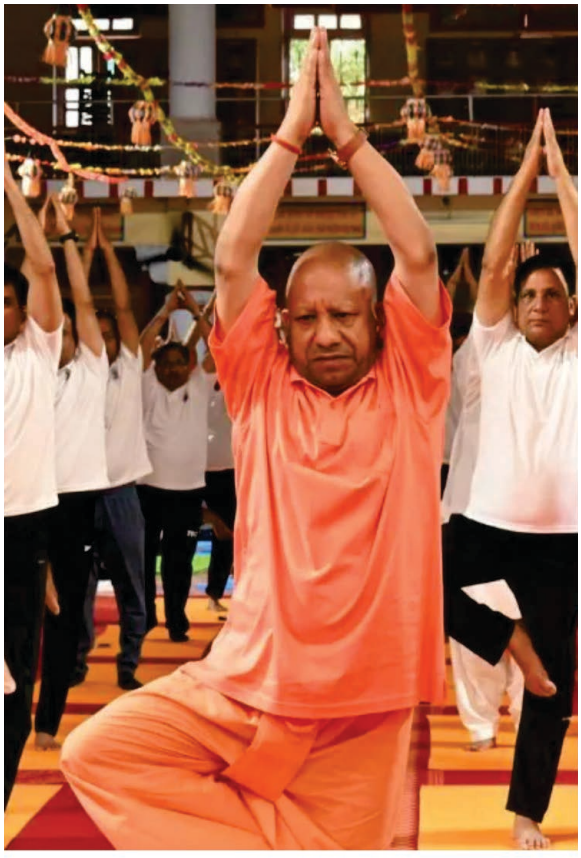

माध्यम बने। योग एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य का वैश्विक संकल्प बन जाए।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखनाथ मंदिर के दिगविजय नाथ स्मृति भवन में योग कर प्रदेशवासियों को निरोग रहने का संदेश दिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि योग भारतीय मनीषा की अनुपम देन है। योग को लोक कल्याण का माध्यम बनाकर भारत ने विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है।

उन्होंने कहा कि योग भारत की ऋषि परंपरा का ऐसा मंत्र है जो शरीर के साथ मस्तिष्क को भी स्वस्थ रखता है। भारतीय मनीषा ने योग के माध्यम से चेतना के कुछ आयामो से दुनिया को अवगत कराया। दुनिया के करीब 191 देश भारतीय योग की विरासत के साथ जुड़कर गौरवान्वित हो रहे हैं।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि मानव जीवन के चारो पुरूषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति स्वस्थ शरीर से ही संभव है। स्वस्थ शरीर ही संसार, सांसारिक उत्कर्ष और आध्यात्मिक उन्नयन का माध्यम है। धनोपार्जन से लोक कल्याण हो, कामनाओं की पूर्ति हो या फिर मुक्ति का मार्ग इन सब के लिए स्वस्थ शरीर ही माध्यम है। धर्म पालन का साधन बनाने और चारों पुरूषार्थ की प्राप्ति के लिए शरीर को स्वस्थ रखने का कार्य योग से होता है। इसी योग को भारत ने लोक कल्याण का माध्यम बनाया और फिर इसके माध्यम से विश्व कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त किया। उन्होंने कहा कि आज योग के अलग-अलग आयाम देखने को मिलते हैं। व्यक्तित्व विकास से लेकर ब्रम्हांड के रहस्यों को उद्घाटित करने तक योग के समृद्ध ज्ञान को विरासत के रूप में वेदों, पुराणों, उपनिषदों, स्मृतियों और शास्त्रों में प्रस्तुत किया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि योग की प्राचीन परंपरा को आधुनिक युग में आगे बढ़ाने का श्रेय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को है। ऐसे दौर में जब बाहरी लोग योग के आसनों को पेटेंट कराने में लगे थे और भारत अपनी विरासत से वंचित हो रहा था, तब पीएम मोदी के ही प्रयास से 21 जून 2015 से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की शुरुआत हुई। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन भारत की ऋषि परंपरा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने और आने वाली पीढ़ी को विरासत से जोड़ने का प्रयास है।

योग के जश्न में डूबा भारत

योग दिवस पर पूरा भारत योग के जश्न में डूबा दिखा। चाहे वह बर्फ से ढका सियाचिन हो या पैंगोगत्सो झील के शांत तट, तपते रेगिस्तान हों या गहरे समुद्र ही नहीं बल्कि देश के कुछ सबसे दुर्गम व चुनौती पूर्ण इलाकों में भी योग का उल्लास नजर आया। ऐसी जगहों पर न केवल सेना बल्कि आमजन ने भी योग कर योगमय होने का संदेश दिया।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक पूरा देश योग के रंग में नजर आया। भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) के जवानों ने लेह और सियाचिन में 14 हजार फिट की ऊँचाई पर पैंगोगत्से के तट पर योग किया। विशाखापत्तनम में तो आर.के. बीज पर एक साथ जल-थल पर योग का गवाह बना। विशाखापत्तनम में एक तरफ जहां पीएम मोदी योगासन कर रहे थे वहीं उनसे कुछ ही दूरी पर लंगर डाले जहाज पर सैकड़ों नौसैनिकों ने 45 मिनट तक योगासन कर स्वस्थ जीवन का संदेश दिया। यहां पर आयोजित कार्यक्रम में जवानों व उनके परिजनों सहित लगभग 10 हजार लोगों ने योगासन किया।

सेना के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार पैंगोगत्से झील के तटों से लेकर पोर्टब्लेयर तक और अरूणाचल के किबिथू से लेकर कच्छ के रण तक सैनिकों ने योग किया। दिल्ली में उप सेना प्रमुख ले. जनरल एन.एस.राज सुब्रमणी ने सैनिकों व उनके परिजनों संग योग किया। जिसमें 25 देशों के रक्षा अताशे, एनसीसी कैडेट व छात्रों सहित लगभग साढ़े तीन हजार से अधिक लोगों ने शामिल होकर योग प्रदर्शन किया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आम से लेकर खास और सेलीब्रिटीज ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हुए निरोग और स्वस्थ रहने का संदेश दिया। इसी के साथ कई फिल्मी सितारों ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर योग करते हुए तस्वीरें और वीडियो शेयर करते हुए देखे गए।

फिटनेस क्वीन मलाइका अरोड़ा ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर पोस्ट शेयर कर मोटीवेशनल मैसेज दिया और आडियंस को योग करने के लिए प्रेरित किया। पचास की उम्र में भी मलाइका अपने फिटनेस से कई यंग एक्ट्रेस को मात दे रही हैं।

योग गुरु रामदेव ने कहा कि योग ही सनातन का सार और परम सत्य है। दुनिया में अब दो सौ करोड़ से ज्यादा लोग कर रहे हैं। योग अब युगधर्म बन गया है। उन्होंने कहा कि योग हमारे भीतर घटित हो रहा है। योग ही जीवन का सत्य है। योगी ही गति, कृति, प्रकृति व संस्कृति का आधार है।

रामदेव ने कहा कि योग और योग मूलक जीवन पद्धति को आत्मसात करने के लिए आज विश्व लालायित है। योग युगों-युगों से चली आ रही हमारे पूर्वजों की बहुत बड़ी संस्कृति एवं आध्यात्मिक विरासत है।

•कुरुक्षेत्र में आयोजित योग समारोह में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रदेश को नशा और रोगमुक्त बनाएंगे। कार्यक्रम में हरियाणा के राज्यपाल बंगारू दत्तात्रेय सहित राज्य के कई मंत्रियों ने योग कार्यक्रम में भागीदारी की। ❑

गुजरात में बना भुजंगासन का वर्ल्ड रिकॉर्ड

गुजरात के वडनगर में कुल 2,121 प्रतिभागियों ने दो मिनट और 9 सेकण्ड तक भुजंगासन कर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराया।

नक्सली क्षेत्रों में पहली बार योग

छत्तीसगढ़ के दक्षिण बस्तर के अति संवेदनशील इलाके के पहाड़ी में जवान और ग्रामीण मिलकर योग दिवस में पहली बार भाग लिया। सुकुमा जिले के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों पूवर्ति, सिलगेर और टैंकलगुडेम स्थित सीआरपी कैंपों में जवानों ने सामूहिक रूप से योगाभ्यास किया।

संयुक्त राष्ट्र में ध्यान सत्र का आयोजन

संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में योग दिवस पर जाने-माने स्वास्थ गुरू दीपक चौपड़ा ने ध्यान सत्र का नेतृत्व किया। इसकी मेजबानी संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थाई मिशन ने की।

वर्ष 2018 में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक जनपद एक उत्पाद की शुरूआत की थी। एमएसएमई (सूक्ष्म लघु मध्यम उद्योग) विभाग द्वारा लागू यह अभिनय योजना काफी सफल रही। विभाग के सचिव पंकज यादव दिल्ली में भारत मंडपम में आयोजित कार्यक्रम में अवार्ड लेते हुए।

‘एक्सप्रेसवे केवल सड़क नहीं, पूर्वांचल के विकास का आधार भी’

योगी

गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे राष्ट्र को समर्पित

नोएडा से
बृजेश सिंह

उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र को तेज रफ्तार के विकास से जुड़ने वाले गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे का उद्घाटन करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि यह एक्सप्रेसवे केवल एक सड़क नहीं बल्कि पूर्वांचल के विकास का आधार स्तंभ है। उन्होंने कहा कि इस परियोजना में विकास के साथ संवाद अधिग्रहण के साथ सम्मान और संरचना के साथ सहमति को प्राथमिकता दी गई है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि यूपी में विरासत और विकास का अदभुत संगम है। हमारे यहां प्रयागराज महाकुंभ में एक साथ करोड़ों लोग आस्था की डुबकी लगाते हैं तो दूसरी तरफ एक्सप्रेसवे के मामले में यूपी देश में नंबर वन है। उन्होंने कहा कि इंफ्रास्ट्रक्चर पर ध्यान देने से बीमारू के दंश से उबर कर उत्तर प्रदेश तेजी से उभरता राज्य बना है। देश में सबसे ज्यादा एक्सप्रेसवे वाला राज्य भी यूपी है। गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे के बाद इसी साल के अंत तक गंगा एक्सप्रेसवे की भी सौगात मिल जाएगी। पूर्वांचल और बुंदेलखंड एक्सप्रेस पहले ही चालू हो चुके हैं। इन एक्सप्रेसवे पर हर जिले में औद्योगिक क्लस्टर विकसित किए जाएंगे। इन क्लस्टर में बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर पैदा होंगे। बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे से निवेश आया है। गंगा एक्सप्रेसवे भी चालू हो रहा है। हर एक्सप्रेसवे के दोनों ओर औद्योगिक क्लस्टर बनेंगे। जहां उद्योगों से रोजगार पैदा होंगे। इस साल नवंबर तक गंगा एक्सप्रेसवे का भी लोकार्पण हो जाएगा। इससे हर वर्ग की खुशहाली का रास्ता खुलेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सुरक्षा के बेहतर माहौल में अर्थव्यवस्था आगे बढ़ती है और

निवेश आता है। यूपी में पिछले आठ सालों से यही हो रहा है।

इस अवसर पर सीएम ने सपा पर निशाना साधते हुए कहा कि अब प्रदेश में सरकारी नियुक्तियों में जाति, क्षेत्र का भेद नहीं होता बल्कि भर्तियां मेरिट और आरक्षण के नियमों के अनुरूप होती हैं। उन्होंने बिना किसी का नाम लिए कहा कि पुलिस की इतनी बड़ी भर्ती 2017 के पहले होती तो चाचा-भतीजे की जोड़ी वसूली पर निकल गई होती। वे विकास नहीं करते थे। वे मुंबई की ही कंपनी के साथ पार्टनरशिप करते थे। वे दाऊद गिरोह को पालते थे। उनके साथ मिलकर बंदर बांट करते थे। सुरक्षा में सेंध लगाते थे। कोई आतंकी वारदात होती थी तो बदनाम आजमगढ़ होता था। पहचान का संकट मेरे नौजवानों के सामने आता था। आज ऐसा नहीं है। उन्होंने गृहमंत्री के उद्धरण का उल्लेख करते हुए कहा कि यूपी में अब पर्ची-खर्ची के बिना पारदर्शी तरीके से भती होती है।

आजमगढ़ में लोकार्पण के मौके पर योगी ने कहा कि आपने मुख्यमंत्री को जिताकर भेजा, वे भी विश्वविद्यालय, पूर्वांचल एक्सप्रेसवे नहीं दे पाए थे। याद करिए इतनी विकास की योजनाएं पिछले आठ वर्ष में आजमगढ़ में आईं। पूर्वांचल एक्सप्रेसवे का शिलान्यास जुलाई 2018 में प्रधानमंत्री ने किया था। 2021 में उद्घाटन भी प्रधानमंत्री ने किया। अब मैं देखता हूं आजमगढ़, मऊ, गाजीपुर व बलिया के लोग सुबह लखनऊ जाते हैं और दोपहर में अपना काम निपटाकर वापस अपने गांव, शहर में आ जाते हैं।❑

यूपी बनेगा एक्सप्रेसवे राज्य

- 341 किमी – पूर्वांचल एक्सप्रेसवे।
- 302 किमी – लखनऊ-आगरा एक्सप्रेसवे।
- 296 किमी – बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे।
- 165 किमी – यमुना एक्सप्रेसवे।
- 96 किमी – दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे।
- 91 किमी – गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे।
- 25 किमी – नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे।

उत्तर प्रदेश देश का ऐसा पहला राज्य बन गया है जहां सबसे अधिक एक्सप्रेसवे हैं। गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे की सौगात मिलने के बाद अब यूपी देश के कुल एक्सप्रेस कंट्रोल्ड एक्सप्रेसवे नेटवर्क का 42 प्रतिशत हिस्सा अकेले अपने नाम कर चुका है। अभी तक यह 38 प्रतिशत ही था। 594 किलोमीटर के गंगा एक्सप्रेसवे के बन जाने के बाद उत्तर प्रदेश की देश के कुल एक्सप्रेसवे में हिस्सेदारी 62 प्रतिशत तक पहुंच जाएगी। यानी देश में बने हर 10 किलोमीटर एक्सप्रेसवे में से 6 किलोमीटर एक्सप्रेसवे यूपी में होंगे।

जहां तक गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे बनाने की बात है तो इसके निर्माण पर कुल 7200 करोड़ रुपये की लागत आई है। जिसमें 3400 करोड़ रुपये इसे बनाने में और शेष भूमि अधिग्रहण और अन्य मदों में खर्च किया गया है। गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे उत्तर प्रदेश का सातवां एक्सप्रेसवे है। इसके लिए 22000 किसानों से 1100 हेक्टेयर भूमि का अधिग्रहण किया गया है। इसके अतिरिक्त तीन निर्माणाधीन और आठ प्रस्तावित हैं।

मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह के अनुसार देश में अभी 2900 किलोमीटर एक्सेस कंट्रोल्ड एक्सप्रेसवे हैं, जिसमें से 1200 किलोमीटर से अधिक यूपी में हैं। उन्होंने कहा कि यूपी में न केवल बड़े शहर बल्कि पूर्वांचल, बुंदेलखंड और तराई जैसे क्षेत्रों को भी एक्सप्रेसवे से जोड़ा जा रहा है।

नवंबर में होगा गंगा एक्सप्रेसवे का उद्घाटन

प्रदेश के सबसे बड़े एक्सप्रेसवे- गंगा एक्सप्रेसवे का लोकार्पण इसी नवंबर में हो जाएगा।

शुरू हुई 75 साल पर राजनीति

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने 75 साल की उम्र का जिक्र क्या किया कि अब उस पर राजनीति शुरू हो गई है।

उल्लेखनीय है कि नागपुर में एक कार्यक्रम के दौरान मोहन भागवत ने संघ के विचारक दिवंगत मोरोपंत पिंगले का किस्सा सुनाते हुए 75 साल उम्र होने का क्या मतलब होता है, इसका जिक्र किया था। लेकिन कांग्रेस ने संघ प्रमुख के इस बयान को लेकर प्रधानमंत्री मोदी को इससे जोड़कर राजनीतिक बयानबाजी शुरू कर दी है।

दरअसल संघ प्रमुख ने नागपुर में 75 साल की उम्र का जिक्र करते हुए कहा कि यह बात उस समय की है जब हम सब लोग वृंदावन में एक बैठक में थे। अखिल भारतीय कार्यकर्ता वहां पर उपस्थित थे। समापन के पहले होंवें शेषाद्री जी ने कहा था कि आज हमारे मोरोपंत जी के 75 साल पूरे हो गए हैं इसके लिए हम उन्हें साल दे रहे हैं। जब मोरोपंत जी बोलने के लिए खड़े हुए तब उन्होंने यह कहा कि मैं जब खड़ा होता हूं तो लोग हंसने लगते हैं। आगे वह बोले कि जब मैं मर जाउंगा तब लोग पहले पत्थर मार के देखेंगे कि मैं सचमुच में मर गया। फिर उन्होंने कहा कि लोग पूछेंगे कि आप ने 75 साल में क्या किया। लेकिन इसका अर्थ मैं जानता हूं। 75 साल की उम्र में जब साल ओढ़ी जाती है तब उसका अर्थ यह होता है कि अब आप की आयु हो गई।

कांग्रेस ने संघ प्रमुख के 75 साल वाले बयान को लेकर सियासत करनी शुरू कर दी है। कांग्रेस ने भागवत के बयान के बाद फिर से 75 साल की उम्र में रिटायरमेंट को लेकर राजनीतिक बयानबाजी तेज कर दी है। विपक्ष भागवत के बयान को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उम्र से जोड़कर देख रहा है।

दिलचस्प बात यह है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आगामी 17 सितंबर को 75 साल के हो जाएंगे। जबकि भागवत भी सितंबर में ही 75 साल की उम्र तय कर लेंगे। लेकिन भागवत खुद मोदी से 6 दिन पहले यानी 11 सितंबर को 75 साल के हो जाएंगे।

इससे पहले विगत लोकसभा चुनाव के वक्त जब आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने 75 साल की उम्र का जिक्र किया था तब गृहमंत्री अमित शाह ने कहा था कि 75 साल की उम्र में रिटायरमेंट का बीजेपी के संविधान में कोई जिक्र नहीं है। मोदी जी ही आगे देश का नेतृत्व करते रहेंगे। बीजेपी में कोई कन्फ्यूंजन नहीं है।

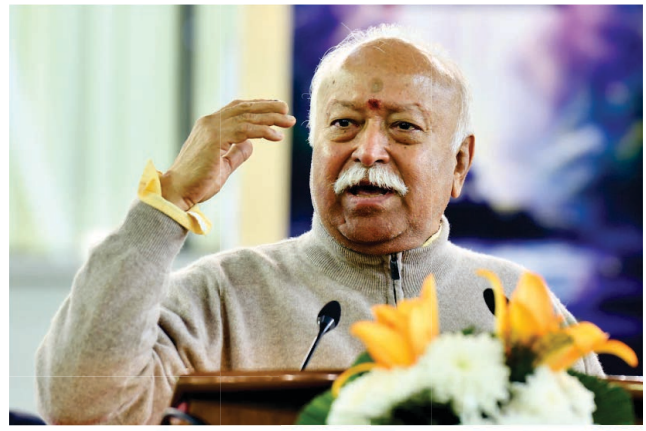

कब शुरू हुई रिटायरमेंट की बात?

भाजपा ने 26 अगस्त 2014 को एक प्रेस वक्तव्य में कहा था कि बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह ने पार्टी की गतिविधियों के मार्गदर्शन के लिए वरिष्ठ नेताओं की मार्गदर्शक मंडल में नियुक्ति की है। इसमें अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी और मुरली मनोहर जोशी के साथ ही नरेन्द्र मोदी और राजनाथ सिंह का नाम था। लेकिन मार्गदर्शक मंडल की रिटायरमेंट मान लेने की चर्चाएं तब शुरू हुईं जब अमित शाह के अध्यक्ष रहते बीजेपी का नया संसदीय बोर्ड बना तो उसमें अटल बिहारी वाजपेयी, आडवाणी और जोशी का नाम नहीं था। भाजपा की सबसे ताकतवर बॉडी संसदीय बोर्ड ही है।

समय-समय पर 75 साल की उम्र को लेकर चर्चा होती रही है कि भाजपा 75 साल से ज्यादा उम्र के अपने नेताओं को टिकट नहीं देगी। यानी 75 साल की उम्र के बाद रिटायरमेंट। कई जगह इसको भाजपा ने चरितार्थ भी किया तो कई जगह अपवाद भी रहा।

संघ की तरफ से भी सक्रिय राजनीति से रिटायरमेंट को लेकर कोई गाइडलाइन नहीं रही है। लेकिन संघ से जुड़े लोगों का ही कहना है कि भारतीय जनसंघ के प्रमुख नेता रहे नाना जी देशमुख कहते थे कि राजनेताओं को जिंदगी भर सत्ता में रहने के बजाय सामाजिक जीवन में काम करना चाहिए। उन्होंने इसकी मिसाल भी पेश की।

कांग्रेस ने मोदी पर ली चुटकी

कांग्रेस नेता पवनखेड़ा ने कहा कि 11 साल से मोदी ने देश, संविधान और संवैधानिक संस्थाओं की जो हालत की है, 17 सितंबर को हमें उससे निजात मिलेगी और 11 सितंबर को इससे निजात मिलने का पहला कदम होगा। वहीं जयराम रमेश ने कहा कि संघ प्रमुख ने पीएम के देश लौटते ही यह याद दिलाया कि वह 17 सितंबर को 75 वर्ष के हो जाएंगे। लेकिन पीएम भी संघ प्रमुख से यह कह सकते हैं कि वह भी 11 सितंबर को 75 वर्ष के हो जाएंगे। यानी एक तीर से दो निशाने साधने वाली बात होने लगी है। ❑

जनता से जुड़ाव और फैसलों में मेरिट को प्राथमिकता दें : योगी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नव नियुक्त प्रशासनिक अफसरों (पीसीएस) को संबोधित करते हुए कहा कि वे संवाद, सकारात्मकता और संवेदनशीलता को कार्य संस्कृति का हिस्सा बनाने की नसीहत देते हुए कहा कि वे जनता से जुड़ाव और फैसलों में मेरिट को प्राथमिकता दें। अधिकारी के रूप में वे सभी गरीब और कमजोर वर्ग के प्रति संवेदनशील व्यवहार रखें।

सीएम योगी ने अपने सरकारी आवास पर मिलने आए पीसीएस 2022 व 2023 बैच के 45 प्रशिक्षु अधिकारियों से कहा कि चुनौतियां ही आपके व्यक्तित्व को निखारेंगी। विविधताओं से भरा राज्य प्रशासनिक रूप से भी अनेक चुनौतियों से जुड़ा है। ऐसे राज्य की सेवा का अवसर प्राप्त होना गौरव की बात है। प्रारंभिक पांच-छः वर्षों का व्यवहार, दृष्टिकोण और कार्यशैली आने वाले तीन-चार दशकों की दिशा तय कर देता है। लोगों को त्वरित न्याय दिलाना आपकी कार्यशैली का हिस्सा होना चाहिए। राजस्व के लाखों मामले लंबित हैं। आपके निर्णयों और सक्रियता से लोगों को

राहत मिल सकती है।

उन्होंने प्रशिक्षु अधिकारियों को नसीहत देते हुए कहा कि प्रशासनिक सेवा में जनता का विश्वास अर्जित करना सबसे बड़ी पूंजी है। इससे न केवल आपकी कार्यक्षमता बढ़ती है बल्कि सिस्टम में सुधार भी आता है। आपका योगदान आने वाले समय में राज्य की नीति और जनता की नीयत दोनों को प्रभावित करेगा। अधिकारियों से उन्होंने जनहित को सर्वोपरि रखने और निर्णय प्रक्रिया में ईमानदारी व निष्पक्षता को प्राथमिकता देने का आह्वान किया।

यीडा के नए सीईओ बने आर.के.सिंह

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सचिव रहे राकेश कुमार सिंह को यमुना प्राधिकरण (यीडा) का नया सीईओ नियुक्त किया गया है। वह नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड के मुख्य कार्यपालक अधिकारी भी होंगे। उन्हें यह जिम्मेदारी डॉ. अरूणवीर सिंह का कार्यकाल 30 जून को खत्म होने के बाद दी गई है।

राकेश कुमार सिंह की कार्यशैली चर्चाओं में रही है। वह यीडा के अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी का पद पहले संभाल चुके हैं। उस दौरान उन्होंने प्राधिकरण के अधिसूचित क्षेत्र में जमीन की खरीद फरोख्त में होने वाली धोखाधड़ी को समाप्त करने के लिए अहम कदम उठाते हुए अधिग्रहीत या किसानों की सहमति से क्रय की गई जमीन को दस्तावेजों में यीडा के नाम दर्ज कराया था।

वह गौतमबुद्धनगर में सिटी मजिस्ट्रेट व उपजिलाधिकारी सदर के पद पर भी कार्य कर चुके हैं। उपजिलाधिकारी के पद पर रहते हुए उन्होंने 2004 में तकरीबन ढाई हजार करोड़ के मोती गोयल जमीन घोटाले का पर्दाफाश किया था। यह मामला देशभर में चर्चित हुआ था। अधिवक्ताओं की हड़ताल के कारण न्यायालय की कार्रवाई ठप होने पर उन्होंने गांव में अदालत लगाकर सीधे सुनवाई की थी।

प्रदेश में भाजपा सरकार बनने के बाद उन्हें मुरादाबाद का जिलाधिकारी बनाया गया था। यहां लंबे समय के कार्यकाल में उन्होंने कई सांप्रदायिक मामलों को कुशलता से चुनौती के साथ हल किया। इसके बाद उन्हें गाजियाबाद व कानपुर का भी जिलाधिकारी बनाया गया था। वह लखनऊ, गाजियाबाद व अलीगढ़ के नगर आयुक्त भी रह चुके हैं।

सोनाली बनी आरपीएफ की पहली महिला डीजी

अब तक मध्य प्रदेश पुलिस में विशेष पुलिस महानिदेशक के पद पर कार्यरत सोनाली मिश्रा को नई जिम्मेदारी सौंपी गई है।

उन्हें रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) की नई महानिदेशक (डीजी) के पद पर नियुक्त किया गया है। उल्लेखनीय है कि वह इस पद को संभालने वाली पहली महिला पुलिस अधिकारी हैं। 1993 बैच की आईपीएस अधिकारी सोनाली सीमा सुरक्षा बल में अतिरिक्त महानिदेशक भी रही हैं। वह प्रधानमंत्री की सुरक्षा में भी रही हैं। उन्हें यह पद मनोज यादव की जगह दी गई है। जो 31 जुलाई को रिटायर हो रही हैं।

विश्वस्तरीय पुलिसिंग की कवायद

यूपी पुलिस को विश्वस्तरीय पुलिसिंग की कतार में लाने की कवायद शुरू हो चुकी है। इसके लिए डीजीपी राजीव कृष्ण ने प्रदेश की कानून व्यवस्था और अपराध नियंत्रण के लिए 21 आईपीएस अफसरों को अलग-अलग काम की जिम्मेदारी सौंपते हुए उनसे कार्य योजना तैयार करने को कहा है। इनमें 10 आईपीएस अधिकारी पुलिस मुख्यालय में तैनात हैं और 11 अधिकारी फील्ड में कार्यरत हैं।

कार्य योजना तैयार होने के बाद डीजीपी इन अफसरों से वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए चर्चा करेंगे फिर इसे लागू करने दिया जाएगा।

उन्होंने कहा कि अधिकारियों को उनकी रूचि के अनुसार कार्य सौंपे गए हैं। एक महीने के भीतर रोडमैप तैयार होने के बाद इसका क्रियान्वयन शुरू होगा। इसका उद्देश्य पुलिसिंग को बेहतर, व्यावहारिक और अधिक प्रभावी बनाना है। ताकि पुलिस कर्मियों पर अतिरिक्त बोझ न पड़े और वह इसे आसानी से धरातल पर लागू कर सकें।

डीजीपी ने निर्देश दिया है कि कार्य योजना बनाने में एएसपी, सीओ व इंस्पेक्टर, सिपाही तक से राय ली जाए। फील्ड में लगातार रहने से ये लोग भी अच्छी राय दे सकते हैं। जो कानून व्यवस्था में काफी सहायक साबित हो सकती है। ऐसा पहली बार है जब पुलिस सुधारों में कांस्टेबल से लेकर एडीजी रैंक के अधिकारियों की भागीदारी होगी। इसके अलावा मुख्यमंत्री की शीर्ष प्राथमिकता वाली जन शिकायतों के निस्तारण की कार्य योजना बनाने की जिम्मेदारी एडीजी जोन बरेली रमित शर्मा को सौंपी गई है।

अपराधियों के खिलाफ जीरो टालरेंस की नीति के लिए एडीजी क्राइम एस.के. भगत और एडीजी वाराणसी जोन पीयूष मोरडिया रोडमैप तैयार करेंगे। महिलाओं के सशक्तिकरण व सुरक्षा के लिए एडीजी डब्ल्यूसीएसओ पद्मजा चौहान व एडीजी आगरा जोन अनुपम कुलश्रेष्ठ, साइबर अपराध से निपटने के लिए एडीजी विनोद कुमार सिंह वह पुलिस कमिश्नर नोएडा लक्ष्मी सिंह को जिम्मेदारी दी गई है।

मुख्य सचिव के सेवाविस्तार के अवसर बढ़े

मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह के सेवाविस्तार के अवसर बढ़ गए हैं। राज्य सरकार ने उनके एक साल के सेवाविस्तार संबंधी पत्र को केन्द्र सरकार को प्रेषित कर दिया है। वे इसी माह 31 जुलाई को रिटायर होने वाले हैं।

राज्य सरकार ने मनोज कुमार सिंह को सेवाविस्तार देने के संदर्भ में कहा है कि उनका विस्तार प्रदेश के विकास के हित में होगा। कहा गया है कि उन्होंने प्रदेश में औद्योगिक वातावरण बनाने में अहम भूमिका निभाने के साथ ही अर्थव्यवस्था को 10 खरब डॉलर तक ले जाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मनोज कुमार सिंह 1988 बैच के आईएएस अधिकारी हैं। मुख्य सचिव के पद के साथ उनके पास अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त (आईआईडीसी) और अध्यक्ष पिकअप का भी चार्ज है।

उल्लेखनीय है कि दुर्गाशंकर मिश्र के ढाई साल के सेवाविस्तार के बाद उन्हें 30 जून 2024 को मुख्य सचिव पद की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इससे पूर्व वह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार में नगर विकास, पंचायती राज, ग्राम विकास विभाग और कृषि उत्पादन आयुक्त जैसे महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं। उन्हें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के भरोसेमंद अधिकारियों में माना जाता है।

विश्वस्त सूत्रों का कहना है कि केन्द्र को उनके एक साल के सेवाविस्तार के लिए पत्र भेजा जा चुका है और इस बात की अत्यधिक संभावना है कि उन्हें सेवाविस्तार मिल जाएगा। उनके पक्ष में कहा गया है कि ग्लोबल समिट के साथ ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी इसी साल उन्हीं के देखरेख में काफी सफलता पूर्वक आयोजित हुआ है। क्योंकि उन्हीं के पास औद्योगिक विकास आयुक्त (आईआईडीसी) का प्रभार भी है।

उनके सेवाविस्तार की संभावना इस कारण भी ज्यादा है कि उनसे पहले साल 2019 में मुख्य सचिव रहे अनूप चंद्र पांडेय का छः माह का विस्तार केन्द्र सरकार द्वारा इसी आधार पर

किया गया था। इसीलिए राज्य सरकार ने केन्द्र को पत्र लिखकर यह अनुरोध किया है कि उन्हें भी एक साल का सेवाविस्तार दिया जाए। उन्हें सेवाविस्तार दिए जाने से युवाओं को रोजगार मिलने की नई राह भी खुलेगी।

कौन बन सकता है अगला मुख्य सचिव

किन्हीं कारणों से उन्हें सेवाविस्तार न मिला तो मुख्य सचिव की रेस में वर्ष 1989 बैच के डॉ. देवेश चतुर्वेदी और एसपी गोयल के नाम की चर्चा है। एक और नाम वर्ष 1990 के आईएएस दीपक कुमार का भी है।

पराग जैन बने रॉ प्रमुख

आपरेशन सिंदूर में अहम भूमिका निभाने वाले पराग जैन को रिसर्च एण्ड एनालिसिस विंग (रा) का नया प्रमुख बनाया गया है।

पंजाब कॉडर के 1989 बैच के आईपीएस अधिकारी पराग जैन का दो साल का कार्यकाल एक जुलाई से प्रारंभ हो गया है। उन्होंने रवि सिन्हा का स्थान लिया है। जो 30 जून को रिटायर हो गए।

इससे पहले वह एविएशन रिसर्च सेंटर के प्रमुख थे, जो हवाई निगरानी, सिगिनेट ऑपरेशन फोटो टोही उड़ाने, सीमाओं की निगरानी और इमेजरी इंटेलीजेंस से संबंधित संगठन है। उन्हें मानव और तकनीकी खूफिया तंत्र को एकीकृत करने में असाधारण विशेषज्ञता के लिए जाना जाता है। उन्हें ऑपरेशन सिंदूर की योजना के पीछे मास्टर माइंड के रूप में जाना जाता है। जिसमें खूफिया सहायता प्रदान की गई थी। जिसने सशस्त्र बलों को पाकिस्तान और गुलाम जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी बुनियादी ढांचे पर सटीक हमले में सक्षम बनाया।

इससे पहले पराग जैन अपने कॅरियर के दौरान कई महत्वपूर्ण पदों पर भी रहे। उन्हें एक जनवरी 2021 को पंजाब में पुलिस महानिदेशक पद पर पदोन्नत किया गया था। वह श्रीलंका व कनाडा में भारतीय मिशनों में भी कार्यरत रहे। कनाडा में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने वहां से संचालित खालिस्तान आतंकी मॉड्यूल पर नजर रखी।

नौकरशाही से परेशान नंदी

औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपल गुप्ता नंदी ने नौकरशाही पर गंभीर आरोप लगाते हुए मुख्यमंत्री से शिकायत की है। उन्होंने अधिकारियों पर निर्देश नहीं मानने व अपने लोगों को अनुचित लाभ देने की बात कही है।

मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में उन्होंने कहा कि अफसर नीतियों को ताक पर रखकर अपने स्तर से फैसला ले रहे हैं और पत्रावलियों को गायब करने का काम भी कर रहे हैं। नंदी ने पत्र में कुछ मामलों में बरती गई अनियमितताओं का जिक्र भी किया है। जिसकी उच्चस्तरीय जांच के निर्देश भी दिये गये हैं। वहीं दूसरी ओर मंत्री के आरोपों पर विभाग के उच्चाधिकारी पुख्ता जवाब देने की तैयारी में जुट गए हैं।

4 IAS, 4 IPS और 9 PCS रिटायर

विगत 30 जून को प्रदेश के चार आईएएस अफसरों के साथ ही 4 आईपीएस और 9 पीसीएस अधिकारी भी रिटायर हो गए।

इसमें वर्ष 1990 बैच के वरिष्ट आईएएस अधिकारी जितेन्द्र कुमार हैं वह अपर मुख्य सचिव पुनर्गठन समन्वय, भाषा, राष्ट्रीय एकीकरण तथा सामान्य प्रशासन विभाग, उत्तर प्रदेश शासन एवं निदेशक हिंदी संस्थान के पद पर कार्यरत थे।

उनके अलावा वर्ष 2009 बैच के आईएएस अखिलेश कुमार मिश्रा, वर्ष 2012 बैच के बृजराज सिंह यादव और इसी बैच के सुरेन्द्र प्रसाद सिंह भी सेवानिवृत्त हो गए।

रिटायर होने वाले आईपीएस- इसी के साथ आदित्य मिश्रा सहित चार आईपीएस अधिकारी भी सेवानिवृत्त हो गए। 2018 बैच के आईपीएस आदित्य मिश्रा डीजी फायर सर्विस के पद पर कार्यरत थे। आदित्य मिश्रा का सेवाकाल पूरा होने के बाद एडीजी डॉ. के.एस. प्रताप कुमार को डीजी के पद पर पदोन्नति मिलेगी। वह वर्तमान में एडीजी गोरखपुर जोन के पद पर

तैनात हैं। उन्हीं के साथ आईजी अभिसूचना डॉ. विपिन कुमार मिश्रा, डीआईजी राहुल राज व एसपी आदित्य प्रकाश वर्मा का सेवाकाल भी समाप्त हो गया।

सेवा निवृत्त होने वाले आईपीएस अधिकारियों को डीजीपी राजीव कृष्ण ने स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया। विदाई समारोह में कई वरिष्ट अधिकारी मौजूद थे। इस अवसर पर डीजी मुख्यालय में आयोजित विदाई समारोह में पूर्व डीजीपी व उत्तर प्रदेश अधीनस्थ चयन सेवा आयोग के अध्यक्ष एसएन सावत, डीजी रेणुका मिश्रा, डीजी होमगार्ड वी.के. मौर्य, डीजी प्रशिक्षण तिलोत्मा वर्मा, डीजी ईओडब्ल्यू नीरा रावत आदि मौजूद थे।

रिटायर होने वाले पीसीएस-

इसी के साथ 9 पीसीएस अधिकारी - पप्पू गुप्ता, राम भरत तिवारी, कुंवर बहादुर सिंह, पुरूषोत्तम दास गुप्ता, सतीश कुमार त्रिपाठी, हरिओम शर्मा, राजीव पांडेय, हनुमान प्रसाद और राज नारायण रिटायर हो गए।

फंड की नहीं नौकरशाहों में सोच की कमी : गडकरी

केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि सरकारी योजनाओं के लिए फंड की कोई समस्या नहीं है लेकिन नौकरशाही में लचीलेपन की कमीं और लीक से हटकर न सोचना चिंता का विषय है।

यह बातें उन्होंने पुणे में एक कार्यक्रम में पूर्व नौकरशाह विजय केलकर को पुण्य भूषण पुरस्कार से सम्मानित करते हुए कहीं। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि केलकर हमेशा लचीला रूख अपनाया और उनकी सोच एक अपवाद है।

केन्द्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि हमारे पास धन की कमी नहीं है। मैं हमेशा एक लाख करोड़, 50000 हजार करोड़ या दो लाख करोड़ रूपये की परियोजनाओं की बात करता हूं। आमतौर पर पत्रकार बड़ी घोषणाओं के मामले में राजनेताओं के घोषणा पर भरोसा नहीं करते हैं। मैं उनके कहता हूं कि मैं जो कहता हूं उसे रिकार्ड करें और अगर गाम पूरा नहीं होता है तो ब्रेकिंग न्यूज चलाएं। उन्होंने यह भी कहा चिंता धन की कमी की नहीं बल्कि काम की धीमी गति को लेकर है।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण इलाकों में जब मवेशी चरने जाते हैं तो एक ही पंक्ति में चलते हैं। वे इतने अनुशासित होते हैं कि कभी भी क्रम नहीं तोड़ते। मुझे कभी-कभी नौकरशाही के बारे में भी यही महसूस होता है। यहां लीक से हटकर विचार अपनाना पूरी तरह मना है। हालांकि केलकर ने नीति निर्माण में लचीलेपन को स्वीकार किया। गडकरी ने कहा कि उन्होंने केलकर से उस समय मुलाकात की थी जब वह वित्त आयोग के चेयरमैन थे और उन्होंने बताया था कि 385 लाख करोड़ रूपये की लागत वाली 406 परियोजनाएं रूकी हुई हैं और बैंकों के सामने तीन लाख करोड़ की गैर-निष्पादित आस्तियां होने का खतरा है। मंत्री ने कहा, उन्होंने मुझसे पूछा की इसका कारण क्या है। मैंने उनसे कहा कि इसका एक मात्र कारण नौकरशाह हैं। हमने कुछ परियोजनाओं को समाप्त करके और कुछ में सुधार करके समस्या का समाधान किया। परियोजनाएं फिर से शुरू हुई और बैंकों को तीन लाख करोड़ रूपये की गैर निष्पादित आस्तियों से बचाया गया। केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि केलकर ने हर विभाग में उत्कृष्ट कार्य किया लेकिन वित्त सचिव के रूप में उन्होंने जो नीतियां तैयार कीं, उनका भारत के भविष्य पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा।

इस अवसर पर केलकर ने कहा कि राजनेता ही सामाजिक और आर्थिक सुधारों को बढ़ावा देते हैं मुझे लगता है कि वे ही असली नीति निर्माता हैं क्योंकि वे ही निर्णय लेते हैं।

एन रविन्दर और जी.के. गोस्वामी नहीं बन सकेंगे डीजी !

उत्तर प्रदेश पुलिस के डीजी रैंक के तीन अधिकारी इस साल के अंत तक रिटायर होने वाले हैं। उनके सीान पर एडीजी प्रशिक्षण राजीव सब्बरवाल, एडीजी साइबर क्राइम वी. के. सिंह और कानपुर के पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार डीजी के पद पर प्रोन्नत होंगे।

वहीं दूसरी ओर 1996 बैच के आईपीएस डॉ. एन. रविन्दर और 1997 बैच के आईपीएस डॉ. जी.के. गोस्वामी डीजी के पद पर प्रोन्नत नहीं हो सकेंगे।

उल्लेखनीय है कि डॉ. एन. रविन्दर आगामी अगस्त और डॉ. जी.के. गोस्वामी सितंबर महीने में रिटायर हो रहे हैं। इस वर्ष रिटायर होने वालों की सूची में डीजी रैंक के 10 आईपीएस हैं। जिनमें आदित्य मिश्रा, पीवी रामाशास्त्री, अविनाश चंद्रा, संजय एम तरड़े, प्रशांत कुमार के साथ वीआरएस ले चुके

आशीष गुप्ता रिटायर हो चुके हैं। वहीं जुलाई महीने में डीजी होमगार्ड वी.के. मौर्य और नवंबर महीने में डीजी बीएसएफ दलजीत सिंह चौधरी, डीजी ट्रेनिंग तिलोत्मा वर्मा और डीजी नागरिक सुरक्षा अभय कुमार प्रसाद रिटायर हो जाएंगे। यद्यपि वरिष्ठता सूची में केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति पर तैनात संजय सिंघल और जकी अहमद का नाम पहले है। उनके यूपी में वापस आने पर तीनों आईपीएस को प्रोन्नत होने के लिए इंतजार करना पड़ सकता है। इसके अलावा इस वर्ष के अंत तक 2000 बैच के तीन अफसर एडीजी बन जाएंगे।

ग्रहों से उत्पन्न होने वाले रोग

आचार्य वंदना तिवारी
7048200123

जैसा कि पिछ्ले अंक में बताया गया है कि कुंडली में कुल नौ ग्रह होते हैं जो बारह भावों का प्रतिनिधित्व करते हैं इन ग्रहों की अच्छी स्थिति में होना कुंडली को सुदृढ़ बनाता है अन्यथा कुंडली में ग्रह पीड़ित या डिग्री में कम हों तो ये कुंडली को कमजोर बनाते हैं। विशेषतः ये उन भावों कमजोर बनाते हैं जिस भाव के इन्हें स्वामित्व मिला होता है साथ ही साथ यह उन भावों को भी कमजोर बनाते हैं जिनका ये नैसर्गिक रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं । अब तक सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध ग्रह की चर्चा हो चुकी है अब आगे बढ़ते हैं।

5. बृहस्पति ग्रह – कुंडली विश्लेषण में ग्रहों की बात की जाए तो बृहस्पति ग्रह का ज्योतिष महत्व विशेष होता है या यूँ कहें कि अगर बृहस्पति यानी कि गुरु ग्रह कुंडली में मजबूत है तो आधी कुंडली सुदृढ़ हो जाती है क्योंकि कुंडली में यह बारह भावों में से पाँच भावों का कारक होता है अर्थात् स्वामित्व उसे प्राप्त होता है। अतः गुरु का बलिष्ठ होना नितांत आवश्यक हो जाता है। नैसर्गिक रूप से गुरु काल पुरुष की नवें एवं बारहवें भाव का स्वामित्व लिए हुए होता है।

कुंडली में गुरु के खराब होने से निम्नलिखित बीमारियाँ हो सकती हैं:

1. गुरु कुंडली में लिवर से संबंधित होता है अतः इसके पीड़ित होने पर व्यक्ति में पाचन तंत्र संबंधी समस्याएँ, लीवर संबंधी समस्याएँ जन्म ले सकती हैं।
2. पीलिया
3. मधुमेह
4. मोटापा
5. उच्च रक्तचाप और
6. हृदय संबंधी समस्याएं

इसके अलावा, गुरु के खराब होने से व्यक्ति को मानसिक और भावनात्मक समस्याएं भी हो सकती हैं, जैसे:

1. आत्मविश्वास की कमी
2. निर्णय लेने में कठिनाई
3. अवसाद
4. चिंता

गुरु को मजबूत करने के लिए कुछ उपाय हैं:

1. गुरुवार का व्रत रखना
2. पीले वस्त्र पहनना
3. हल्दी का दान करना
4. गुरु मंत्र का जाप करना
5. पिता एवं पिता तुल्य व्यक्ति को सम्मान देना
6. विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करना

6. शुक्र ग्रह दृज्योतिषीय ज्ञान में ग्रहों की बात की जाए तो शुक्र ग्रह का विशेष ज्योतिषीय महत्व होता है सामान्य तौर पर कहा जाए तो संसार में दो सुख का विशेष महत्व होता है, एक जाया सुख दूसरा भौतिक सुख। इन दोनों का कारक शुक्र होता है अगर शुक्र कुंडली में मुदित, उच्च होता है तो व्यक्ति का जीवन सुखी एवं संपन्न व्यतीत होता है। नैसर्गिक रूप से शुक्र काल पुरुष की दूसरे एवं सातवें भाव का स्वामित्व लिए हुए होता है। यहाँ भी देखें तो दूसरा भाव जहाँ धन की व्याख्या करता है वही सातवाँ भाव साथी भाव को इंगित करता है। गौर करें तो ये भी उपयुक्त तथ्यों की ही पुनरावृत्ति कर रहा है।

कुंडली में शुक्र ग्रह की खराब स्थिति से निम्नलिखित समस्याएं हो सकती हैं:

शारीरिक समस्याएं

1. प्रजनन क्षमता में कमी
2. जननेन्द्रिय संबंधी समस्याएं
4. हार्मोनल असंतुलन

मानसिक और भावनात्मक समस्याएं

1. तनाव और चिंता
2. अवसाद और उदासी
3. रिश्तों में समस्याएं
4. यौन रोग संबंधी समस्याएं।

ज्योतिषीय उपाय

शुक्र ग्रह की खराब स्थिति को सुधारने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

1. शुक्रवार का व्रत रखना
2. शुक्र ग्रह के मंत्रों का जाप करना
3. सफेद या चांदी के रंग के वस्त्र पहनना
4. सफेद चीजों का दान करना
5. स्त्री जाति को सम्मान देना
6. देवी पूजन
7. शनि ग्रह दृकुंडली के सभी ग्रहों

में शनि अपना विशेष महत्व रखता है। कुंडली में शनि की स्थिति जातक के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। यदि शनि शुभ स्थिति में है, तो जातक को सफलता, समृद्धि और सम्मान मिलता है। वहीं, यदि शनि अशुभ स्थिति में है, तो जातक को कठिनाइयों, बाधाओं और दुखों का सामना करना पड़ सकता है।

कुंडली में शनि ग्रह की खराब स्थिति से निम्नलिखित समस्याएं हो सकती हैं।

शारीरिक समस्याएं

1. जोड़ों में दर्द और गठिया
2. मांसपेशियों में दर्द और कमजोरी
4. पैरों में दर्द की समस्याएं
5. त्वचा संबंधी समस्याएं (एक्जिमा,

सोरायसिस आदि)

मानसिक और भावनात्मक समस्याएं

1. तनाव और चिंता
2. अवसाद और उदासी
3. आत्मविश्वास की कमी
4. धैर्य की कमी

ज्योतिषीय उपाय

शनि ग्रह की खराब स्थिति को सुधारने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं।

1. शनिवार का व्रत रखना
2. शनि ग्रह के मंत्रों का जाप करना
3. नीले या काले रंग के वस्त्र पहनना
4. दान और पुण्य करना (काले तिल, लोहे के बर्तन आदि)
5. शनि मंदिर में पूजा-अर्चना करना
6. हनुमान जी की पूजा करना

8. राहु ग्रह दृकुंडली में राहु का प्रभाव शुभ और अशुभ दोनों हो सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि राहु कुंडली में किस भाव में स्थित है और किन ग्रहों के साथ युति कर रहा है।

यदि राहु शुभ स्थिति में हो, तो यह व्यक्ति को अपार धन, ख्याति और उन्नति दिला सकता है। शुभ राहु दशा अगर आजीविका के समय आयी है तो जातक अपने प्रयास से प्रशासनिक सेवाओं, पुलिस विभाग, साहित्य, दर्शन और विज्ञान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता हैं। राहु के प्रभाव से जातक महत्वाकांक्षी बनाने के साथ-साथ और संतुष्ट भी बनता है। राहु के प्रभाव से जातक को विदेश में रहने का भी मौका मिल सकता है।

कुंडली में राहु ग्रह की खराब स्थिति से निम्नलिखित समस्याएं हो सकती हैं।

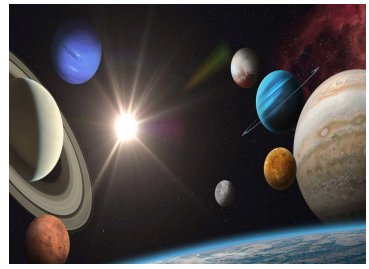

शारीरिक समस्याएं

1. मानसिक तनाव और अनिद्रा
2. चर्म रोग (एक्जिमा, सोरायसिस आदि)
3. एलर्जी और अस्थमा
4. न्यूरोलाजिकल समस्याएं (माइग्रेन, सिरदर्द आदि)

मानसिक और भावनात्मक समस्याएं

1. भ्रम और भय
2. अवसाद और चिंता
3. नकारात्मक विचार

राहु ग्रह की खराब स्थिति को सुधारने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं।

1. दुर्गा पूजा और काली पूजा करना
2. राहु के मंत्रों का जाप करना
3. दान और पुण्य करना (नीले रंग के वस्त्र, अन्न आदि)
4. महामृत्युंजय का पाठ करना

9. केतु - कुंडली में केतु का प्रभाव व्यक्ति के जीवन में कई तरह के बदलाव ला सकता है, जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव शामिल हैं। केतु को एक छाया ग्रह माना जाता है और यह जिस भाव में स्थित होता है, उससे संबंधित क्षेत्र में व्यक्ति को प्रभावित करता है. केतु व्यक्ति को आध्यात्मिक, वैराग्य और मोक्ष की ओर ले जा सकता है.

केतु व्यक्ति की अंतर्ज्ञान को जगा सकता है, जिससे उसे पूर्वानुमान की गहरी समझ प्राप्त हो सकती है।

यह ध्यान रखें कि ज्योतिषीय उपाय व्यक्तिगत कुंडली की परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं अतः किसी ज्योतिष विशेषज्ञ से परामर्श करना उचित होगा।

।। सर्वे भवन्तु सुखिनः ।। ❑

मुरादाबाद विकास प्राधिकरण में बोर्ड की बैठक के बाद आयुक्त/अध्यक्ष आंजनेय कुमार सिंह ने किया 360 डिग्री के द्वितीय पत्र का विमोचन ।

एजबेस्टन की जीत का जश्न

• वीरेन्द्र शुक्ल
9936403929

लग नहीं रहा था कि पहला टेस्ट गंवाने के बाद इग्लैंड के खिलाफ टीम इंडिया वह कारनामा कर दिखाएगी जिसका पांच दशकों से भी ज्यादा समय से इंतजार था। लेकिन बर्मिंघम के एजबेस्टन टेस्ट में युवा कप्तान शुभमन गिल के नेतृत्व में भारत एक शानदार और जानदार जीत का जश्न मनाएगी।

इग्लैंड में तो भारत ने इससे पहले कई जीतें हासिल की थीं। लेकिन बर्मिंघम में पहली बार लहराया तिरंगा कुछ ऐतिहासिक कहानी कहता है, जिसकी चर्चा लंबे समय तक होनी स्वाभाविक है। रनों के पहाड़ के नीचे 'बाजबॉल' की रणनीति का ऐसा दम निकला कि जिसकी शायद ही किसी को उम्मीद थी। पिछले 58 सालों से भारत यहां जीत के लिए तरस रहा था लेकिन अंततः कैप्टन गिल की अगुवाई में टीम इंडिया ने एजबेस्टन का किला फतह ही कर लिया।

खास और बड़ी बात यह है कि इस जीत में कप्तान गिल ने न केवल अहम भूमिका ही निभाई बल्कि अपने बल्ले से रनों की कुछ ऐसी बरसात की कि कई रिकॉर्ड ध्वस्त होते चले गए। पहले ही दिन से भारत का दबदबा नजर आने लगा था और अंतिम पांचवें दिन आते-आते भारत ने दो सेशन के भीतर ही जीत का अध्याय लिख डाला। टीम इंडिया को यह ऐतिहासिक जीत दिलाने में जहां गिल के बल्ले ने अहम भूमिका निभाई वहीं गेंदबाजी के मोर्चे पर तेज गेंदबाज आकाशदीप ने कुछ इस आक्रामक अंदाज में गेंदबाजी की कि लोग जसप्रीत बुमराह की कमी को पूरी तरह भूल गए। नहीं तो पिछले कुछ समय से बुमराह टीम इंडिया की अनिवार्यता बन गए थे।

लेकिन आकाशदीप की स्विंग ने कुछ ऐसा कहर बरपाया कि इंग्लिश बल्लेबाज घुटने टेक बैठे और भारत को टेस्ट क्रिकेट में अब तक की सबसे बड़ी जीत का श्रेय हासिल हो

गया। भारत ने एजबेस्टन टेस्ट 336 रनों से जीतकर एजबेस्टन का तिलस्म तोड़ दिया। इस जीत के साथ भारत ने पांच टेस्ट मैचों की सीरीज को एक-एक की बराबरी पर ला दिया। कप्तान गिल की जितनी भी तारीफ की जाए वह कम ही होगी।

उल्लेखनीय है कि जब इग्लैंड के दौरे पर टीम रवाना हो रही थी तो टीम प्रबंधन को यह चिंता थी कि दिग्गज विराट कोहली की भरपाई कौन करेगा। लेकिन 25 साल के कप्तान शुभमन गिल ने न केवल बीड़ा उठाया बल्कि चौथे क्रम की बल्लेबाजी पर आकर एक नया कीर्तिमान भी गढ़ डाला। विराट भले ही विश्व क्रिकेट में रन मशीन के रूप में जाने जाते रहे हैं लेकिन अब शुभमन ने भी इस क्रम पर कीर्तिमानों भरी पारियां खेलकर नई छाप छोड़ने की शुरुआत कर बैठे हैं। उन्होंने पहली पारी में 269 रन बनाए थे तो दूसरी पारी में 161 रनों का स्कोर खड़ किया। इस तरह वह टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में आस्ट्रेलियाई एलेन बॉर्डर (150* और 153 बनाम पाकिस्तान, लाहौर 1980) के बाद वह दूसरे बल्लेबाज हैं जिन्होंने दोनों ही पारियों में 150 से ज्यादा का स्कोर खड़ा किया। इस टेस्ट में गिल ने कुल 430 रन बटोर डाले। इस तरह वह दुनिया के बैटरों में नंबर दो पर आ गए हैं। उनसे ज्यादा एक मैच में सर्वाधिक रन इग्लैंड के ग्राहम गूच ने भारत के खिलाफ लार्ड्स में 1990 में 456 रन बनाए थे। वैसे गिल एक मैच में 400 प्लस रन बनने वाले पहले भारतीय कप्तान बन चुके हैं। इसके अलावा गिल की कप्तानी में भारत ने पहली बार एक टेस्ट मैच में हजार रन से ज्यादा बनाने का कारनामा कर दिखाया। टीम इंडिया ने इस टेस्ट में कुल 1014 रन बनाए। इससे पहले एक टेस्ट में भारत का सर्वाधिक स्कोर 2004 में सिडनी में आस्ट्रेलिया के खिलाफ कुल 916 रनों (705, 2011) का था। यद्यपि यह मैच ड्रा पर छूटा था।

25 वर्ष और 301 दिन की उम्र में गिल विदेशी धरती पर जीत दर्ज करने वाले सबसे युवा भारतीय कप्तान बने। इससे पहले सुनील गावस्कर ने 26 साल 202 दिन में 1976 में आकलैंड में न्यूजीलैंड पर जीत हासिल की थी। टेस्ट की दोनों पारियों में शतक लगाने वाले गिल तीसरे भारतीय कप्तान सुनील गावस्कर और विराट कोहली के बाद हैं।

प्लेयर आफ द मैच गिल विदेश में जीत दर्ज करने वाले सबसे युवा कप्तान बने। भारत को बर्मिंघम में आठ टेस्टों के बाद यह जीत नसीब हुई है। वैसे भारत की यह इग्लैंड पर टेस्ट में कुल 36वीं जीत है। जबकि इग्लैंड की धरती पर उसे दसवी जीत मिली है। ❑

कसौटी पर खरे उतरे आकाश

जसप्रीत बुमराह की जगह इस टेस्ट के लिए भारतीय टीम में जगह पाने वाले तेज गेंदबाज आकाशदीप ने अपनी पूरी सार्थकता सिद्ध की। आकाश के पंजे में फंसकर ही अंग्रेज बल्लेबाजों ने घुटने टेकते हुए भारत की जीत की राह खोल दी।

जिस तरह कप्तान गिल ने अपनी पारी के दौरान कई बार रिकॉर्ड पुस्तिका के पन्ने बदले तो उसी तरह आकाश ने भी कई रिकॉर्डों को बनाया। वह पिछले 49 साल में इग्लैंड के शीर्ष पांच बल्लेबाजों में से चार को बिना किसी फील्डर के आउट करने वाले पहले खिलाड़ी हैं। उन्होंने तीन को क्लीन बोल्ड किया जब कि एक को एलबीडब्ल्यू आउट किया। इसी के साथ आकाश इग्लैंड की सरजमीं पर पिछले 39 सालों में एक टेस्ट में दस विकेट लेने वाले पहले जबकि कुल दूसरे भातरतीय हैं। उनसे पहले चेतन शर्मा ने 1986 में बर्मिंघम में ही टेस्ट में यह उपलब्धि हासिल की थी।

बंगाल के इस मध्यम गति के तेज गेंदबाज ने अपने कॅरियर में पहली बार एक पारी में पांच या उससे अधिक विकेट झटके। आकाश ने पहली पारी में चार और दूसरी में 6 विकेट लेकर अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। वैसे यादगार प्रदर्शन करने वाले आकाश बिहार से हैं और वह 2010 में दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल) आए थे। तब उन पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा था लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और संघर्षों के बाद वह चमकने में सफल रहे। आकाश ने दूसरी पारी में 6 विकेट 99 रन देकर लिए और उनका कुल प्रदर्शन 187 रन देकर 10 विकेट हासिल करना था। इससे पहले आकाश का टेस्ट क्रिकेट की एक पारी में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 83 रन पर तीन विकेट था।

आँखिन देखी

भटकता युवा मन

वीरेन्द्र सिंह
9410704385

आज युवा भटक रहा है किसी ठौर की तलाश में। वह अतीत से कुछ सीखना नहीं चाहता है। वर्तमान के पथ पर हड़बड़ी में जल्दी लक्ष्य को प्राप्त कर लेना चाहता है। वह धर्म, शास्त्रों से विमुख है। हालांकि, आजकल जगह जगह अखंड रामायण, भागवत, रुद्राभिषेक जैसे अनुष्ठान, आयोजन दिखाई देते हैं। विडंबना यह है रामायण की आदर्श आचार संहिता, गीता के कर्म का उपदेश जीवन में उतरना नहीं चाहते हैं। जानते हैं पर मानते नहीं। कर्मकांड को ही धर्म मान बैठे हैं। असलियत यह है कि मानवीय गुण ही धर्म है। जो धारणीय हो वह धर्म है।

स्वामी विवेकानंद युवाओं के प्रेरणा स्रोत हो सकते हैं। वह मानते हैं कि युवाओं अनंत ऊर्जा, वीर्य, विक्रम है। यदि इनका सकारात्मक उपयोग किया जाय तो देश दुनिया की दशा बदल सकती है। सच है, तरुणाइ ने जब भी अंगड़ाई ली है, क्रांति की आंधी आई है। सुषुप्त युवा शक्ति को जगाते हुए विवेकानंद कहा करते थेः उठो, जागो, लक्ष्यप्राप्ति तक रुको मत। युवा अपनी आर्ष संस्कृति को भूल गए। भारतीय जीवन मूल्यों को बेमानी समझने लगे। परिणाम यह है कि एक सर्वे के अनुसार आज युवाओं की खुशी का इंडेक्स अपने बुजुर्गों से कम है। भले ही वे सुख, साधन के तमाम उपादानों से परिपूर्ण हों, लेकिन पहले जैसे प्रसन्न नहीं।

शेक्सपियर ने अपनी कृति '' ऐज यू लाइक इट '' में दर्शाए गए ''मनुष्य के सात युगों'' में जीवन के अंतिम चरणों को उदासी के रूप में चित्रित किया है, लेकिन नवीनतम विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट एक चिंताजनक वास्तविकता को उजागर करती है। दुनिया भर के युवा अब अपने बुजुर्गों की तुलना में कम प्रसन्नता की श्रेणी में हैं। सर्वे में बताया गया है कि 2006 के बाद से, उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, यूरोप, दक्षिण एशिया, मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में युवाओं की प्रसन्नता के स्तर में गिरावट आई है।

इस गिरावट में कई कारक योगदान करते हैं।

आर्थिक चुनौतियाँः बढ़ती लागतें

युवाओं को पिछली पीढ़ियों की तुलना में समृद्धि की ओर अधिक कठिन चढ़ाई का सामना करना पड़ता है। आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा की सामर्थ्य वित्तीय सुरक्षा और समग्र कल्याण के मार्ग में प्रमुख बाधाएँ बन सकती हैं। छात्र ऋण और स्थिर वेतन उनकी वित्तीय स्थिति को और भी कम कर देते हैं, जिससे घर के मालिक बनने और परिवार शुरू करने जैसे महत्वपूर्ण पड़ावों में देरी होती है, जो उपलब्धि और स्थिरता की भावना को बढ़ावा देते हैं। यह केवल पश्चिमी देशों की ही समस्या नहीं है। विश्व बैंक की 2022 की एक रिपोर्ट में पाया गया है कि ब्राजील और भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में भी आवास की बढ़ती लागत युवा वयस्कों के लिए एक बड़ी चिंता का विषय है। रोजगार बाजार में गिरावट आई है। अर्थव्यवस्था और अनिश्चित कार्य व्यवस्थाएँ पारंपरिक करियर की तुलना में कम सुरक्षा और लाभ प्रदान करती हैं। स्थिरता की यह कमी वित्तीय नियोजन को कठिन बना देती है और भविष्य को लेकर चिंता बढ़ा देती है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की 2023 की एक रिपोर्ट में पाया गया है कि विकसित अर्थव्यवस्थाओं में युवा बेरोजगारी दर लगातार ऊँची बनी हुई है। विकासशील देशों में तो यह और भी बदतर है।

सामाजिक और तकनीकी दबाव बढ़ा है। सोशल मीडिया भी इसमें अहम भूमिका अदा कर रहा है। जुड़ाव प्रदान करने के साथ-साथ, सोशल मीडिया अपर्याप्तता और सामाजिक तुलना को भी बढ़ावा दे रहा है। 2022 के एक अध्ययन में पाया गया कि युवा वयस्कों में बढ़ते सोशल मीडिया उपयोग और अवसाद व अकेलेपन के लक्षणों के बीच एक गहरा संबंध है, जो संभवतः एक वैश्विक प्रवृत्ति है। आनलाइन संपर्कों के बावजूद, युवाओं को खाली समय की कमी, भौगोलिक गतिशीलता या सामाजिक चिंताओं जैसे कारकों के कारण मजबूत, व्यक्तिगत संबंधों की कमी का अनुभव हो सकता है। एक सहायक समुदाय से अलग-थलग महसूस करना खुशी पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है।

जलवायु परिवर्तन के साथ साथ युवाओं में अनिश्चितता और चिंता बढ़ी है। जलवायु परिवर्तन का मंडराता खतरा युवा पीढ़ी पर भारी पड़ रहा है। उन्हें पर्यावरणीय चुनौतियों से घिरी दुनिया विरासत में मिली है। उन्हें इन चुनौतियों से निपटने के लिए नियंत्रण या तंत्र की कमी

महसूस हो सकती है। नार्वे, स्वीडन, जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन और स्पेन में, वृद्ध लोग युवाओं की तुलना में अधिक खुश हैं, जबकि पुर्तगाल और ग्रीस में विपरीत रुझान दिखाई देता है। यह आगे यह भी दर्शाता है कि उत्तरी अमेरिका में युवा अब अपने बुजुर्गों की तुलना में काफी कम संतुष्ट हैं। यूरोप को छोड़कर, हर क्षेत्र में खुशी की असमानता बढ़ी है, जहाँ जल्द ही इस ''ऐतिहासिक'' और ''चिंताजनक'' बदलाव का अनुसरण किया जा सकता है।

अगर इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो इसके परिणाम भयावह हो सकते हैं। जैसा कि रिपोर्ट में कहा गया है: ''यह सोचना कि दुनिया के कुछ हिस्सों में बच्चे पहले से ही मध्य-आयु संकट जैसी स्थिति का सामना कर रहे हैं, तत्काल नीतिगत कार्रवाई की माँग करता है।'' जब खुशी कम होती है, तो प्रेरणा, उत्पादकता, स्वास्थ्य और जीवन प्रत्याशा भी कम हो जाती है।

दुनिया भर में खुशी को बढ़ावा देने की आवश्यकता है

रिपोर्ट जहाँ एक चिंताजनक तस्वीर पेश करती है, वहीं यह उम्मीद भी जगाती है। कोस्टा रिका और कुवैत जैसे देशों में युवाओं में खुशी बढ़ी है। हालाँकि, इसके विशिष्ट कारणों का अध्ययन अभी जारी है, लेकिन ये उदाहरण बताते हैं कि सामाजिक सहयोग और उद्देश्य की भावना पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण हो सकता है।

वैश्विक मानसिक स्वास्थ्य सहायता को प्राथमिकता दें। हमें दुनिया भर के स्कूलों और समुदायों में युवाओं के लिए सुलभ और व्यापक मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं में निवेश करना चाहिए। सोशल मीडिया और अन्य तनावों के नकारात्मक प्रभावों से निपटने के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप और सहायता अत्यंत महत्वपूर्ण है। माइंडफुलनेस प्रशिक्षण और समूह चिकित्सा सत्रों जैसे कार्यक्रमों ने युवाओं में चिंता और अवसाद को कम करने में सफलता दिखाई है। इसके अतिरिक्त, युवाओं की मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए अ०नलाइन संसाधन और हेल्पलाइन बनाने से व्यापक पहुँच सुनिश्चित हो सकती है।

विभिन्न संस्कृतियों के बीच वास्तविक दुनिया के जुड़ाव को बढ़ावा दें। ऐसी गतिविधियाँ जो वास्तविक सामाजिक मेलजोल और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देती हैं, उन्हें सभी संस्कृतियों में समर्थन और प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान कार्यक्रम, जहाँ विभिन्न देशों के युवा एक साथ रहते और सीखते हैं, आपसी समझ और आजीवन मित्रता को बढ़ावा दे सकते हैं। आभासी युवा मार्गदर्शन पहल युवाओं को अनुभवी पेशेवरों से जोड़ सकती है जो मार्गदर्शन और सहायता प्रदान कर सकते हैं। पर्यावरण सक्रियता या रचनात्मक लेखन जैसे साझा हितों पर केंद्रित वैश्विक अ०नलाइन समुदाय भी अपनेपन और उद्देश्य की भावना प्रदान कर सकते हैं।

सोशल मीडिया सुधारों पर जोर दें। सोशल मीडिया कंपनियों और सरकारों की वैश्विक जिम्मेदारी है कि वे उपयोगकर्ताओं की भलाई को प्राथमिकता दें। नकारात्मकता और गलत सूचना के प्रसार को सीमित करने वाले सख्त कंटेंट नियमों और नीतियों को लागू करना बेहद जरूरी है। प्लेटफ०र्म ऐसी सुविधाएँ भी तलाश सकते हैं जो स्क्रीन टाइम को सीमित करें या कुछ खास तरह की सामग्री के लिए उम्र की पुष्टि जरूरी करें। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग यह सुनिश्चित कर सकता है कि ये सुधार सीमाओं के पार प्रभावी ढंग से लागू हों, जिससे वैश्विक स्तर पर युवाओं के लिए एक सुरक्षित और अधिक सकारात्मक अ०नलाइन वातावरण तैयार हो।

बेहतर भविष्य के लिए शिक्षा को बढ़ावा दें। स्कूलों को पारंपरिक शिक्षा से आगे बढ़कर छात्रों को ऐसे जीवन कौशल प्रदान करने की आवश्यकता है जिनका उपयोग कहीं भी किया जा सके। वित्तीय साक्षरता कार्यशालाएँ युवाओं को सोच-समझकर वित्तीय निर्णय लेने और छात्र ऋण एवं बजट की जटिलताओं से निपटने में सक्षम बना सकती हैं। स्वस्थ आनलाइन आदतें सिखाने से सोशल मीडिया का जिम्मेदार और सुरक्षित उपयोग सुनिश्चित हो सकता है।

आज दुनिया एक ऐसे चौराहे पर खड़ी है, जहाँ युवाओं की घटती खुशी की गंभीर सच्चाई सामने आ रही है। 2024 की विश्व खुशहाली रिपोर्ट हमें भावी पीढ़ियों की भलाई सुनिश्चित करने की हमारी सामूहिक जिम्मेदारी की याद दिलाती है। आज के युवा कल के कार्यबल हैं। युवाओं के असंतोष को बढ़ावा देने वाले कारकों पर अभी से ध्यान देकर, व्यवसाय और समाज मिलकर एक उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

ऐसा नहीं है कि हर युवा हताश, निराश और अवसाद में है। जो पूर्ण मनोयोग से समर्पित भाव से अपने कॅरियर के प्रति सजग हैं उन्हें निश्चित रूप से सफलता मिलती है। समस्या यह है कि आज का युवा नैतिक मूल्यों को बेमानी समझता है। स्कूली शिक्षा, घर का परिवेश, संस्कार इसके लिए दोषी माने जा सकते हैं। आवश्यकता है कि अपने महान ऋषियों, मुनियों, पूर्वजों के बताए गए मार्ग का अनुसरण करें। यह धारणा निकाल दें कि जो पाश्चात्य संस्कृति में है, वही सही है। अपना जो भी है वह दकियानूसी है और आधुनिकता से परे है। आधुनिक समाज के निर्माण के लिए सामाजिक समरसता के साथ-साथ मानवीय मूल्यों का पालन भी होना चाहिए। योग ओर प्रणायाम को अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि एक फुटबॉल का खिलाड़ी गणित को बेहतर ढंग से समझ सकता है। कहने का मतलब यह है कि शरीर को स्वस्थ और प्रसन्नचित्त बनाए रखना भी जरूरी है। ❑

हेल्थ मंच

मानसून में संक्रामक रोगों से बचाव

मानसून हमें गर्मी से राहत तो देता है लेकिन मानसून की शुरुआत विभिन्न संक्रामक बीमारियों का पर्याय भी है।

दरअसल मौसम में अचानक बदलाव, नमी में वृद्धि और जलभराव बीमारियों के फैलने के लिए अच्छा-खासा माहौल बनाते हैं।

इस मौसम में सामान्य शीतलहर फ्लू, टाईफाइड मच्छर से होने वाली बीमारियों जैसे मलेरिया, डेंगू और फंगल संक्रमण जैसे संक्रमण आमतौर पर बैक्टीरिया, वायरस, कवक और परजीवियों के कारण होते हैं। इसके अलावा श्वसन संक्रमण-इन्फ्लूएंजा, ब्रोंकाइटिस और निमोनिया। त्वचा संक्रमण-जीवाणु संक्रमण जैसे दाद, एथलीट फुट और इम्पेटिगो आदि आम बात हैं। इस मौसम में दूषित जल से बचना बहुत जरूरी है। वहीं मच्छरों से भी बचाव अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए अपने आसपास साफ सफाई पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है और कार्यस्थल को नियमित रूप से साफ और कीटाणु रहित करने की जरूरत है। जलजनित बीमारियों से बचने के लिए जलभराव वाले क्षेत्रों में जाने से बचें।

श्वसन व त्वचा संक्रमण

श्वसन व त्वचा संबंधी संक्रमणों को सरल सावधानियां बरतकर बखूबी रोका जा सकता है। अच्छी स्वच्छता बनाए रखने के साथ नियमित रूप से हाथ धोने और चेहरे को छूने से बचना चाहिए। श्वसन संक्रमण से बचने के लिए भारी वर्षा के दौरान घर के अंदर रहने जरूरत है। श्वसन संक्रमण के प्रसार को रोकने के लिए मास्क का उपयोग जरूरी है। त्वचा संक्रमण को रोकने के लिए अपनी त्वचा को नियमित रूप से धोएं और सुखाएं।

त्वचा संक्रमण के प्रसार को रोकने के लिए तौलिया और कपड़े जैसे व्यक्तिगत वस्तुओं को साझा करने से बचें। मानसून के दौरान हमारे शरीर का इम्यून सिस्टम बेहत कमजोर हो जाता है। जिससे हमारे शरीर को कई वाटर बोर्न, फूड बोर्न और मास्कवीटो बोर्न बीमारी का खतरा बन सकता है। इस वजह से मानसून के मौसम को फ्लु का मौसम भी कहा जाता है।

अस्वच्छता की स्थिति और बुनियादी निवारक उपायों का पालन न करने के कारण विभिन्न बीमारियों की चपेट में आने का खतरा भी बहुत अधिक होता है। मानसून के दौरान सबसे आम बीमारियां चार प्राथमिक माध्यमों से फेलती हैं-

मच्छर, पानी, हवा और दूषित भोजन। सामान्य सर्दी-जुकाम मानसून के मौसम में होने वाली सबसे आम समस्याओं में से एक है। इसी तरह मलेरिया गंदे पानी में पनपने वाले मच्छरों की कुछ प्रजातियों के कारण होता है। इस सीजन में सबसे आम वायरल फीवर कोई भी बुखार हो सकता है। जो वायरल संक्रमण के कारण होता है। दूषित भोजन और पानी से फैलने वाला संक्रमण टाईफाइड बुखार घातक हो सकता है।

हेपेटाईटिस ए- यह संक्रमण दूषित भोजन और पानी के कारण होता है। जो लीवर को काफी प्रभावित करता है। उचित स्वच्छता बनाए रखने से इस बीमारी के खतरे को दूर किया जा सकता है। चूंकि मानसून अपने साथ नमी और उमस लेकर आता है जिससे सूक्ष्म जीव रिप्रोडक्शन के लिए प्रेरित होते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप कई श्वसन संबंधी बीमारियां और त्वचा संक्रमण होते हैं। लेकिन बरसात के मौसम में होने वाली बीमारियों से सावधान रहना आसान है। क्योंकि आपको बस सावधान और सतर्क रहने की जरूरत है। ❑

माँ बनने की अफवाहों पर सोनाक्षी ने चुप्पी तोड़ी

पिछले दिनों इन्हीं समय के आसपास बॉलीवड में दो ही चर्चाओं का जोर था। एक तो 'खामोश' अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा की लाडली बेटी सोनाक्षी सिन्हा और दूसरी सुपर स्टार सलमान खान के करीबी दोस्त के बेटे जहीर इकबाल की शादी के ही चर्चे थे।

23 जून 2024 को जब सोनाक्षी की शादी हुई तो यह चर्चा जोर पकड़े हुए थी कि यह शादी आन-फानन में इसलिए हुई है क्योंकि सोनाक्षी माँ बनने वाली थीं। अब अपनी शादी के साल भर बाद सोनाक्षी ने इस पर चुप्पी तोड़ते हुए अपने मन की बात खुलकर रखी और कहा कि इस एक साल ने उन्हें पहले से कहीं ज्यादा सहनशील और खुद का ख्याल रखने वाला बना दिया।

सोनाक्षी ने कहा कि उन्होंने इन सभी अफवाहों और चर्चाओं से निपटने का तरीका ढूंढ लिया। जब मैं काम नहीं कर रही होती तो मेरी जिंदगी बहुत ही खुशहाल और शांत रहती है। ऐसे में जब मैं काम पर होती हूं और इन बातों का सामना करना पड़ता है तो मैं पहले से बेहतर तरीके से उनसे निपट लेती हूं। शादी के रजिस्ट्रेशन के दिन को याद करते हुए सोनाक्षी ने बताया कि वह बहुत भावुक हो गईं थीं। उन्होंने कहा मुझे पता है कि दुल्हन को शर्मीला और संकोची होना चाहिए। लेकिन ये वो दिन था जिसका मैं बहुत लंबे समय से इंतजार कर रही थी और ये मेरी जिंदगी का सबसे खुशहाल दिन था। आखिर मैं उस इंसान के साथ अपनी जिंदगी बिताने जा रही थी जिसे मैंने चुना है।

सोनाक्षी ने साल 2010 में फिल्म 'दबंग' से डेब्यू किया था। उनकी नई फिल्म 'निकिता राय' जल्द रिलीज होने जा रही है।

कभी शराब में ही डूबे रहते थे आमिर

मिस्टर परफेक्ट के नाम से मसहूर आला दर्जे के एक्अर आमिर खान ने हाल में दिए गए एक इंटरव्यू में अपने जिंदगी के पन्ने खोलकर सभी को चौंका दिया है।

आमिर खान ने इंटरव्यू में अपनी पत्नी रीना दत्ता के बारे में बात की। दोनों की 1986 में शादी हुई थी और 2002 में तलाक हो गया था। आमिर के कथनानुसार इस तलाक ने उन्हें शराबी बना दिया था। वे कहते हैं कि उस दौरान मैंने फिल्मों से दूरी बना ली थी और एक साल से ज्यादा समय तक फिल्मों से दूर रहा। जब मेरा और रीना का रिश्ता खत्म हुआ तो उस शाम मैंने पूरी शराब की बोतल पी डाली थी।

इसके बाद लगातार अगले डेढ़ साल तक वह शराब रोजाना पीते रहे। शराब पीकर वह बेहोश तक हो जाते थे। वे कहते हैं कि मुझे लगता है कि मैं अपने को मारने की कोशिश कर रहा था। यह सारी बातें आमिर के प्रशंसक सुनकर हतप्रभ रह गए हैं। क्योंकि आमिर की लव लाईफ अक्सर चर्चा में रहती है। लोगों को अंदाजाभी नहीं था कि तलाक उन्हें इस कदर परेशान करके रख देगा। ❑

जातियों की राजनीति करेगी भाजपा!

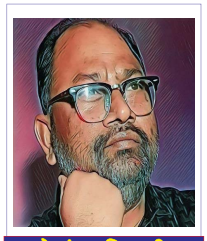

हेमंत तिवारी
मो.-9889433333

जाति जनगणना की विपक्ष की मांग को सिरे से नकार रही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का अचानक से उसके पक्ष में आ जाना कोई अनायास ही नहीं हुआ है। विराट हिन्दुत्व की छतरी के तले सभी जातियों को एकजुट करने में सौ साल खपा देने वाले राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के मानसपुत्र भाजपा के लिए यह फैसला करना निश्चित ही कठिन रहा होगा कि अब वो जाति की राजनीति पर आगे बढ़ेगी। हालांकि अब जबकि पार्टी ने यह फैसला कर ही लिया है तो न केवल उसके भीतर बल्कि पूरे देश की राजनीति में बदलाव की आहट साफ सुनाई देने लगी है। जिस तरह से भाजपा के संगठन के भीतर और उसके द्वारा चलायी जा रही राज्य सरकारों को लेकर तूफान से पहले वाली खामोशी दिख रही है उसके टूटते ही तमाम राजनैतिक समीकरण 180 डिग्री के कोण पर बदले नजर आएंगे।

कम से कम उत्तर प्रदेश में जिस तरह भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने पार्टी के भीतर पिछड़े नेताओं को तरजीह देनी और उसके साथ गठबंधन में मौजूद जातीय अस्मिता के नाम पर खड़ी छोटी पार्टियों के नेतृत्व को पुचकारना शुरू किया है उससे अगले कुछ दशकों की रणनीति साफ दिखने लगी है। जाति जनगणना का फौरी लाभ तो भाजपा बिहार में लेना चाहेगी पर उसकी दीर्घकालिक रणनीति के केंद्र में उत्तर प्रदेश ही है जहां से देश में सबसे ज्यादा 80 सांसद चुने जाते हैं। बिहार से उलट उत्तर प्रदेश में भाजपा ने बीते दो दशकों में पिछड़े वर्ग के नेताओं की एक बड़ी कतार भी खड़ा करने में सफलता पाई है और एक बार उनके (केशव प्रसाद मौर्य) नेतृत्व में शानदार सफलता भी हासिल की है।

ये भी कोई संयोग नहीं है कि वहीं केशव प्रसाद मौर्य जब शीर्ष केंद्रीय नेतृत्व से मिलते हैं तो बयान देते हैं कि एक बार फिर से उत्तर प्रदेश में 2027 में 2017 वाली सफलता को दोहराएंगे। दरअसल भाजपा का

जाति जनगणना का फौरी लाभ तो भाजपा बिहार में लेना चाहेगी पर उसकी दीर्घकालिक रणनीति के केंद्र में उत्तर प्रदेश ही है जहां से देश में सबसे ज्यादा 80 सांसद चुने जाते हैं। बिहार से उलट उत्तर प्रदेश में भाजपा ने बीते दो दशकों में पिछड़े वर्ग के नेताओं की एक बड़ी कतार भी खड़ा करने में सफलता पाई है और एक बार उनके (केशव प्रसाद मौर्य) नेतृत्व में शानदार सफलता भी हासिल की है।

केंद्रीय नेतृत्व इस बात को बखूबी जानता है कि जन्म से ही हिन्दुत्व की राजनीति करने के बाद भी उसे सत्ता तभी मिली जब गैर यादव पिछड़ों व गैर जाटव दलित जातियां उसके पक्ष में गोलबंद हुयीं। उत्तर प्रदेश में 2024 के लोकसभा चुनाव में अपेक्षित सफलता न मिलने का कारण भी उसे बखूबी पता है।

यही कारण है कि भाजपा ने राम मंदिर निर्माण के बाद हिन्दुत्व की पुरानी लीक पर चलने की जगह सामाजिक न्याय के बहाने जातीय अस्मिता की राजनीति को चुना है और पिछड़े इस रणनीति के केंद्र में होंगे यह सर्वविदित है। हालांकि यह भी नहीं है कि जाति जनगणना से उपजी परिस्थितियों के चलते भाजपा हिन्दुत्व के मुद्दे से पूरी तरह से किनारा कर लेगी। यहां संघ की भूमिका बड़ी होने जा रही है जो अपने सौ साल पूरे होने के मौके पर भारत को लेकर अपनी नीति में व्यापक बदलाव के लिए तैयार है। दरअसल सामाजिक न्याय की समाजवादी टाइप की राजनीति से इतर संघ की रणनीति दलितों, पिछड़ों को एक जुटकर विराट हिन्दुत्व के छतरी के तले समतामूलक समाज का सपना दिखाने और उस पर काम करने की है। इसके लिए एक बड़ी जरुरत अल्पसंख्यक समाज के अन्यीकरण की थी जो बीते दस से अधिक सालों में लगातार भाजपा नीति सरकारों द्वारा किया जाता रहा है और बहुत हद तक हो भी चुका है।

कुल जमा बात अब ये है कि उत्तर प्रदेश में भाजपा आगामी विधानसभा से लेकर 2029 में होने वाले लोकसभा के चुनावों को जाति की पिच पर लड़ने के लिए खुद को तैयार कर चुकी है। कोई अतिश्योक्ति नहीं कि आने वाले कुछ ही दिनों में भाजपा की राजनीति के केंद्र में उत्तर प्रदेश में बड़े पैमाने पर पिछड़े नेताओं की कतार दिखाई दे। पार्टी में फिलवक्त पिछड़ों के चेहरे के तौर पर मौजूद और सबसे अजमाए नाम को ही आगे कर भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने आने वाले दिनों की रणनीति पर काम करना भी शुरू कर दिया है। ❑

hemant.jansandesh@gmail.com

यूपी बन रहा टेक्नो-हब

- 6 विभागों में AI कौशल उन्नयन, 10 लाख लोग होंगे प्रशिक्षित
- महाकुम्भ-2025 की अभेद्य सुरक्षा में AI का व्यापक उपयोग
- इलेक्ट्रॉनिक मैन्यूफैक्चरिंग में 4 लाख+ रोजगार के अवसर

- जेवर में ₹3,700 करोड़ की सेमीकंडक्टर यूनिट को मंजूरी
- उत्तर प्रदेश सेमीकंडक्टर नीति 2024 लागू
- यूपी की GDP में IT सेक्टर का 3.2 प्रतिशत योगदान
- सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी निर्यात में तीव्र वृद्धि
- नोएडा, लखनऊ एवं कानपुर में टेक्नोलॉजी हब
- AI, क्लाउड कंप्यूटिंग एवं साइबर सिक्योरिटी का उन्नयन
- देश के 45% स्मार्टफोन एवं 55% मोबाइल पार्ट्स का निर्माण यूपी में

सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क

6 शहरों में स्थापित

3 शहरों में निर्माणाधीन

काम दमदार-डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश | UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

Published on10th & Posted on 15th, 17th & 19th of every month at RMS Lucknow. Total number of pages 52.
RNI No. UPHIN/1998/5628

मिशन रोज़गार

8.5 लाख+	3.75 लाख+	2 करोड़+
सरकारी नौकरी	संविदा पर नौकरी	निजी क्षेत्र/ एमएसएमई में रोजगार

उत्तर प्रदेश में
आरक्षी नागरिक पुलिस भर्ती में
महिला शक्ति

12,048 महिला अभ्यर्थियों का चयन

27,178	10,378	78	1,596
महिला पुलिसकर्मियों की नियुक्ति	महिला बीटों का आवंटन	महिला पुलिस परामर्श केन्द्र	महिला हेल्प डेस्क की स्थापना

- प्रत्येक जनपद में महिला थाने के अतिरिक्त एक अन्य थाने में महिला थानाध्यक्ष की तैनाती
- लखनऊ, गोरखपुर और बदायूं में महिला पीएसी बटालियन का गठन

काम दमदार डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP